Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

कर्मफल

मींगण्यां री अग्नि उकरालिमां, धप अधिकी आय।
ज्यूं कामभोग भोगव्यां थकां, तृष्णा अधिकी थाय।।

मींगणों की अग्नि जैसे-जैसे जलती है वैसे-वैसे ताप बढ़ता है। उसी प्रकार जैसे-जैसे कामभोग भोगे जाते हैं, वैसे-वैसे उनकी तृष्णा बढ़ती जाती है।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 42 • 21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 19-07-2025 • पेज 20 • ₹ 10 रुपये

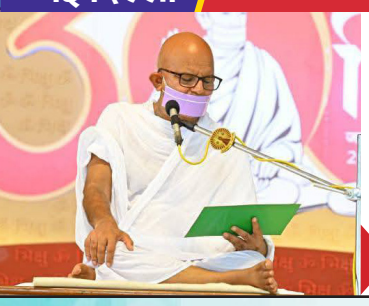

चातुर्मास में हो ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

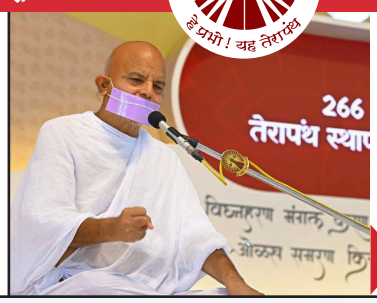

तेरापंथ को समझने के लिए आवश्यक है दर्शन, इतिहास और मर्यादा व्यवस्था का गहन अध्ययन : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 20

Address Here

एकादशम भिक्षु के सान्निध्य में हुआ "आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी" वर्ष का शुभारंभ

धर्मसंघ को आचार्यश्री का नूतन उद्घोष : दृढ़ निष्ठा से करें प्रयास, हो सद्ज्ञान चरित्र विकास

कोबा, गांधीनगर।
8 जुलाई, 2025

विक्रम संवत 2082, आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी का पावन प्रभात, प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा का रमणीय प्रांगण और युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि - आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी समारोह का शुभारंभ। इस ऐतिहासिक अवसर पर तेरापंथ धर्म संघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पट्ट से नीचे खड़े होकर अपनी मंगल वाणी से समारोह का आगाज किया।

आचार्यप्रवर ने कहा— आज परम पूजनीय, परम स्तवनीय, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य आचार्य भिक्षु स्वामी का 300वां जन्मदिवस है, जिसमें हम बोधि दिवस भी कहते हैं। यह जन्म त्रिशताब्दी वर्ष प्रारम्भ हो रहा है तो हमारा एक वर्ष का उपक्रम बना हुआ है तो मैं महाना आचार्यश्री भिक्षु का स्मरण कर 'आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष' के शुभारम्भ की घोषणा करता हूं। इस अवसर पर आचार्यश्री ने एक नया उद्घोष दिया- 'दृढ़ निष्ठा से करें प्रयास, हो सद्ज्ञान-चरित्र विकास।'

पूज्यवर ने आचार्य भिक्षु का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि उनका जन्म विक्रम संवत 1783 की आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को राजस्थान के कंटालिया गांव में हुआ था। जन्म से पूर्व उनकी माता ने सिंह का स्वप्न देखा था, जो एक शुभ संकेत था। बाल्यकाल से ही उनमें सत्य के प्रति निष्ठा, तीव्र बुद्धि और अंधविश्वासों के प्रति विद्रोह की भावना थी। उनका विवाह हुआ, वे एक पुत्री के पिता भी बने, किंतु उन्होंने यौवनावस्था में ही पत्नी सहित ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया और एकांतर तप की साधना प्रारंभ की।

> आचार्य भिक्षु का नेतृत्व और प्रबंधन कौशल विलक्षण था। उन्होंने जो मर्यादा व्यवस्था दी, वह आज भी प्रासंगिक है और इतने वर्षों बाद भी बिना किसी परिवर्तन के अक्षुण्ण बनी हुई है। एक आचार्य के नेतृत्व में समस्त साधु-साध्वियों का रहना, उनकी स्वैच्छिक सहमति से नियम पालन, यह तेरापंथ की विशिष्टता है।

सुगणीबाई के असामयिक निधन के बाद भी उनका वैराग्य डिगा नहीं। विक्रम संवत 1808 की मार्गशीर्ष कृष्ण द्वादशी को उन्होंने बगड़ी में मुनि दीक्षा ली। दीक्षा के पश्चात उन्होंने आगम, दर्शन, और आचार परंपरा का गहन अध्ययन किया। जब उन्हें संघ में शुद्धाचार की कमी दिखाई दी और प्रयासों के बावजूद उसमें सुधार की कोई संभावना नहीं दिखी, तो विक्रम संवत 1817 की चैत्र शुक्ला नवमी को उन्होंने धर्म की रक्षा हेतु अभिनिष्क्रमण किया। इस क्रांति के पश्चात उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, किंतु उन्होंने सत्य और आत्माराधना का पथ नहीं छोड़ा।

गुरुदेव ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने पृथक पंथ की स्थापना का संकल्प नहीं लिया था, लेकिन सत्य और साधना की प्रेरणा से लोग स्वयं जुड़ते गए और तेरापंथ की परंपरा का उद्भव हुआ। 'हे प्रभो! यह तेरापंथ' — यह उद्घोष उन्होंने भक्ति और समर्पण से किया, जिससे अहंकार और ममकार दूर रहा।

आचार्य प्रवर ने कहा कि आचार्य भिक्षु का नेतृत्व और प्रबंधन कौशल विलक्षण था। उन्होंने जो मर्यादा व्यवस्था दी, वह आज भी प्रासंगिक है और इतने वर्षों बाद भी बिना किसी परिवर्तन के अक्षुण्ण बनी हुई है। एक आचार्य के नेतृत्व में समस्त साधु-साध्वियों का रहना, उनकी स्वैच्छिक सहमति से नियम पालन, यह तेरापंथ की विशिष्टता है। वे श्रद्धा और तर्क के दुर्लभ समन्वय थे। उनकी तुलना काण्ट जैसे दार्शनिकों से की गई।

आचार्य भिक्षु ने शुद्ध साधन से शुद्ध साध्य की प्राप्ति का मार्ग बताया और आत्मौपम्य के सिद्धांत को जन-जन में स्थापित करने का प्रयास किया। उनका कहना था कि धर्म बल प्रयोग या प्रलोभन से नहीं, बल्कि हृदय परिवर्तन से आता है। लौकिक और लोकोत्तर दान-दया की स्पष्ट परिभाषा देते हुए वे उनके मिश्रण के विरोधी थे।

> यह वर्ष हम सभी के आध्यात्मिक विकास में सहायक बने। आचार्य भिक्षु की आचार निष्ठा और अनुशासन से प्रेरणा लेते रहें। उनकी बनाई गई मर्यादाएं और व्यवस्थाएं आज भी अखण्ड रूप में चल रही हैं। हम उन मर्यादाओं व व्यवस्थाओं के प्रति जागरूक रहें। यह वर्ष सभी के लिए कल्याणकारी रहे।

उन्होंने लोकभाषा में रचनाएं कीं — लगभग 38,000 पद्य उनकी साहित्यिक प्रतिभा के साक्ष्य हैं। विक्रम संवत 1860 की भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी को उन्होंने सिरियारी में समाधि ली।

गुरुदेव ने कहा कि भारत सरकार द्वारा आचार्य भिक्षु के सम्मान में डाक टिकट जारी किया गया, दिल्ली में अस्पताल का नामकरण हुआ, और कई मार्ग, द्वार, चौक उनके नाम पर रखे गए। आचार्य भिक्षु के द्वारा नियुक्त मुनि भारमलजी से जो उत्तराधिकार परंपरा चली, वह आज भी जनकल्याणकारी अवदानों के साथ गतिमान है।

(शेष पेज 17 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025

चातुर्मास में हो ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
9 जुलाई, 2025

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी - प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा के वीर भिक्षु समवसरण में महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा वर्षावास स्थापना अनुष्ठान का क्रम सम्पादित किया गया। मंगल देशना में आचार्यश्री ने फरमाया कि जीवन में दो मार्ग हैं — एक मोक्ष का मार्ग और दूसरा संसार का मार्ग। शास्त्रों में कहा गया है कि मोक्ष मार्ग चतुरंग है — जिसमें चार अवयव होते हैं: ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप। जब ये चारों मिलते हैं, तो वह मार्ग मोक्ष की ओर जाता है। मोह संसार का मार्ग है, और अमोह की साधना मोक्ष मार्ग बन जाती है।

आचार्यश्री ने बताया कि चातुर्मास का विशेष महत्व है। सामान्यतः चातुर्मास आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा या चतुर्दशी को प्रारंभ होता है। इस बार यह चतुर्दशी को प्रारंभ हुआ है। चातुर्मास के चार महीने — श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक — विशेष धार्मिक साधना, आराधना, उपासना और सेवा के लिए अनुकूल होते हैं। इस अवधि में साधु-साध्वियों का विहार स्थिर होता है, जिससे समाजजन को दर्शन, उपासना और गोचरी की सेवा का अवसर मिलता है।

चातुर्मास के दौरान धार्मिक प्रवास, त्याग, स्वाध्याय और आत्मानुशासन का वातावरण बनता है। जो व्यक्ति घर पर रहते हैं, उनके जीवन में सांसारिक प्राथमिकताएं रहती हैं, लेकिन जो इस अवधि में साधु-साध्वियों के सान्निध्य में रहते हैं, उनके जीवन में धर्म की प्रधानता हो सकती है। घर में स्वार्थ प्रधान होता है, यहां परमार्थ की भावना बलवती होती है।

चातुर्मास में विशेष रूप से ज्ञानाराधना का क्रम चले, यह अपेक्षित है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप मोक्ष के चार प्रमुख अंग हैं। अतः ज्ञानार्जन के लिए प्रयास करें। जैसे — पच्चीस बोल कंठस्थ करना, जीव-अजीव विषयक ग्रंथों का अध्ययन करना, तत्व ज्ञान की कक्षाएं चलाना आदि। इस वर्ष आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष होने के कारण स्वामीजी के साहित्य का स्वाध्याय, पाठ, जप आदि विशेष रूप से किए जा सकते हैं। देशभर में ज्ञानशालाएं सक्रिय हैं, उनके माध्यम से संस्कारों का सृजन किया जा सकता है।

पासक-उपासिकाओं की संख्या एवं गुणवत्ता बढ़े, इसके लिए प्रशिक्षण और तत्वज्ञान के कार्यक्रम निरंतर चलते रहें। भगवान महावीर कालीन श्रावक मद्दुक जैसे तत्वदर्शी व्यक्तित्व समाज में विकसित हों। तत्वज्ञान के कोर्स, महाप्रज्ञ श्रुताराधना, जैन विद्या परीक्षा, कार्यशालाएं, आगम मंथन प्रतियोगिताएं — ये सभी प्रयास ज्ञान संवर्धन के उत्कृष्ट साधन हैं।

दर्शनाराधना के अंतर्गत सम्यक्त्व की पुष्टि पर बल देते हुए आचार्यश्री ने कहा कि सच्चाई का समर्थन करें, चाहे वह दिख रही हो या न दिख रही हो। सम्यग्दर्शन की भावना कषाय मंदता से आती है — क्रोध, अहंकार, लोभ, माया जैसे दोषों से दूर रहकर। समीक्षक बुद्धि और तार्किक दृष्टिकोण से ज्ञान निर्मल हो सकता है।

चारित्र आराधना के लिए श्रावकों को प्रतिदिन सीमाकरण, प्रत्याख्यान, सामायिक, व्रत पालन, त्याग की भावना को आत्मसात करना चाहिए। साधुओं के लिए दीक्षा स्वयं चारित्र साधना का बड़ा रूप है। तप आराधना में बेला, तेला, अढ़ाई, पखवाड़ा, मासखमण आदि तपस्याओं को अपनाने की प्रेरणा दी गई।

गुरुदेव ने चातुर्मास की समाप्ति के पश्चात आगामी विहार यात्रा की संभावित घोषणा करते हुए बताया कि 6 नवम्बर 2025 को प्रेक्षा विश्व भारती से विहार और 6 फरवरी 2026 को जैन विश्व भारती, लाडनूं में प्रवेश हो सकेगा।

मुनि अक्षयप्रकाशजी ने गुरुदेव के स्वागत में अपनी श्रद्धापूर्ण अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। तेरापंथ युवक परिषद्, अहमदाबाद द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी द्वारा किया गया।

सहनशील व्यक्ति कर सकता है श्रेय की प्राप्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
13 जुलाई, 2025

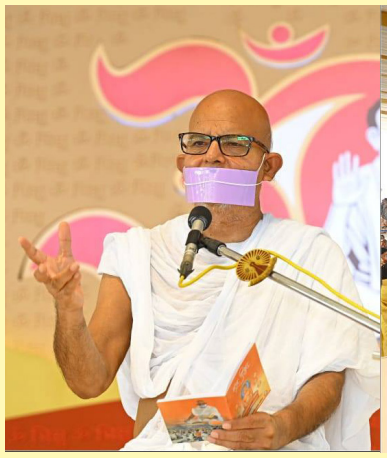

प्रेक्षा विश्व भारती कोबा में अमृत पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा – 'धर्म एक ऐसा तत्व है जो चित्त को समाधि देने वाला भी है और आत्मा की शुद्धि देने वाला भी। धर्म वह पाथेय है जो आगे भी अपना प्रभाव रख सकता है।'

आचार्य प्रवर ने एक दृष्टांत के माध्यम से समझाया कि यदि किसी व्यक्ति को एक घना जंगल पार करके अपने गंतव्य की ओर जाना है, और उसने साथ में भोजन-पानी नहीं लिया है, तो भूख-प्यास के कारण उसे कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है। वहीं यदि दूसरा व्यक्ति पूरी तैयारी के साथ निकला है, तो वह आराम से मंज़िल तक पहुंच सकता है। उसी प्रकार, जो व्यक्ति जीवन में धर्म, संयम, तप और अहिंसा की आराधना करता है, वह अपने लिए पाथेय तैयार करता है, जिससे उसे मृत्यु के पश्चात भी सुख मिल सकता है।

जो व्यक्ति धर्म का पाथेय नहीं लेता, अधिक पाप करता है, सम्यक् दर्शन और सदाचार से वंचित है, वह जीवन में कठिनाइयों का सामना करता है। धर्म का स्वरूप अहिंसा, संयम और तप है। शास्त्र में कहा गया है – जो व्यक्ति सहनशील होता है, वह धर्म को स्वीकार कर श्रेय की प्राप्ति कर सकता है।

धर्म के प्रति निष्ठा आवश्यक है। एक उदाहरण देते हुए आचार्यश्री ने कहा कि राजा प्रदेशी, जो नास्तिक था, ने जब कुमार श्रमण केशी से संवाद किया, तो उसकी विचारधारा में परिवर्तन आया। इसलिए संवाद से दृष्टिकोण में परिवर्तन संभव है। उन्होंने कहा कि 'जैसी करणी, वैसी भरणी' – अर्थात हमें पुण्य-पाप, पुनर्जन्म जैसे सिद्धांतों को मानकर चलना चाहिए।

आचारांग सूत्र में बताया गया है कि जो व्यक्ति सत्य, सम्यक् दृष्टि और सम्यक् दर्शन से युक्त होता है, वह धर्म को अपनाकर श्रेय और अंततः मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। आदमी को धर्म के प्रति निष्ठा रखने का प्रयास करना चाहिए। सहिष्णु व्यक्ति कठिनाइयों में भी धर्म को नहीं छोड़ता। यदि दृष्टिकोण सम्यक् हो और सत्य का आधार हो, तो वह व्यक्ति चारित्र की आराधना द्वारा श्रेय की उपलब्धि कर सकता है। सहिष्णुता पारिवारिक जीवन के लिए भी अच्छी होती है। पारिवारिक जीवन में रहने के लिए सहना भी चाहिए तो कभी मौके पर कहना भी चाहिए। आचार्य प्रवर ने सहिष्णुता के महत्व को रेखांकित करते हुए पिता-पुत्र एवं आचार्य भारमलजी के प्रसंग का वर्णन किया।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि बच्चों को अच्छे संस्कार देने का प्रयास होना चाहिए। जो बच्चे ज्ञानशाला से जुड़ जाते हैं, उन्हें धार्मिक ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार मिल सकते हैं। ज्ञानशाला में प्रशिक्षण देने वाले एक प्रकार की सेवा करते हैं। ज्ञानशाला के प्रशिक्षण देने वालों को तैयार करना भी एक सेवा का अच्छा कार्य है। छोटे बच्चों को अच्छे संस्कार दिए जाते हैं तो उनका भविष्य अच्छा हो सकता है। आदमी के व्यवहार व कर्म में भी धर्म रहे, यह काम्य है। आचार्यश्री ने इस चतुर्मास का अच्छा धार्मिक-आध्यात्मिक लाभ उठाने की भी प्रेरणा दी।

आचार्यप्रवर के मंगल पाथेय के उपरान्त साध्वीप्रमुखाजी ने उपस्थित जनता को उद्बोधित किया। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा 'मंत्र दीक्षा' का उपक्रम भी समायोजित किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी आचार्यश्री के सम्मुख उपस्थित थे। आचार्यश्री ने उपस्थित तेरापंथ की नवीन पौध को नवकार मंत्र का जप कराते हुए संकल्प स्वीकार कराए। मंत्र दीक्षा के राष्ट्रीय प्रभारी अजीत छाजेड़ ने जानकारी प्रस्तुत की।

आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के संदर्भ में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा युवादृष्टि का विशेषांक 'आदिपुरुष' आचार्यश्री के सम्मुख लोकार्पित किया गया। युवादृष्टि के कार्यकारी संपादक विपीन पितलिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। इस दौरान अहमदाबाद ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी। अशोक पगारिया व प्रदीप बागरेचा ने अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अहमदाबाद ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025

भारत की सर्व प्रथम आचार्य तुलसी डे केयर हॉस्पिटल का उद्घाटन

राजाजीनगर।

तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, श्रीरामपुरम के द्वितीय तल पर भारत का सर्वप्रथम 'आचार्य तुलसी डे केयर हॉस्पिटल' का उद्घाटन युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में एवं अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा की अध्यक्षता में हुआ।

संस्कारक राकेश दूधेडिया एवं सतीश पोरवाड़ ने जैन संस्कार विधि द्वारा मुख्य प्रायोजक बद्रीलाल, सुखलाल, उत्तमचंद पितलिया परिवार द्वारा उद्घाटन विधि संपादित करवाई। तत्पश्चात स्कैनिंग मशीन का उद्घाटन शांतिलाल, लादूलाल, विशाल, विजय, वैभव पितलिया परिवार द्वारा किया गया। टीएमटी मशीन का उद्घाटन हंसराज, अशोककुमार, रवि कुमार, अजिंक्य, अनिमेष चौधरी परिवार द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र का शुभारंभ डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। मुनि पुलकित कुमारजी ने डे केयर हॉस्पिटल के लिए परिषद को मंगलकामनाएं संप्रेषित करते हुए कहा राजाजीनगर एक सक्रिय परिषद है।

मुनि आदित्य कुमारजी ने गीतिका का संगान किया। अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने सभी का स्वागत करते हुए प्रायोजक परिवार का धन्यवाद व्यक्त किया एवं अभातेयुप द्वारा निर्देशित आयामों की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी ने शुभकामना संप्रेषित की। जैनम लक्ष्मीनारायणपुरम ट्रस्ट के अध्यक्ष रमेश सियाल, मल्लेश्वरम विधायक डॉ अश्वथ नारायण ने इस डे केयर की सराहना की।

राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रथम पवन मांडोत, राष्ट्रीय महामंत्री अमित नाहटा, अभातेयुप परामर्शक एवं युवा गौरव विमल कटारिया, एटीडीसी राष्ट्रीय सहप्रभारी ललित मेहर, शाखा प्रभारी दिनेश मरोठी, सभा के पूर्व अध्यक्ष सुखलाल पितलिया ने शुभकामनाएं व्यक्त की। परिषद् द्वारा प्रायोजक परिवारों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर अभातेयुप परिवार, एटीडीसी सहप्रभारी आलोक छाजेड़, टीटीएफ अध्यक्ष ललित बैंगानी, तेयुप परामर्शक, पूर्व अध्यक्ष, सभा परिवार, महिला मण्डल अध्यक्षा ऊषा चौधरी, महिला मण्डल परिवार, जैनम लक्ष्मीनारायण ट्रस्ट परिवार एवं बैंगलोर की अन्य शाखा परिषदों के अध्यक्ष एवं पदाधिकारी एवं अतिथि विशेष संजीव गन्ना, किरण कोठारी, रनित कोठारी, श्रवन पीपाड़ा, तेयुप सदस्य एवं श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

मंच संचालन जयंतीलाल गांधी व आभार रवि चौधरी ने किया।

चातुर्मास मंगल प्रवेश एवं दीक्षार्थी अभिनंदन समारोह

विजयनगर, बैंगलोर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संयमलता जी आदि ठाणा-4 ने प्रेमबाई महावीर गौतम टेबा के निवास से विहार कर भिक्षु चेतना रैली के माध्यम से विजयनगर स्थित तेरापंथ सभा भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश किया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र और मंगलाचरण से हुई। साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह स्वागत समारोह त्याग और तपस्या का है, आचार्यश्री की कृपा का है, जिन्होंने विजयनगर को चातुर्मास प्रदान किया। उन्होंने त्याग के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि भारत की असली शक्ति संतों में है और चातुर्मास आत्मिक जागरण का श्रेष्ठ अवसर है। साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि जीवन की तमाम तलाशें तभी पूर्ण होती हैं जब आत्म-चिंतन जुड़ जाए। उन्होंने तकनीक के उपयोग में सजग रहने की प्रेरणा भी दी। साध्वी वृंद ने भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत की, वहीं साध्वी मनीषाप्रभाजी और साध्वी रौनकप्रभाजी ने चातुर्मासिक कार्यक्रमों का परिचय शब्दचित्र के माध्यम से दिया। सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने सभी का स्वागत करते हुए आगामी आयोजनों की जानकारी दी और सहयोगी परिवारों का आभार प्रकट किया। दीक्षार्थी बहन भावना बाफणा ने अपने अनुभव साझा किए और सभा द्वारा उनका अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर विधायक एम. कृष्णप्पा, महासभा के पूर्व अध्यक्ष हीरालाल मालू, महासभा, अभातेयुप, अभातेममं, टीपीएफ, अणुव्रत समिति से जुड़े राष्ट्रीय पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ता, अर्हम मित्र मंडल अध्यक्ष बहादुर सेठिया, ट्रस्ट अध्यक्ष पुखराज मालू सहित कई गणमान्यजन उपस्थित रहे। सभा द्वारा आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में मार्ग का नाम आचार्य भिक्षु के नाम पर रखने हेतु विधायक को आवेदन पत्र सौंपा गया। इसी क्रम में काव्यधारा कार्यक्रम और तेयुप द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के बैनर का अनावरण तथा पुस्तक 'पथ चुने कौन सा' का विमोचन भी हुआ। कार्यक्रम का संचालन मंत्री दिनेश हिंगड़ ने किया।

धर्म आराधना का महत्वपूर्ण समय है चातुर्मास

गंगाशहर।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती उग्र विहारी, तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी व मुनि श्रेयांस कुमार जी ठाणा-6 ने बोथरा भवन, गंगाशहर से विहार करके तेरापंथ भवन, गंगाशहर में चातुर्मासिक प्रवेश किया।

इस अवसर पर अपना उद्बोधन प्रदान करते हुए उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि चातुर्मास काल धर्म आराधना का महत्वपूर्ण समय होता है। वर्षावास काल में जीवों की अति उत्पत्ति होती है। पाप कार्यों से बचने के लिए और जीवों की हिंसा न हो, इस दृष्टि से चार माह एक ही स्थान पर रहकर साधना की जाती है। मुनिश्री ने कहा कि तेरापंथ के आचार्यश्री महाश्रमण जी युगीन समस्याओं को मिटाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। विवाह के कार्यक्रमों में अनेक नई बुराइयाँ जुड़ गई हैं। मुनिश्री ने कहा कि फूलों की होली बंद करनी चाहिए, क्योंकि इससे असंख्य जीवों की हिंसा होती है और निकाचित कर्मों का बंधन होता है, जिससे सम्यक्त्व बिगड़ता है। उन्होंने कहा, 'हिंसा की होली बंद करो, अहिंसा की साधना बढ़ाओ।'

मुनिश्री ने आगे कहा, 'प्री-वेडिंग एक बहुत बड़ी बीमारी है, जो समाज का विनाश कर सकती है। बच्चों को इतनी खुली छूट मत दो, जिससे समाज का वातावरण खराब और दूषित हो। युवाओं को भोगी और विलासी नहीं, बल्कि आदर्श युवक बनाओ।'

मुनिश्री ने चातुर्मास काल में सामायिक, जप, तप, स्वाध्याय और ध्यान में अपना ज्यादा से ज्यादा समय लगाने की प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने कहा कि घर-घर में अर्हत् वंदना हो तथा जप और उपवास का क्रम नियमित रूप से चालू रहना चाहिए।

इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमार जी ने एक गीतिका के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। मुनिश्री के चातुर्मास प्रवेश एवं प्रवास के लिए स्वागत और मंगलकामनाओं के क्रम में जैन लूणकरण छाजेड़, अमरचंद सोनी, जतन लाल संचेती, गणेशमल बोथरा, आसकरण पारख, धर्मेंद्र डाकलिया, जतन लाल दूगड़, निर्मल बैद, ललित राखेचा, मनोहर लाल दूगड़, करणीदान रांका, राजेंद्र बोथरा, प्रेम बोथरा, किरण देवी छाजेड़, गरिमा भंसाली आदि वक्ताओं ने अपनी भावनाएँ प्रस्तुत कीं।

महिला मंडल व ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं ने गीतिका के माध्यम से स्वागत एवं शुभकामनाएँ व्यक्त कीं।

चातुर्मासिक प्रवेश पर भावभीना स्वागत

पीलीबंगा। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनोद कुमार जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश जैन भवन, पीलीबंगा में उल्लासपूर्ण वातावरण में हुआ।

इस अवसर पर तेरापंथ समाज द्वारा स्वागत एवं अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए तेरापंथी सभा पीलीबंगा के अध्यक्ष मालचंद पुगलिया ने मुनिश्री के आगमन को समाज के लिए एक आध्यात्मिक अवसर बताया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सुलोचना देवी बांठिया ने भावभीना स्वागत किया और महिला मंडल की ओर से भक्तिमय गीतिका प्रस्तुत की गई।

तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री प्रीति डाकलिया, युवक परिषद की ओर से सतीश पुगलिया, साथ ही पुष्पा नाहटा एवं ओम प्रकाश पुगलिया ने भी अपने भावों के माध्यम से मुनिश्री का अभिनंदन किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। कार्यक्रम का सफल संचालन सुशीला नाहटा ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025

अध्यात्म जागरण हेतु होंगे चातुर्मास में विशेष प्रयास

सिटीलाइट, सूरत।

तेरापंथ भवन में आयोजित स्वागत एवं अभिनंदन समारोह में प्रो. साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने विशाल धर्म परिषद् को संबोधित करते हुए कहा, 'गुरु के आदेश की सम्मूर्ति से शिष्य आनंद और प्रसन्नता की अनुभूति करता है। आज का दिन मेरे लिए प्रसन्नता की सौगात लेकर आया है। मर्यादा तेरापंथ संघ की आन, बान और शान है। जो मर्यादा की डोर में बंधा रहता है, वह विकास के क्षितिज का उद्घाटन कर लेता है। आज का हमारा प्रवेश गुरु-दृष्टि की आराधना का प्रवेश है। यह भी एक शुभ संयोग और गुरुकृपा ही है कि जहाँ-जहाँ गुरुदेव के चातुर्मास हुए, वहाँ-वहाँ हमें भी चातुर्मास करने का सौभाग्य मिला। गुरु की शक्ति और गुरु का आशीर्वाद ही सफलता का राज और विकास का आधार है।'

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने आगे कहा, 'हमें धर्मसंघ के लिए निरंतर बढ़ना है। भक्ति से परिपूर्ण श्रावक-समाज की सेवा से हम गौरव की अनुभूति करते हैं। हमें विश्वास है कि इस चातुर्मास में हम सभी अध्यात्म जागरण के लिए विशेष प्रयास करेंगे तथा ज्ञान, दर्शन, तप, जप आदि की विशेष आराधना से इस पावस को सफल बनाएँगे।'

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, सूरत ने समवेत स्वर में मंगलाचरण प्रस्तुत करके किया। केंद्रीय एवं स्थानीय सभाओं तथा संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं सदस्यों ने सामूहिक स्वागत गान किया।

इस अवसर पर केंद्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधि के रूप में महासभा की ओर से उपाध्यक्ष फूलचंद चत्रावत, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के संगठन मंत्री अमित सेठिया, अखिल भारतीय महिला मंडल की सहमंत्री निधि सेखानी, सूरत सभा के सह-मैनेजिंग ट्रस्टी अनिल बोथरा, सूरत सभा के अध्यक्ष हजारीमल भोगर, महिला मंडल की अध्यक्षा प्रतीक्षा बोथरा, तेयुप अध्यक्ष नमन मेड़तवाल, अणुव्रत समिति ग्रेटर के अध्यक्ष रतनलाल भलावत, उपासक सुरेश बाफना, नानालाल राठौड़, ज्ञानशाला से मनीषा सेठिया, कन्या मंडल से प्रियांशी सेखानी, किशोर मंडल से यश सेखानी, टी.पी.एफ. से अखिल मारु, अणुव्रत विश्व भारती से विमल लोढ़ा तथा उधना सभा के अध्यक्ष निर्मल चपलोत ने साध्वीश्री का हार्दिक स्वागत करते हुए सफल चातुर्मास की मंगलकामना की।

साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी अतुलयशाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी एवं साध्वी शौर्यप्रभाजी ने 'मंगल मैजिक शो' कार्यक्रम की मोहक प्रस्तुति दी। 'शासनश्री' साध्वी मधुबाला जी की सहवर्तिनी साध्वी मंजुलयशा जी ने हार्दिक मंगलकामनाएँ व्यक्त कीं।

कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन तेरापंथ सभा के मंत्री महेंद्र गांधी मेहता ने किया।

संक्षिप्त खबर

टीम बॉन्डिंग कार्यशाला का आयोजन

विजयनगर। तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा विरडेंसी रिसॉर्ट में टीम बोर्डिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत परिषद सदस्यों ने अनेक टास्क हेतु टीम बनाकर मिलजुलकर कार्य करना और आपस में समन्वय स्थापित करने के गुर सीखे। परिषद् कार्यकारी अध्यक्ष कमलेश चोपडा एवं नवनियुक्त अध्यक्ष विकास बाँठिया ने सभी का स्वागत किया, परिषद् साथी ऋषभ बरड़िया ने विभिन्न टीम बॉन्डिंग गेम्स खिलाये। सबका आपसी परिचय हुआ और व्यक्तिगत प्रस्तुतियों से आत्मविश्वास को बढ़ावा मिला। इस अवसर पर परिषद् पूर्व अध्यक्ष अशोक कोठारी, महावीर टेबा, श्रेयांस गोलछा, राकेश पोखरणा सहित लगभग 65 परिषद् एवं किशोर मंडल सदस्य उपस्थित थे। इस कार्यशाला को सम्पादित करवाने तथा व्यवस्था सम्बंधित कार्यों मे संयोजक अशोक मारु के साथ आलोक गंग एवं अमित नाहटा का सराहनीय श्रम रहा। अंत में आभार कमलेश दक ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

कटक। तेरापंथ युवक परिषद कटक के सत्र 2025-26 के अध्यक्ष एवं उनकी कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से समणी निर्देशिका डॉ. निर्वाण प्रज्ञा जी के सान्निध्य में तथा समाज बंधुओं की उपस्थिति में स्थानीय लक्ष्मी विला, तिनकोनिया बगीचा में आयोजित हुआ। जैन संस्कारक राजेंद्र लूनिया एवं मनीष सेठिया ने निर्दिष्ट विधि-विधान एवं मंत्रोच्चार के साथ शपथ ग्रहण सानंद संपन्न करवाया। शपथ ग्रहण समारोह की विधिवत शुरुआत समणी निर्देशिका डॉ. निर्वाण प्रज्ञा जी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। परिषद के सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन परिषद के पूर्व अध्यक्ष दिलीप बिनायकीया द्वारा किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष विकास नौलखा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष शशि चोरड़िया को शपथ दिलाई तथा परिषद को सभी कार्यों में सहयोग देने का आग्रह करते हुए गत वर्षभर परिषद को समाज बंधुओं से प्राप्त सहयोग हेतु आभार व्यक्त किया। तत्पश्चात नवनिर्वाचित अध्यक्ष शशि चोरड़िया ने कार्यकारिणी सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष शशि चोरड़िया ने अपने वक्तव्य में गुरु इंगित एवं संविधान के अनुरूप तथा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशानुसार सभी कार्य संपादित करने की बात कही। समणी निर्देशिका डॉ. निर्वाण प्रज्ञा जी ने अपने उद्बोधन में परिषद के सभी सदस्यों को नशामुक्त रहकर संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी। बहन भावना जैन ने 'संघ का काम हो, संघ का नाम हो' गीत का संगान किया। संस्कारक राजेंद्र लूनिया, सभा अध्यक्ष मुकेश सेठिया, महिला मंडल मंत्री समता सेठिया, भवन समिति अध्यक्ष चैनरूप चोरड़िया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष मुकेश डूंगरवाल एवं परिषद के संस्थापक अध्यक्ष मोहनलाल सिंघी ने नई कार्यकारिणी को शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए सभी कार्यों में सहयोग देने का आश्वासन दिया। तेयुप मंत्री चिराग सिंघी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

अध्यात्म का प्राणवान समय होता है चातुर्मास

पल्लावरम, चेन्नई।

तमिलनाडु के पल्लावरम क्षेत्र स्थित तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि दीपकुमार जी ठाणा-2 का श्री दक्षिण पावापुरी, जैन तीर्थ से भव्य रैली के साथ प्रस्थान हुआ और पल्लावरम तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश संपन्न हुआ।

मुनिश्री ने अपने प्रवचन में कहा कि चातुर्मास अध्यात्म का प्राणवान समय होता है। जिस प्रकार आकाश में बादलों को देखकर लोगों के मन में प्रसन्नता जागृत होती है, उसी प्रकार संतों का चातुर्मासिक प्रवेश श्रावक समाज में नवीन ऊर्जा, उमंग और उल्लास भर देता है। जैसे वर्षा धरती को हरियाली प्रदान करती है, वैसे ही संतजन आगमवाणी की अमृतवर्षा कर आत्मा का पोषण करते हैं। यह समय प्रमाद को त्याग कर धर्म की हरी-भरी चूनरी ओढ़ने का होता है। मुनिश्री ने कहा कि गुरु हमारे प्राण और त्राण हैं, और उनकी आज्ञा से हम पल्लावरम में चातुर्मास हेतु आए हैं।

मुनिश्री काव्यकुमार जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं जो हमें जिनशासन और तेरापंथ धर्मसंघ प्राप्त हुआ। उन्होंने पल्लावरमवासियों को चातुर्मास में 'जीएसटी' अदा करने की प्रेरणा दी – जी से ज्ञान, एस से सामायिक और टी से तपस्या।

मुख्य अतिथि डॉ. विनोद विशेश्वर ने कहा कि मुनिश्री का चार माह का प्रवास हमारे क्षेत्र के लिए गौरव की बात है और मैं स्वयं समय-समय पर उनका मार्गदर्शन लेने का प्रयास करूंगा। विशिष्ट अतिथि जैन महासंघ अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा, अमृतवाणी अध्यक्ष ललित दुगड़, चेन्नई सभा अध्यक्ष अशोक खतंग, किलपॉक सभा उपाध्यक्ष धर्मीचंद छल्लाणी, तेयुप अध्यक्ष विशाल सुराणा, टीपीएफ अध्यक्षा बबिता चोपड़ा, अणुव्रत समिति अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत, महिला मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं एवं अन्य अनेक गणमान्यजनों ने गीत, कविता एवं भाषणों के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

स्वागत स्वर पल्लावरम सभा अध्यक्ष दिलीप भंसाली ने प्रस्तुत किया और कार्यक्रम का सफल संयोजन महिला मंडल मंत्री पंकज कोठारी ने किया।

भक्ति संध्या का हुआ सफल आयोजन

विशाखापट्टनम।

हुडा चिल्ड्रन थिएटर में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, विशाखापट्टनम के तत्वावधान में एक भक्ति संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें संघ गायक कमल सेठिया ने लोकप्रिय गीतों और भजनों की मधुर प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में समाज के लगभग 400 से अधिक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। लगभग 3 घंटे से भी अधिक समय तक श्रोतागण भजनों से भाव-विभोर होते रहे। इस आध्यात्मिक संध्या का मुख्य उद्देश्य जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा के लिए सहयोग प्रदान करना था। शिक्षा सहयोग अभियान के अंतर्गत अनेक महानुभावों ने अपनी उदारता का परिचय देते हुए शिक्षा सहयोग हेतु खुले दिल से समर्पित भाव से योगदान दिया।

इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में हिम्मत मांडोत (राष्ट्रीय अध्यक्ष), मोहित बैद (राष्ट्रीय सहमंत्री), विक्रम कोठारी (दक्षिण क्षेत्र अध्यक्ष), प्रवीण सिरोहिया (पूर्व-1 क्षेत्र अध्यक्ष) एवं टीपीएफ विशाखापट्टनम के अध्यक्ष, मंत्री, तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, महिला मंडल के अध्यक्ष, मंत्री और कार्यकारी सदस्यों की विशेष उपस्थिति रही।

राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने टीपीएफ के सभी आयामों की विस्तृत जानकारी समाज को दी। मोहित बैद एवं विक्रम कोठारी ने भी अपने विचार रखे और विशाखापट्टनम टीम को इस सुंदर आयोजन के लिए शुभकामनाएँ दीं।

कार्यक्रम का शुभारंभ टीपीएफ की महिला सदस्यों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात, अध्यक्षा प्राची सुराणा ने अतिथियों का स्वागत किया और कार्यक्रम के महत्व को रेखांकित किया।

कार्यक्रम का संचालन मुकेश नाहटा एवं वंदना बेगवानी ने बहुत ही सुंदर तरीके से किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में टीपीएफ मंत्री पंकज भूतोडिया एवं पूरी कार्यकारिणी का सहयोग रहा।

संक्षिप्त खबर

रक्तदान शिविर संपन्न

हैदराबाद। तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद ने ताज कृष्णा हैदराबाद के सहयोग से ताज कृष्णा परिसर में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत एक रक्दान शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस कार्यक्रम में रक्तदान जागरूकता अभियान के तहत होटल परिसर में रक्तदान की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी गई। इस अभियान में होटल कर्मचारियों, अधिकारियों और विविध विभागों के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तेरापंथ युवक परिषद, हैदराबाद के अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने सभी रक्तदाताओं को सर्टिफिकेट सुपुर्द कर सम्मानित किया। ताज कृष्णा हैदराबाद, स्वास्थ्य और कल्याण के प्रति अपनी निरंतर प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है, नियमित रूप से अपने कर्मचारियों के लिए ऐसे शिविरों की मेजबानी करता है और स्वास्थ्य और फिटनेस जागरूकता बढ़ाने में अत्यधिक सक्रिय है। यह रक्तदान अभियान होटल द्वारा की गई कई कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) पहल में से एक है। नेतृत्व और सेवा की भावना को उजागर करते हुए, ताज कृष्णा होटल प्रबंधन के कई वरिष्ठ सदस्यों ने भी रक्तदान किया। तेरापंथ युवक परिषद के सहमंत्री जिनेंद्र सेठिया ने ताज कृष्णा प्रबंधन को उनके सहयोग के लिए, समर्पित स्वयंसेवकों को, अमूल्य रक्तदाताओं को, और कुशल ब्लड बैंक टीम को शिविर की सफलता के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया। रक्तदान प्रभारी मनोज जैन ने शिविर के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

निःशुल्क मधुमेह एवं रक्तचाप परीक्षण शिविर

पूर्वांचल कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद् पूर्वांचल-कोलकाता ने सत्र 2025-26 के प्रथम सेवा कार्य के अंतर्गत आचार्य तुलसी डायग्नॉस्टिक सेंटर पूर्वांचल द्वारा तुलसी वाटिका, लेक टाउन में 16 लोगों का निःशुल्क मधुमेह परीक्षण एवं 50 लोगों का निःशुल्क रक्तचाप परीक्षण किया गया। कार्यक्रम में पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंघी, मंत्री पंकज डोसी, तेयुप पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव बोथरा, टीपीएफ के अध्यक्ष बिनोद दुगड़ व पूर्वांचल सभा, तेयुप, महिला मंडल एवं किशोर मंडल सदस्यों की अच्छी उपस्तिथि रही।

शपथ ग्रहण समारोह

चेन्नई। मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में भवंरलाल महेन्द्र मरलेचा के निवास स्थान पर तेरापंथ युवक परिषद् का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। शपथ ग्रहण कार्यक्रम की शुरुआत मुनि मोहजीत कुमार जी के मंगलाचरण से हुई। मुनि मोहजीत कुमार जी एवं मुनि दीप कुमार जी ने युवकों को प्रेरणा प्रदान करवाई। 'युवा गौरव' भरत मरलेचा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया, जिसे सभी ने दोहराया। निवर्तमान अध्यक्ष संदीप मुथा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष विशाल सुराणा को शपथ दिलाई। अध्यक्ष विशाल सुराणा ने नवीन बोहरा -उपाध्यक्ष 1, हरीश भंडारी- उपाध्यक्ष 2, मुकेश आच्छा- मंत्री, श्रीकांत चोरड़िया- सहमंत्री 1, तरुण बैद - सहमंत्री 2, दीपक श्रीश्रीमाल- संगठन मंत्री के रूप में एवं अपनी कार्यकारिणी टीम को शपथ दिलाई। इस दौरान अभातेयुप सदस्य विकास कोठारी, संतोष सेठिया, दिलीप गेलड़ा उपस्थित थे।

इस समारोह में तेरापंथ सभा चेन्नई के अध्यक्ष अशोक खतंग, श्री जैन तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड साहूकारपेट के प्रबंध न्यासी विमल चिप्पड़, तेरापंथ सभा किलपॉक के अध्यक्ष अशोक परमार, उत्तर चेन्नई सभा के अध्यक्ष इन्द्रचंद डूंगरवाल, माधावरम ट्रस्ट अध्यक्ष घीसुलाल बोहरा, तेरापंथ सभा पल्लावरम के अध्यक्ष दिलीप भंसाली, किल्पॉक महिला मंडल अध्यक्षा अनीता सुराणा, अणुव्रत समिति की अध्यक्षा सुभद्रा लूणावत, तेयुप चेन्नई के पूर्वाध्यक्ष एवं समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी भावनाएँ व्यक्त की एवं शुभ कार्यकाल की मंगलकामना दी।

कार्यक्रम का कुशल संचालन पूर्वाध्यक्ष एवम परामर्शक गजेंद्र बोहरा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मंत्री मुकेश आच्छा ने दिया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

गंगाशहर। बीकानेर निवासी नरेश कुमार - सरोज देवी लूणिया के सुपुत्र एवं पुत्रवधू राहुल - पूजा लूणिया की नवजात पुत्रीरत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जैन संस्कारक पवन छाजेड़, देवेन्द्र डागा, विपिन बोथरा और रोहित बैद ने विधि विधान पूर्वक नामकरण का कार्यक्रम संपन्न करवाया।

लोगस्स कल्प मंत्र आराधना अनुष्ठान का आयोजन

मल्लेश्वरम, बेंगलुरु।

डॉ. मुनि पुलकित कुमारजी के सान्निध्य में 'लोगस्स कल्प मंत्र आराधना अनुष्ठान' का आयोजन ललित मांडोत के निवास स्थान मल्लेश्वरम, बेंगलुरु में किया गया।

मुनिश्री ने इस अवसर पर कहा कि जैन शासन की अतुल्य निधि है लोगस्स पाठ, जिसमें 24 तीर्थंकरों की स्तुति की गई है। यह मंत्रगर्भित स्तुति है, जिसके माध्यम से अनेक जैनाचार्यों ने मनुष्य कृत, देवता कृत अथवा प्राकृतिक उपद्रवों को शांत किया है। जीवन की सिद्धि प्रदान करने वाला, चमत्कारों से परिपूर्ण यह लोगस्स पाठ जैन धर्म की एक अमूल्य धरोहर है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि लोगस्स का ध्यान व मंत्र रूप में प्रयोग भी होता है। यह साधना कर्म रूपी रज और मल को दूर कर दिव्यता की अनुभूति करवाती है। लोगस्स पाठ का महत्व उजागर करते हुए मुनिश्री ने कहा कि इससे आरोग्य, बोधि और उच्चकोटि की समाधि प्राप्त की जा सकती है। यह आध्यात्मिक उन्नयन की उत्तम उपासना विधि है।

अनुष्ठान का शुभारंभ नवकार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। मुनिश्री ने प्राचीन जैन शास्त्रों में वर्णित लोगस्स पाठ के मंत्रों का जाप करवाया। मुनि आदित्य कुमारजी ने विभिन्न हस्त मुद्राओं के साथ संकल्पपूर्वक चैतन्य केंद्रों पर जाप करवाया। अनुष्ठान के पश्चात तुलसी महाप्रज्ञ चेतना केंद्र के अध्यक्ष ललित मांडोत ने स्वयं के निवास स्थान पर अनुष्ठान आयोजित करवाने के लिए मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, तेरापंथ महिला मंडल गांधीनगर की नव मनोनीत अध्यक्ष लक्ष्मी बोहरा एवं रिजु डूंगरवाल ने भी अपने विचार व्यक्त किए।इस अवसर पर महासभा सदस्य प्रकाश लोढ़ा, गौतमचंद मुथा, बद्रीलाल पितलिया, लादूलाल बाबेल, बहादुर सेठिया सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

ज्ञानशाला के बीस वर्ष की सम्पूर्णता पर जागृति कार्यक्रम का हुआ आयोजन

चेन्नई।

तेरापंथ सभा के तत्वावधान में संचालित वेपेरी ज्ञानशाला की गौरवशाली यात्रा के दो दशकों की परिसंपन्नता के महत्वपूर्ण अवसर पर म्यूजिक अकैडमी सभागार में 'जागृति कार्यक्रम' का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम से पूर्व चेन्नई में विराजित मुनि मोहजीत कुमार जी ठाणा-3 एवं साध्वी उदितयशा जी ठाणा-4 के दर्शन एवं मंगल पाठ श्रवण का सौभाग्य मिला। कार्यक्रम के शुभारंभ में श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया एवं तुलसी अष्टकम का संगान ज्ञानार्थियों द्वारा मंगलाचरण स्वरूप प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा अध्यक्ष अशोक खतंग, उत्तर तमिलनाडु ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका अनीता चोपड़ा, सहसंयोजिका कविता रायसोनी, ज्ञानशाला प्रभारी राजेश सांड, परामर्शक कमलेश बाफना, एबीसी कॉलेज से बबीता चोपड़ा सहित अनेक गणमान्यजनों की गरिमामय उपस्थिति रही। सभी का स्वागत वेपेरी ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका मंजु मुथा द्वारा किया गया।

सभी अतिथियों ने अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए वेपेरी ज्ञानशाला के दो दशक पूर्ण होने की मंगलकामनाएं प्रेषित कीं। लगभग 40 ज्ञानार्थियों ने नवकार पोयम की सुंदर प्रस्तुति दी। प्रशिक्षिकाओं ने मधुर गीतिका का सामूहिक संगान किया। ज्ञानार्थियों द्वारा प्रस्तुत लघु नाटिका 'क्या फर्क पड़ता है' के माध्यम से शुद्ध शाकाहारी रेस्टोरेंट में भोजन करना, वनस्पतिकाय की हिंसा से बचना, मोबाइल का सीमित उपयोग करना एवं भोजन की बर्बादी से बचना जैसे सार्थक संदेशों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया।

'ज्ञानशाला भेजना क्यों जरूरी है' विषय पर वर्तमान ज्ञानार्थियों के अभिभावकों ने एक सुंदर नाटिका के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए। पूर्व ज्ञानार्थी जाह्नवी सांड एवं श्रद्धा तातेड़ ने अपनी भावनाएं साझा कीं। वेपेरी ज्ञानशाला की 20 वर्षों की यात्रा एवं 'अर्हम-अर्हम की वंदना' पर आधारित ज्ञानार्थियों व प्रशिक्षिकाओं की संयुक्त प्रस्तुति को बड़े पर्दे पर वीडियो के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

वर्ष 2023 एवं 2024 की SSB परीक्षा में वरीयता प्राप्त ज्ञानार्थियों को सम्मानित कर उत्साहित किया गया। सभी अतिथिगण, अभिभावकगण, पूर्व एवं वर्तमान ज्ञानार्थियों के प्रति आभार ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का संचालन वेपेरी ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा किया गया। कार्यक्रम में 35 पूर्व ज्ञानार्थी, 57 वर्तमान ज्ञानार्थी, 13 प्रशिक्षक एवं 120 अभिभावकगण की उत्साहजनक उपस्थिति रही। कार्यक्रम का समापन संघगान के साथ हुआ।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025

मातृत्व कार्यशाला का हुआ सुंदर आयोजन

चेम्बूर, मुंबई।

'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी के सान्निध्य में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल, चेंबूर द्वारा अध्यक्ष मनीषा कोठारी की अध्यक्षता में 'मातृत्व कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय था — 'मातृत्व है एक वरदान – रखना हर हाल में इसका ध्यान।' इस कार्यशाला का उद्देश्य था — गर्भावस्था के दौरान महिला के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक पक्ष को संतुलित करते हुए भावी संतान के संस्कारों की नींव मजबूत करना।

कार्यक्रम की शुरुआत 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई, और मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के मधुर स्वरों से वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया।

'शासनश्री' साध्वी मंजूरेखा जी ने मुख्य वक्तव्य में मातृत्व के सात प्रमुख बिंदुओं को सरल और भावपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया। विचार बिंदुओं में शामिल थे — मां की सोच, जीवन शैली और व्यवहार का गर्भस्थ शिशु पर प्रभाव; कोख को मंदिर समान मानना; धर्म, ध्यान और आस्था का महत्व; मातृत्व को एक साधना और संस्कार देने की प्रक्रिया मानना; Motherhood Journey – Emotional Wellness और Nutritional Harmony for Divine Child जैसे विषयों को सरल उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया गया।

कार्यशाला की विशेष प्रस्तुति रहा मूक नाटक, जिसमें मां की सोच, आहार और धर्म–ध्यान का प्रभाव चित्रात्मक ढंग से दर्शाया गया। गीत प्रस्तुति, प्रेरक वीडियो क्लिप और एक्टिविटी राउंड ने कार्यशाला को और भी जीवंत बना दिया। विशेष रूप से 'गर्भ से ही संस्कार' विषय पर आधारित रोल-प्ले और क्विज़ में बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यशाला का संचालन मंत्री बेला डांगी द्वारा अत्यंत कुशलता से किया गया और समापन में रेखा डागलिया ने सभी का आभार व्यक्त किया।

'मां की कोख' संस्कार कार्यशाला का आयोजन

हिसार।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार साध्वी राजकुमारी जी, 'शासनश्री' साध्वी यशोधरा जी, 'शासनश्री' साध्वी प्रशमरती जी तथा उपसेवा केंद्र व्यवस्थापिका डॉ. साध्वी शुभप्रभा जी के सान्निध्य में 'मां की कोख' संस्कार कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। महिला मंडल की बहनों ने गीतिका के माध्यम से मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत की मधुर प्रस्तुति दी। महिला मंडल की अध्यक्ष जयश्री जैन ने बहनों का स्वागत किया।

साध्वी अनन्यप्रभाजी ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि संसारपक्षी माता से मुझे संस्कार मिले और गुरुदेव ने मुझे दीक्षा की अनुमति देकर धर्मसंघ की सेवा के लिए दूसरा आध्यात्मिक जन्म दिया। मुख्य वक्ता डॉ. मीनाक्षी गोयल जी ने गर्भसंस्कार पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वस्थ शरीर और प्रसन्नचित्त अवस्था गर्भाशय में पल रहे शिशु को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है। उन्होंने मां के आहार, मानसिक और शारीरिक स्थिति, तथा स्वस्थ संतान के जन्म हेतु आवश्यक बातों पर सारगर्भित जानकारी दी। साध्वी सुश्रुतश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि यदि बच्चे को कोई उपहार नहीं दिया जाए तो वह थोड़ी देर रोकर चुप हो जाएगा, लेकिन यदि उसे संस्कार नहीं दिए जाएं तो वह जीवनभर रोता रहेगा। इसलिए मां को बच्चों के लालन-पालन में विशेष ध्यान रखते हुए उन्हें संस्कारों का उपहार देना चाहिए। डॉ. साध्वी शुभप्रभा जी ने बहनों को कहा कि वंदन है उन माताओं को, जिनकी कोख से आचार्य भिक्षु स्वामी और वर्तमान आचार्य महाश्रमण जैसे गुरु समाज को प्राप्त हुए, जिनकी अमृत वाणी से आज पूरा समाज लाभान्वित हो रहा है। संगीता जैन ने मंच का कुशल संचालन किया।

प्रभावित नहीं, प्रकाशित करने वाला हो चातुर्मास

संगरूर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी प्रांजलप्रभा जी ठाणा 4 ने भव्य जुलूस के साथ वर्ष 2025 के चातुर्मास हेतु संगरूर स्थित तेरापंथ भवन में मंगल प्रवेश किया। नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए साध्वीश्री तेरापंथ भवन में पधारीं, जहां मंगल मंत्रोच्चार का उच्चारण कर साध्वी श्री ने शुभ मुहूर्त में भवन में प्रवेश किया। भव्य जुलूस में तेरापंथी सभा, महिला मंडल, युवक परिषद आदि विभिन्न संस्थाओं के सदस्यों के साथ सभी कौम के व्यक्ति अभिनंदन के लिये उपस्थित थे। मंगल प्रवेश के पश्चात् आयोजित स्वागत कार्यक्रम नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से प्रारंभ हुआ। स्वागत कार्यक्रम में साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने उत्साहित श्रावक समाज को संबोधित करते हुए कहा कि महातपस्वी, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के निर्देशानुसार परमाराध्य, परम वंदनीय भगवान महावीर के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने के लिये संदेशवाहक के रूप में आज हम संगरूर पहुंचे हैं।

आज का यह स्वागत हमारा स्वागत नहीं है, यह स्वागत है महासूर्य आचार्य श्री महाश्रमण जी का, यह स्वागत है तप और त्याग का, यह स्वागत है संत की संतता का और यह स्वागत है जैन संस्कृति का।

साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में आगे कहा कि हम आज इस अवसर पर यह मंगलकामना करते हैं कि हमारा यह चातुर्मास दृष्टिकोण की चिकित्सा करने वाला हो, आध्यात्मिक वैभव बढ़ाने वाला हो, जनमानस को प्रभावित नहीं अपितु प्रकाशित करने वाला हो। साध्वी रुचिप्रभा जी, साध्वी गौतमप्रभा जी व साध्वी मध्यस्थप्रभा जी ने सामूहिक सुमधुर गीतिका से अपने भावों की प्रस्तुति दी। स्वागत-अभिनंदन के स्वर में स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरनाथ, सभा के संरक्षक विजय गुप्ता, युवक परिषद अध्यक्ष अमन गोयल, महिला मंडल अध्यक्षा मीना जिन्दल, पंजाब सभा के उपाध्यक्ष कमल नौलखा, डॉ आर. सी. जैन, एडवोकेट संजीव गोयल, प्रिया जैन, सीमा बजाज, भावना रामदास, रेणु जैन आदि ने संभाषण व गीत के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर सभा बरनाला के अध्यक्ष सुमित जैन, बरनाला से धर्मपाल जैन, सुनाम से रूपेश जैन, उपासिका सोना जैन आदि ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कीं। कुशल संचालन सभा मंत्री रमेश शर्मा ने किया। प्रवेश पर स्थानीय श्रावक समाज की सराहनीय उपस्थिति रही।

लक्ष्य का निर्धारण करना है अत्यंत आवश्यक

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद् हैदराबाद द्वारा 'Come, Connect and Correct' व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन बेगमपेट में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नखत परिवार द्वारा मंगलाचरण से हुआ। स्मृति नखत ने नखत परिवार की ओर से सभी उपस्थितजनों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद के अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने भी स्वागत वक्तव्य देते हुए साध्वीश्री द्वारा शहर विचरण के दौरान विविध कार्यक्रमों के अंतर्गत युवाओं और समाज के सभी वर्गों में जागृति के बारे में बताया।

साध्वी डॉ गवेषणाश्री जी ने अपने प्रवचन में कहा कि मनुष्य अपने भविष्य को वर्तमान से अधिक सुंदर बनाना चाहता है। इसके लिए लक्ष्य का निर्धारण करना अत्यंत आवश्यक है। जब तक लक्ष्य स्थिर नहीं होता, कोई आदर्श सामने नहीं होता, तब तक उस दिशा में गति संभव नहीं होती। उन्होंने भवन निर्माण का उदाहरण देते हुए कहा कि चातुर्मास का लाभ उठाने के लिए पहले 'ट्रिपल सी' (Triple C) को अपनाना होगा – 'कम' (Come) – 'कनेक्ट' (Connect) – 'करेक्ट' (Correct)। उन्होंने सभी से तेरापंथ भवन में अध्यात्म गंगा में स्नान करने के लिए आने की कोशिश करने, साधु-संतों से संपर्क जोड़ने और अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करने का आह्वान किया।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि आपके आने का लक्ष्य केवल प्रदर्शन, दिखावा, नेम और फेम न होकर कुछ प्राप्त करने का होना चाहिए। यथार्थ तक पहुंचने के लिए मानसिक चित्र बनाना और उस पर एकाग्र होना बहुत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि सिर्फ सोचने से कुछ नहीं होगा, कुछ पाना है तो आना होगा। इस अवसर पर साध्वी दक्षप्रभाजी ने एक सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का कुशल संयोजन साध्वी मेरुप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम में सिकंदराबाद सभा अध्यक्ष सुशील संचेती, सभा मंत्री हेमंत संचेती, सुरेश नखत, जेटीएन प्रतिनिधि मीनाक्षी सुराणा, ऋषभ दुगड़ सहित अनेक गणमान्य लोगों की गरिमामयी उपस्थिति रही। सहमंत्री जिनेंद्र सेठिया ने सभी का आभार ज्ञापन किया।

लोगस्स जप अनुष्ठान से बदले रसायन

केजीएफ।

साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में लोगस्स जप अनुष्ठान करवाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री ने गीत की प्रस्तुति द्वारा की। आपने कहा कि लोगस्स का एक और नाम है – उक्कितणं, जो सर्वोत्तम व उच्चतम पद पर विराजमान चौबीस तीर्थंकरों का संगान व कीर्तन है। तीर्थंकर रूप, बल, कुल, जाति, ऐश्वर्य आदि में सर्वश्रेष्ठ होते हैं तथा सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चारित्र में विशिष्ट होते हैं। तीर्थंकर की स्तुति करने से भाषा का लंगड़ापन दूर होता है, अर्हता बढ़ती है और सम्यक्त्व विशुद्ध हो जाता है। यदि कोई उपद्रव हो तो लोगस्स की स्तुति करने से वह उपद्रव शांत हो जाता है। इसका नित्य प्रतिदिन जाप व माला फेरने से अपने भीतर के रसायन बदल जाते हैं। साध्वी रम्यप्रभा जी ने तेरह चैतन्य केन्द्रों पर लोगस्स का जाप करवाया और शरीर के चारों ओर सुरक्षा कवच बनवाया। सभी श्रावक-श्राविकाएं इस मंत्र की उपयोगिता व लाभ को सुनकर आनंदित और भावविभोर हो गए। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष, वर्षावास स्थापना एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

छतरपुर, नई दिल्ली

आचार्य भिक्षु जन्म त्रि शताब्दी के अवसर पर केंद्र द्वारा निर्धारित त्रिदिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रम तेरापंथ सभा, दिल्ली के तत्वावधान में साध्वी कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य में हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ। समारोह के पावन अवसर पर लगभग 100 भाई-बहनों ने सवा लाख जाप करने का संकल्प लिया। सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने इस अवसर पर जीवनपर्यंत एक सीमा से अधिक वनस्पतियों के त्याग का व्रत लिया। चातुर्मासिक चतुर्दशी के दिन साध्वी कुन्दनरेखाजी द्वारा हाजरी का वाचन किया गया एवं चातुर्मास के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखा ने संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु एक क्रांतिकारी आध्यात्मिक महापुरुष थे। आज ही के दिन केलवा की अंधेरी ओरी में सायंकाल में उन्होंने भावदीक्षा स्वीकार की थी। तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना आचार्य भिक्षु का एक महान उपकार है। एक गुरु के निर्देशन में संचालित यह संघ मर्यादा और अनुशासन से युक्त है। इसका प्रत्येक सदस्य आत्मशोधन की दिशा में अग्रसर है और आध्यात्मिक ऊंचाइयों को स्पर्श कर रहा है। साध्वी श्री ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा वर्णित तेरापंथ संघ की कुंडली पर भी विस्तार से प्रकाश डाला।

साध्वी सौभाग्ययशाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु का जीवन-दर्शन संघ की कहानी से जुड़ा हुआ है। वह मानवता के ऐसे मसीहा थे, जो कभी घबराए नहीं, रुके नहीं और निरंतर गतिमान रहे। साध्वी कल्याणयशाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक अलौकिक पुरुष थे, जिन्होंने महावीर वाणी में सत्य का अनुसंधान किया और उसे जीवन में स्वीकारा, उसी का परिणाम है तेरापंथ।

महिला मंडल की बहनों ने भक्ति गीतों की सुमधुर प्रस्तुति दी। भाई विश्वास ने अपनी स्वरचित गीतिका से सभी को भावविभोर कर दिया। संदीप डूंगरवाल ने कहा कि भिक्षु की कहानी आज सबकी जुबानी बन गई है। न केवल तेरापंथ समाज, बल्कि अन्य कई श्रद्धालुजन भी उनके चरणों में नतमस्तक हैं। प्रदीप खटेड़ ने आचार्य भिक्षु के संस्मरणों के माध्यम से कुशलतापूर्वक कार्यक्रम का संचालन किया। धम्म जागरण का कार्यक्रम भी अत्यंत प्रभावशाली रहा।

नाथद्वारा

साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष तथा 266वें तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण और 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी भरत खेतर में' गीत तथा 'ॐ भिक्षु - जय भिक्षु' मंत्र के जाप के साथ हुई। महिला मंडल और युवती मंडल की बहनों द्वारा भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किए गए। साध्वीश्री ने अपने प्रवचन में कहा कि यह पावन दिवस आचार्य भिक्षु के 300वें जन्म दिवस और उनकी सत्य उपलब्धि से जुड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि आचार्य भिक्षु एक अलौकिक दिव्य पुरुष थे जिनकी वीतराग वाणी और निर्मल बुद्धि ने धर्म के लौकिक और लोकोत्तर स्वरूप को स्पष्ट किया। वे कहते थे कि शुद्ध साध्य के लिए शुद्ध साधन आवश्यक है, और धर्म त्याग में है, भोग में नहीं। आचार्य भिक्षु ने आगमों का गहन अध्ययन कर मिथ्यात्व की भ्रांति को सम्यक्त्व से दूर किया और धर्म क्रांति का सूत्रपात किया। साध्वी श्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ मात्र एक संगठन नहीं, बल्कि एक तेजस्वी, अनुशासित और प्राणवान संस्था है, जिसकी नींव गुरु पूर्णिमा जैसे शुभ मुहूर्त में रखी गई। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि आचार्य भिक्षु का जीवन चार विशेष मूल्यों पर आधारित था – जागरूकता, विश्वास, सही चयन और अनासक्ति। उन्होंने बताया कि आचार्य भिक्षु को भावी आचार्य बनने का प्रस्ताव भी मिला, पर वे साधना से विचलित नहीं हुए। उनकी चेतना पद, प्रतिष्ठा से परे थी। आज तेरापंथ धर्मसंघ की पहचान सात समंदर पार तक फैली है और इसकी मजबूती का आधार है – अनुशासन बल, मनोबल, अध्यात्म बल और सिद्धांत बल। इस अवसर पर साध्वी प्राज्ञप्रभा जी, साध्वी नमनप्रभा जी और साध्वी गीतार्थप्रभा जी ने भावपूर्ण गीत, कविता एवं संचालन द्वारा वातावरण को भक्ति से परिपूर्ण किया। 'भिक्षु चेतना वर्ष' में प्रति शुक्ला त्रयोदशी को 13 दस प्रत्याख्यान की लड़ी, लगभग 151 भाई बहनों द्वारा 8 जुलाई से 5 अक्टूबर तक प्रतिदिन 13 माला प्रति व्यक्ति सवा लाख का जप, 13 उपवास की बारियां, 'भिक्षु विचार दर्शन' प्रश्न मंच प्रतियोगिता सहित अनेक आध्यात्मिक उपक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री निशांत कोठारी, फतेहचंद बोहरा सहित कई गणमान्यजनों ने अपने विचार रखे। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा साध्वीश्री द्वारा रचित नाटक और चलचित्र की भावपूर्ण प्रस्तुति दी गई, जिसमें मुनि भीखण की दीक्षा, बोधि प्राप्ति और तेरापंथ की स्थापना का जीवंत चित्रण किया गया। समारोह में श्रावक-श्राविकाओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

केजीएफ

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में केजीएफ स्थित तेरापंथ सभा भवन में भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष, वर्षावास स्थापना दिवस एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के विभिन्न कार्यक्रम संयोजित किए गए। भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में 24 घंटे का ॐ भिक्षु जप अनुष्ठान आयोजित हुआ, जिसकी शुरुआत नमस्कार महामंत्र और ॐ भिक्षु - जय भिक्षु मंत्र जाप से हुई। महिला मंडल ने भिक्षु अष्टकम की प्रस्तुति दी और आचार्य भिक्षु के जीवन, उनके सिद्ध व्यक्तित्व और साधना की गाथा को भावपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया। साध्वी पावनप्रभाजी ने बताया कि आचार्य भिक्षु का जन्म आषाढ़ी तेरस को हुआ था, जो सर्वसिद्धा त्रयोदशी कहलाती है। उन्होंने बाल्यकाल से ही आत्मशुद्धि का मार्ग अपनाया और भव्य धर्म क्रांति की। साध्वी उन्नतयशा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि व्यक्ति जन्म से नहीं, पुरुषार्थ से महापुरुष बनता है। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं ने जोड़े सहित चौबीस घंटे के अखंड जप में भाग लेकर भिक्षु भावना को जीवंत किया और रात्रि में 'धम्म जागरण – एक शाम भिक्षु के नाम' कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसके पश्चात वर्षावास स्थापना दिवस के अनुष्ठान में मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। साध्वीश्री ने मंत्रों की शक्ति और उसके प्रभाव की चर्चा करते हुए सुंदर लय में जाप करवाया, जिससे आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार हुआ। तत्पश्चात अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार शपथ ग्रहण समारोह भी संपन्न हुआ, जिसमें नव मनोनीत अध्यक्ष सरिता बांठिया सहित अन्य पदाधिकारियों को शपथ दिलाई गई। साध्वीश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा कि जब हम मिलकर कार्य करते हैं तो सफलता सुनिश्चित होती है।

गुरु पूर्णिमा एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में साध्वी पावनप्रभा जी ने अपने प्रवचन में बताया कि आचार्य भिक्षु ने गुरु पूर्णिमा जैसे पूर्ण तिथि के दिन तेरापंथ की स्थापना कर इस दिवस को ऐतिहासिक बना दिया। उन्होंने बताया कि तेरापंथ धर्मसंघ मात्र संख्या नहीं, गुणवत्ता पर आधारित एक जीवंत संघ है, जिसकी परंपरा में ज्ञानी, ध्यानी, तपस्वी, सेवाभावी व्यक्तित्वों की गौरवशाली परंपरा रही है। साध्वी आत्मयशा जी ने गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि गुरु अंधकार में प्रकाश का स्रोत हैं और तेरापंथ को आचार्य भिक्षु जैसा योग प्राप्त हुआ। साध्वी रम्यप्रभा जी ने तेरापंथ की महिमा को कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया। तीनों कार्यक्रमों में श्रावक-श्राविकाओं की उल्लेखनीय उपस्थिति रही, जिन्होंने भक्ति, समर्पण और अनुशासन से वातावरण को भिक्षुमय बना दिया।

नोखा

तेरापंथ भवन में 'शासन गौरव' साध्वी राजीमतिजी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी का शुभारंभ 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी भरत खेतर में' गीतिका के संगान से हुआ। इसके बाद महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। केंद्र से निर्धारित क्रमानुसार 'ॐ भिक्षु' जप एवं ध्यान का प्रयोग सम्पन्न हुआ। साध्वी पुलकितयशा जी ने आचार्य श्री भिक्षु स्वामी के व्यक्तित्व पर अपने भाव व्यक्त किए। साथ ही उपासक अनुराग बैद और महिला मंडल मंत्री मोनिका बैद ने आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी अभ्यर्थना प्रकट की। शासनगौरव साध्वीश्री ने स्वामी जी के सिद्धांतों – त्याग धर्म, भोग अधर्म, व्रत धर्म, अव्रत अधर्म, और शुद्ध साध्य-साधन – के विषय में प्रकाश डालते हुए श्रावक समाज को इस वर्ष स्वामी जी से संबंधित साहित्य के अध्ययन तथा जप-तप की विशेष प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी प्रभातप्रभा जी ने किया।

जयपुर

भिक्षु साधना केंद्र, श्याम नगर में मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' के सान्निध्य में वर्षावास प्रारंभ एवं तेरापंथ धर्मसंघ का 266वां स्थापना दिवस संयोजित किया गया। वर्षावास स्थापना के शुभ अवसर पर मुनि तत्त्व रुचि जी ने मर्यादाओं का वाचन करते हुए मर्यादित आचरण की विशेष प्रेरणा दी। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु स्वामी द्वारा प्रतिपादित मर्यादाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि जो पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की अखंड पालना करता है, वही सच्चे अर्थों में साधु कहलाने योग्य है। मुनिश्री ने चातुर्मास के दौरान मोबाइल जैसे इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के अनावश्यक प्रयोग से बचने और आत्मशुद्धि के लिए तप, जप, ध्यान, मौन, स्वाध्याय जैसे क्रियाकलापों को नियमित रूप से अपनाने की प्रेरणा दी। कई श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास, बेला, तेला आदि व्रतों का संकल्प लिया। साथ ही चातुर्मास के दौरान रात्रि भोजन, जमीकंद, हरी सब्जियों और सचित्त वस्तुओं के त्याग का भी संकल्प लिया गया। तेरापंथ स्थापना दिवस कार्यक्रम में मुनि तत्त्वरुचि जी ने आचार्य श्री भिक्षु स्वामी की जीवन-दृष्टि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने धार्मिकों को नई और सही दृष्टि प्रदान की, जिसका मूल्यांकन आज पूरे समाज में हो रहा है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आध्यात्मिकता और सामाजिकता दोनों का महत्व है, लेकिन इनका अनुपयुक्त मिश्रण दोनों की गरिमा को कम कर देता है। मुनि संभव कुमार जी ने गीत के माध्यम से आचार्य श्री की महिमा का भावपूर्ण गुणगान किया। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल से सुशीला नखत, मास्टर रतनलाल जैन, संदीप भंडारी आदि ने अपने विचार वक्तव्यों और गीतों के माध्यम से व्यक्त किए। मर्यादा कुमार कोठारी द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025

आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष, वर्षावास स्थापना एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

मैसूर

साध्वी सिद्धप्रभाजी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार महामंत्र के साथ किया गया। साध्वीवृंद ने 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी भरत खेतर में' गीत का संगान किया। तत्पश्चात सभा व युवक परिषद द्वारा सामूहिक गीत का संगान किया गया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा भिक्षु स्वामी के जन्म पर सुंदर नाटिका प्रस्तुत की गई। पालघर से समागत मुमुक्षु भावना बाफना ने अपने भाव व्यक्त किए। मुमुक्षु का संक्षिप्त परिचय सभा मंत्री दिलीप पितलिया ने दिया। साध्वी सिद्धप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु बल के पूज्य थे। उनका श्रद्धाबल, संकल्पबल, तपोबल, वैराग्यबल, क्षमाबल, सिद्धांतबल, बुद्धिबल अद्वितीय था। जयपुर के अंकवेत्ता देवकीनन्दन बोहरा द्वारा वर्णित 10 शारीरिक शुभ लक्षणों का वर्णन करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि यह भविष्यवाणी है कि तेरापंथ की नींव को 2000 वर्ष तक कोई बाल बांका भी नहीं कर सकता। आचार्य भिक्षु का जीवन सबके लिए आदर्श था। हमें लक्ष्य बनाना है कि हम उनके सिद्धांतों को जीवन में उतारें और परीक्षा की स्थिति में तेरापंथी, भिक्षु भक्त होने का पक्का परिचय दें। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीक्षाप्रभा जी ने किया।

किलपॉक, चेन्नई

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, किलपॉक के तत्वावधान में तेरापंथ धर्मसंघ का 266वां स्थापना दिवस महाश्रमणम् हॉल में मुनि मोहजीत कुमारजी के सान्निध्य में विशाल उपस्थिति के बीच मनाया गया। मुनिश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने त्रिपदी क्रांति की, जिसमें आचार, विचार और अनुशासन के आधार पर इस धर्मसंघ की स्थापना की गई। उन्होंने कहा कि शुद्ध साधन से ही शुद्ध साध्य की प्राप्ति होती है। तेरापंथ धर्मसंघ समर्पण, सेवा, वैचारिक उदारता और समन्वयशीलता का साकार रूप है। यह संघ एक आचार्य के नेतृत्व में संचालित होता है। इस धर्मसंघ की गौरवशाली परंपरा में गुरु निष्ठा, आचार निष्ठा, मर्यादा निष्ठा और अनुशासन निष्ठा का अत्यंत महत्व है। तेरापंथ स्थापना दिवस पर अपनी प्रस्तुति में मुनि जयेश कुमार ने कहा कि आचार्य भिक्षु बॉस नहीं, एक लीडर थे। वे केवल आदेश नहीं देते थे, स्वयं आदर्श स्थापित करते थे। वे आत्म जागरण, आत्म नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति और नेतृत्व कौशल जैसे गुणों से सम्पन्न थे। उनकी मर्यादित अनुशासन शैली से ही इस धर्मसंघ में श्रद्धा, विनय और वात्सल्य की त्रिवेणी प्रवाहित हो रही है। तेरापंथ स्थापना दिवस का दिन गुरु पूर्णिमा के साथ भी जुड़ा हुआ है। इस संदर्भ में गुरु की महत्ता को मुनि भव्य कुमार ने प्रकट किया। कार्यक्रम में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में स्थानीय युवक परिषद द्वारा आयोजित 'मंत्र दीक्षा' समारोह के बैनर का लोकार्पण किया गया। श्रावकों ने तेले आदि तपस्याओं का प्रत्याख्यान किया।

घाटकोपर

घाटकोपर स्थित तेरापंथ सभा भवन में आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु के 300वें जन्म दिवस, बोधि दिवस, गुरु पूर्णिमा एवं तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन श्रद्धा और उत्साह के साथ किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी वृंद द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार, विशेष जप और गीत संगान से हुई। 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभा जी ने आचार्य भिक्षु को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे जैन आगमों के गहन मर्मज्ञ एवं व्याख्याता थे। उन्होंने कहा कि आत्म-साधना के पथ में संयम और अहिंसा ही स्वीकार्य हैं, और भगवान महावीर की वाणी में साध्य के अनुसार साधन की भी उतनी ही मूल्यवत्ता है। 'शासनश्री' साध्वी मंजुरेखाजी ने बताया कि मां दीपा के आंगन में दिव्य संकेतों के साथ जन्मे आचार्य भिक्षु ने समता, ज्ञान, दर्शन और चारित्र की शुद्ध आराधना की। चातुर्मास स्थापना के अवसर पर साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि मर्यादित व अनुशासित जीवन आत्म-उत्कर्ष का आधार है। आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ की दीर्घजीविता हेतु मर्यादाओं का निर्माण कर साधना के सूत्र प्रदान किए। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि आज से 266 वर्ष पूर्व आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन आचार्य भिक्षु ने चारित्र का पुनः प्रत्याख्यान कर एक महान धर्म क्रांति का सूत्रपात किया। उनके साथ बारह मुनियों ने मिलकर जिस साधना-पथ को अंगीकार किया, वह आज तेरापंथ धर्मसंघ के रूप में प्रतिष्ठित है। वर्तमान में इस अनुशासित संघ में लगभग 750 साधु-साध्वियाँ एक गुरु की अनुशासना में साधना कर रहे हैं। साध्वी मंजुरेखा जी ने गुरु पूर्णिमा को भारतीय संस्कृति का पावन पर्व बताते हुए आचार्य भिक्षु की उत्तराधिकारी परंपरा के वर्तमान अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी को श्रद्धा से नमन किया। साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी एवं साध्वी चेलनाश्री जी ने अपने भावों द्वारा उपस्थित श्रावक समाज को भावविभोर किया। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतों के माध्यम से आचार्य श्री भिक्षु को श्रद्धांजलि अर्पित की और रात्रि में धम्म जागरण में भक्ति-पारायण गीतों का संगान कर वातावरण को भक्ति से परिपूर्ण किया। इस अवसर पर महिला मंडल की ओर से भी भावपूर्ण प्रस्तुतियां दी गईं। कार्यक्रम में नरेंद्र तातेड़, उपासक मालचंद भंसाली, मनोहर गोखरू, हस्तीमल डांगी, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु बड़ाला, मंत्री नीतू डांगी सहित अनेक धर्म प्रेमी श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

आदर्शनगर, सवाईमाधोपुर

अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले ही सच्चे गुरु होते हैं। गुरु अपने अनुयायी के लिए किसी नए संसार की रचना नहीं करते, वरन् शिष्य में छिपी हुई प्रतिभा को बाहर लाने में सहायक बनते हैं और उसके गुणों में वृद्धि करते हैं। उक्त विचार युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी लक्ष्यप्रभा जी ने आदर्श नगर स्थित तेरापंथ भवन में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि गुरु पूर्णिमा और तेरापंथ की स्थापना का संयोग अद्भुत है। आचार्य श्री भिक्षु ने बिना किसी विशेष लक्ष्य के सत्य की राह को चुना और एक विशाल संघ की अकल्पनीय नींव रख दी, जो आज भी अक्षुण्ण है। आज यह धर्मसंघ रूपी नंदनवन कल्पवृक्ष की शीतल छाया की अनुभूति दे रहा है। श्रावक समाज को अपने धन, बुद्धि और शारीरिक बल का उपयोग संघ सेवा में लगाकर तप और त्याग के द्वारा जीवन को आलोकित बनाना अपेक्षित है। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल की बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। साध्वी नव्यप्रभा जी व साध्वी उन्नतप्रभा जी ने आचार्य भिक्षु के संदर्भ में अंक आधारित विशिष्ट जानकारी दी और श्रद्धा-भक्ति से ओतप्रोत गीतिका की सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संयोजन साध्वी डॉ. उन्नतप्रभा जी ने किया।

गंगाशहर

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक परम पूज्य आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी समारोह के तृतीय दिवस पर तेरापंथ भवन गंगाशहर में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने 'तेरापंथ का उद्भव' विषय पर अपना उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि तेरापंथ का प्रारंभ वि.स. 1817 की आषाढ़ी पूर्णिमा से होता है। उसी दिन आचार्य भिक्षु ने नए सिरे से व्रत ग्रहण किए, इस प्रकार उनकी भावदीक्षा के साथ ही तेरापंथ का सहज प्रवर्तन हुआ। मुनिश्री ने कहा कि महापुरुषों का अंतःकरण परमार्थ से परिपूर्ण होता है। वे जैसा अपना हित चाहते हैं, वैसा ही दूसरों का भी। आचार्य भिक्षु को जो श्रेय मार्ग मिला, उसे उन्होंने दूसरों को भी दिखाना चाहा। मुनिश्री ने श्रावकों को प्रेरणा देते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को इसका अध्ययन करना चाहिए, जिससे श्रद्धा और विश्वास के साथ जुड़ा जा सके एवं जैन दर्शन के सिद्धांतों को जीवन व्यवहार में धारण किया जा सके। तेरापंथ आस्था, विश्वास और समर्पण का धर्मसंघ है। गुरु के प्रति अटूट आस्था, धर्मसंघ के प्रति विश्वास और जिनवाणी के प्रति समर्पण की त्रिवेणी व्यक्ति को उच्चता प्रदान करती है। भीखण जी स्वामी सत्यनिष्ठ साधक संत थे। उन्होंने अहिंसा, संयम और तप के द्वारा आत्मकल्याण की प्रेरणा दी। तेरापंथ धर्मसंघ के सभी आचार्य चतुर्विध धर्मसंघ का योगक्षेम करते आए हैं, जिससे यह विशाल वटवृक्ष के रूप में विकसित हो सका है। इस अवसर पर मुनि श्रेयांसकुमारजी ने गीत का मधुर संगान किया। उपासक राजेन्द्र सेठिया ने आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों एवं तेरापंथ दर्शन पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में गणेशमल बोथरा, जतनलाल दूगड़, जतनलाल संचेती, धर्मेन्द्र डाकलिया, मांगीलाल बोथरा, श्रीया देवी गुलगुलिया, मनोज छाजेड़, राजेन्द्र बोथरा, मनीष बाफना, कनक गोलछा, गरिमा भंसाली, सुनीता दूगड़ एवं प्रियंका बैद ने गीतिका, कविताओं और वक्तव्यों के माध्यम से तेरापंथ धर्मसंघ की स्थापना के संबंध में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर लाभचन्द आंचलिया ने 33 दिन की, तथा महावीर फलोदिया, सम्पत सांड, शारदा देवी मरोटी ने 11 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। अनेक भाई-बहनों ने उपवास से 6 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। सरोज देवी पारख ने 33 दिन का एकासन, तथा अनेक भाई-बहनों ने 1 से 11 दिन तक के एकासन का प्रत्याख्यान किया। तीनों ही दिन का रात्रिकालीन कार्यक्रम सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी एवं साध्वी लब्धियशा जी के सान्निध्य में शांतिनिकेतन में आयोजित हुआ।

बोरावड़

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष का कार्यक्रम श्रद्धा और भावपूर्ण वातावरण में बड़े उत्साह के साथ दो चरणों में आयोजित किया गया। पहले चरण में जप अनुष्ठान एवं मकराना महिला मंडल की सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति हुई। दूसरे चरण का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। 'शासनश्री' साध्वी मधुरेखा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु एक महान साधक थे। उन्हें मान-सम्मान की अपेक्षा नहीं थी, बल्कि उन्होंने अनेक विरोधों का सामना किया, किंतु परिस्थितियों ने उन्हें कभी खिन्न नहीं किया। उसी की परिणति तेरापंथ धर्मसंघ के रूप में हुई। साध्वीश्री ने प्रसंगवश उल्लेख किया कि बोरावड़ एक तीर्थभूमि है, जहां पर 11 आचार्यों का पदार्पण हुआ है। साध्वी सुव्रतयशा जी एवं साध्वी लोकोत्तर प्रभा जी ने कविता और मुक्तक के माध्यम से अपने भावों की सुंदर अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ सभा के मंत्री गजेंद्र बोथरा, युवक परिषद के मंत्री अमित लोढ़ा, महिला मंडल अध्यक्ष भारती कोटेचा, प्रकाश लोढ़ा, प्रदीप जैन एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने भावपूर्ण प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी मधुयशा जी ने कहा कि महान साधना शलाका का वह पुरुष, जिसने विश्व क्षितिज पर एक तेजस्वी नक्षत्र के रूप में उदय लिया, जीवन भर अनेक संघर्षों के बावजूद अपनी तेजस्विता को संसार के समक्ष प्रस्तुत करता रहा।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर विशेष

शुद्धाचार विचार के पोषक थे आचार्य भिक्षु

● मुनि कमल कुमार ●

जन्म और जीवन दो अलग-अलग बिंदु हैं। दोनों का अपना-अपना महत्व है। इन दोनों में उत्कृष्ट जीवन ही वास्तव में सार्थक कहलाता है। जन्म तो अनेक प्राणी लेते हैं, परंतु जीवन कैसा होना चाहिए, इसके ज्ञाता बहुत कम दिखाई देते हैं। जो व्यक्ति अपने जीवन को साधनामय और संयममय बना लेते हैं, वे जन-जन के लिए प्रातःस्मरणीय, वंदनीय, श्लाघनीय और आदरणीय बन जाते हैं।

आचार्य भिक्षु एक ऐसे सिद्ध पुरुष थे, जिन्होंने राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र के कांठा प्रदेश स्थित कंटालिया ग्राम में माता दीपांजी और पिता बल्लूशाह के घर जन्म लेकर न केवल अपने परिवार को, बल्कि जन-जन को धन्य बना दिया। उनकी साधना का आधार महावीर वाणी थी। उन्होंने उस वाणी को अत्यंत गहराई से समझा और उसे अपने जीवन में उतार लिया।

उनकी साधना यात्रा आसान नहीं थी। उन्हें अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ा, परंतु उनका फौलादी संकल्प कभी डगमगाया नहीं। स्थानाभाव के कारण उन्हें श्मशान में निवास करना पड़ा, आहार और जल की कमी को उन्होंने सहज रूप से तपस्या का रूप दे दिया। लोग उन्हें अपशब्द कहते, मुक्कों से प्रहार करते, लेकिन वे सब कुछ समभाव से सहन करते रहे। ईर्ष्यालु लोग उन्हें साधना मार्ग से विचलित करने का प्रयास करते, परंतु उनके मन और मस्तिष्क पर वीतराग वाणी की गहरी छाप थी। उन्होंने हर परिस्थिति को समभाव से स्वीकार किया।

विक्रम संवत 1817 की आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को उन्होंने मेवाड़ प्रदेश के केलवा नगर में भाव संयम ग्रहण किया। उस समय वहाँ मात्र पाँच संत थे, सभी ने तेले की तपस्या करते हुए दीक्षा स्वीकार की। संघर्ष की यह यात्रा निरंतर चलती रही। प्रारंभ में साध्वियाँ नहीं होने के कारण लोग तेरापंथ को 'खांडे लड्डू' की उपमा देते थे। विक्रम संवत 1821 में सर्वप्रथम तीन साध्वियों का दीक्षा ग्रहण हुआ। विक्रम संवत 1832 तक साधु-साध्वियों की संख्या में अच्छी वृद्धि हो गई। तब आचार्य भिक्षु ने मर्यादावली का निर्माण किया, जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि सभी साधु-साध्वियों को मर्यादाओं का पालन करना चाहिए, ताकि उनका साधुत्व निखरता रहे। उन्होंने अपने उत्तराधिकारी का भी चयन कर लिया। 'एक गुरु, एक विधान' की परंपरा सबको प्रिय और ग्राह्य लगी। आचार्य भिक्षु ने गृहस्थ जीवन में केवल महाजनी विद्या पढ़ी थी, फिर भी उन्होंने जैन आगमों का गहन अध्ययन कर संघ की सुव्यवस्था हेतु जो मर्यादाएँ निर्मित कीं, वे आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। तेरापंथ धर्मसंघ की मूल आत्मा वही मर्यादाएँ हैं। हमें सात्त्विक गौरव की अनुभूति होती है कि सैकड़ों वर्षों के पश्चात भी उन मूल मर्यादाओं में किसी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं अनुभव होती। आषाढ़ शुक्ला तेरस के दिन, परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी की प्रेरणा और सूझबूझ से, जहां कहीं भी तेरापंथी परिवार निवास करता है, वहाँ आचार्य भिक्षु का जन्मदिवस त्याग, तपस्या, स्मरण और भजन के साथ श्रद्धापूर्वक मनाया जा रहा है। इसका उद्देश्य यह है कि केवल वर्तमान ही नहीं, अपितु भावी पीढ़ियाँ भी आचार्य भिक्षु के जीवन और सिद्धांतों से परिचित हो सकें।

आचार्य भिक्षु के 300वें जन्मदिवस पर शत-शत वंदन एवं अभिनंदन।

अम्बर अमृत बरसाए

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

आर्य भिक्षु का जन्मोत्सव, अन्तर उल्लास जगााए।
बल्लुशा के प्रांगण में, अम्बर अमृत बरसाए।।

1. दीपांजी के लाल को शत-शत नमन हमारा है,
कंटालिया के भाल ने दुनिया को संवारा है।
वसुधा का कण-कण हर्षित है, नभ में रवि हरसाए।।

2. बिगुल बजाया सत्य का, शिथिलाचार दूर भगा,
आस्था का आलोक पा जिनशासन सौभाग्य जगा।
उजला-उजला जीवन दर्शन अरमानों में छाए।।

3. तेरापंथ अनुशास्ता ने, बहुमूल्य अवदान दिए,
क्रांतिवीर सरताज ने नित नए उन्मेष दिए।
शांतिवीर सांवरिया स्वामी, घट-घट में बस जाए।।

4. कामकुंभ चिंतामणि कल्पवृक्ष की छांह मिली,
भक्ति से दर पे आया जीवन की बगिया खिली।
तेरापंथ अखिलेश को भावों की भेंट चढ़ाएं।।

5. ठोला मुक्का भी मिला मुक्ति की इस राह में,
हटे नहीं पीछे कभी आत्मशक्ति की चाह में।
अन्तर्यामी के शासन में समकित दीप जलाएं।।

लय - जनम-जनम का साथ है

आचार निष्ठा की महाज्योत : आचार्यश्री भिक्षु

● 'शासनश्री' साध्वी पानकुमारी (प्रथम) श्रीडूंगरगढ़ ●

आचार्यश्री भिक्षु एक सिंह पुरुष थे। उन्होंने सिंह के सपने के साथ मां दीपा और पिता बल्लुशाह के प्रांगण में जन्म लिया। ठाणं सूत्र में एक चतुष्पदी का उल्लेख आता है। आगमिक आस्था के आस्थान आचार्य भिक्षु ने सिंह की तरह पराक्रम करते हुए संन्यास ग्रहण किया और आजन्म शेर की तरह दहाड़ते रहे। उन्होंने एक धर्म क्रांति की। दुनिया में क्रांति करने वाले अनेक व्यक्ति होते हैं, पर शांति, धृति और शक्ति के साथ भक्ति पथ की क्रांति करने वाले विरले व्यक्ति होते हैं। उनमें आचार्यश्री भिक्षु का नाम प्रथम पंक्ति में है। उनकी सत्याग्रही चेतना का मंतव्य था – साध्वोचित शिथिलता को पीछे धकेल, नई ज्योति का स्वागत करना। प्राणवान धर्म को लोक जीवन में अवतरित करने के लिए उन्होंने ज्ञान की गंगा, साधना की सरस्वती और कल्याणकारी कालिंदी प्रवाहित की। उनकी ज्ञान रश्मि, ध्यान रश्मि और योग रश्मि ने जन-जन की चेतना को आकृष्ट किया।

कलात्मक प्रशिक्षण

आचार्य भिक्षु की पारगामी मेधा जितनी सूक्ष्मग्राही थी, उतनी ही उनमें तत्वबोध देने की कलात्मकता थी। सहज सरल शैली से वे इस प्रकार बात-बात में बोध देते कि सामने वाला श्रोता आकृष्ट हुए बिना नहीं रहता। एक बार केलवा के ठाकुर मौखमसिंह ने कहा कि स्वामी जी, आप आगमों पर प्रवचन करते हो। उन्हें किसी ने देखा नहीं, तब वे सत्य हैं या असत्य, इसका प्रमाण क्या है? भिक्षु स्वामी ने विलक्षण प्रतिभा से प्रत्युत्तर में कहा – तुमने अपने पूर्वजों के नाम, परिचय, संस्मरण सुने हैं, उन्हें मानते भी हो, जबकि तुमने उनको देखा नहीं, तब विश्वास कैसे करोगे?

ठाकुर बोले – हमारे वंशजों के नाम भाटों की पुस्तकों में लिखे हुए हैं, इस आधार पर उन्हें स्वीकृत करते हैं। तब स्वामी जी ने कहा – भाटों के असत्य बोलने या लिखने का त्याग नहीं है, फिर भी तुम उनकी बात को सत्य मानते हो, तब ज्ञानियों द्वारा प्ररूपित शास्त्रों को सत्य मानने में क्या आपत्ति है? स्वामी जी की पैनी दृष्टि, कलात्मक वाकपटुता ठाकुर साहब को विस्मय-विमुग्ध बना गई। ऐसी एक नहीं, अनेक घटनाएं हैं, जिसमें भिक्षु स्वामी के वक्तृत्व कौशल के नज़ारे देखने को मिलते हैं।

आचारनिष्ठ व्यक्तित्व

आचार्य भिक्षु की आचार-विचार निष्ठा बेजोड़ थी। छोटी सी खामी भी उन्हें बर्दाश्त नहीं होती। अचेतन रहने वालों को वे बेधड़क कहने में निष्णात थे। रीयां के अमीर सेठ हरजीमल साधुओं को वस्त्र बहराते एवं उन्होंने स्वामी जी को भी आग्रह किया।

भीखणजी ने कहा – तुम कपड़ा मोल लाते हो साधुओं के लिए, अतः हमें नहीं कल्पता। तो आप हमारा व्यक्तिगत वस्त्र लें। उसे भी लेना मंजूर नहीं किया, क्योंकि कौन तार निकालेगा कि यह वस्त्र व्यक्तिगत था या साधु के निमित्त लाया हुआ।

इस प्रकार आचार्य भिक्षु की सोच का दायरा विशाल था, अदम्य आत्मविश्वास लाजवाब था। उनके चिंतन का कोण था –

'हर कार्य के लिए उल्लास चाहिए।
हर सांस के साथ मन का विश्वास चाहिए।'

हम उल्लास और विश्वास के साथ प्रकाश के पथ पर बढ़ें, प्रकाशमय बनें।

प्रकाश पुंज की अभिवंदना में –

'यों तो दुनिया के समंदर में, मोतियों की कमी नहीं।

पर आचार्य भिक्षु की आब जैसा कोई दूसरा मोती नहीं।।'

निरामय निरंजन आचार्य भिक्षु

● साध्वी मुक्ताप्रभा ●

1. अनुपम प्रभास्वर अंतर्यामी,
संयम तप का प्रकाश चाहिए।

2. अप्रतिबद्ध विहारी, इन्द्रिय जेता,
परम शुक्ल का ध्यान चाहिए।

3. निस्समय, निरंजन बन जाए,
पारदर्शी, सत्यदर्शी जीवन चाहिए।

4. अनुशासन-अप्रतिम, कुशल पारखी,
अध्यात्म रस की सुवास चाहिए।

5. निर्मल चेता, विश्वविजेता, जन-जन के खेता,
अंतर्यात्रा, अंतर्दर्शन का विज्ञान चाहिए।

6. तेरापंथ के आदि प्रणेता, मघ गण नायक,
सम्यक-दृष्टि, प्रांजल सृष्टि चाहिए।

7. आगम-मुक्ता मणियों के संघाता,
तात्त्विक चिंतन, सत्य रूप चाहिए।

8. अंतश्चक्षु उद्घटित कर दो, भिक्षु स्वामी,
पवित्र ऊर्जा का संदेश चाहिए।

9. अक्षय ज्ञान के विशारद पंडित, आर्य भिक्षु,
बोधि, समाधि, समृद्धि का वरदान चाहिए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025

संबोधि

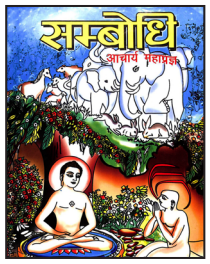

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

जार्ज गुरजिएफ साधकों को क्रोध करने के लिए कहता। ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करता कि व्यक्ति आग-बबूला हो जाता। जब पूरे क्रोध में आ जाता तब कहता 'देखो! क्या हो रहा है? आदमी चौंककर देखता हाथ, चेहरा, होंठ, आंखें और शरीर को एक विपरीत अस्वाभाविक दशा में और वह एक क्षण में उससे पृथक् हो जाता। समस्त पापों, अशुभों से बचने और दूर रहने का मौलिक सूत्र है-देखना, सावधान रहना।

९. पादयुग्मञ्च संहत्य, प्रसारितभुजोभयः।
ईषन्नतः स्थिरदृष्टिर्लप्स्यसे मनसो धृतिम्।।

दोनों पैरों को सटाकर, दोनों भुजाओं को फैलाकर, थोड़ा झुककर तथा दृष्टि को स्थिर बना, इस प्रकार मानसिक धैर्य को प्राप्त होगा। यह जिनमुद्रा है। ध्यान के लिए चार मुद्राओं का उल्लेख मिलता है-

१. जिनमुद्रा,

२. योगमुद्रा,

३. वंदनामुद्रा,

४. मुक्तासुक्ति मुद्रा।

चित्त को स्थिर और एकाग्र करना मुद्राओं का प्रयोजन है। इससे कष्ट सहिष्णुता का अभ्यास होता है, साधक की मानसिक धृति बढ़ती है।

१०. प्रयत्नं नाधिकुर्वाणोऽलब्धांश्च विषयान् प्रति।
लब्धान् प्रति विरज्यंश्च, मनसः स्वास्थ्यमाप्स्यसि।।

अप्राप्त विषयों पर अधिकार करने का प्रयत्न मत कर और प्राप्त विषयों से विरक्त बन, इस प्रकार तू मानसिक स्वास्थ्य को प्राप्त होगा।

'बलख' का बादशाह इब्राहिम साम्राज्य को छोड़ कर फकीर हो गया। वह फकीरी के वेष में भारत-यात्रा पर आया। एक संत से भेंट हुई। उसने पूछा-संत कौन होता है? संत ने कहा-मिले तो खा ले और ना मिले तो सन्तोष रखे।

इब्राहिम ने कहा-यह तो कोई बहुत बड़ा लक्षण नहीं है। इतना तो एक कुत्ता भी कर लेता है। संत ने कहा-तो आप बताएं। उसने कहा-जो कुछ मिले उसे बांट कर खाएं और न मिले तो समझे चलो, आज उपवास व्रत ही सही। प्राप्त में सन्तोष और अप्राप्त का आकर्षण नहीं रखना शांति का 'सहज उपाय है। सन्तोष वही नहीं कि आप के पास है भी नहीं, और आप उसका सन्तोष करें। सन्तोष भविष्य में नहीं, वर्तमान में है। संतुष्ट आप आज रह सकते हैं, कल में नहीं। कल अशांति का लक्षण है। महावीर कहते हैं-अप्राप्त पदार्थों को प्राप्त करने में जो व्यग्र नहीं और प्राप्त में परम संतुष्ट है, जो मिला है, उसमें प्रसन्न रह सकता है, वह संतुष्ट है। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री पन्नां जी (चुरू) दीक्षा क्रमांक 126

साध्वीश्री तपस्विनी थी। आपने जो तप किया। उसका उल्लेख इस प्रकार है- 5/4, 6/1, 7/1, 8/1, 9/2, 10/1, 11/1, 12/1, 13/1 उपवास से चोले तक की तपस्या का विवरण प्राप्त नहीं होता।

- साभार: शासन समुद्र -

श्रमण महावीर

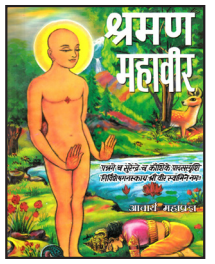

नई स्थापनाएं : नई परम्पराएं

भगवान् का यह स्वर उनके उत्तराधिकार में भी गुंजित होता रहा है। एक आचार्य ने लिखा है- 'कोई व्यक्ति मौनी हो या ध्यानी, वल्कल चीवर पहनने वाला हो या तपस्वी, यदि वह अब्रह्मचर्य की प्रार्थना करता है, तो वह मेरे लिए प्रिय नहीं है, भले फिर वह साक्षात् ब्रह्मा ही क्यों न हो।

भगवान् की आत्म-निष्ठा और अनुत्तर इन्द्रिय-विजय ने ब्रह्मचर्य-विकास के नए आयाम खोल दिए। उनसे पूर्व अब्रह्मचर्य को अनेक दिशाओं से प्रोत्साहन मिल रहा था। कुछ धर्म-चिन्तक 'संतान पैदा किए बिना परलोक में गति नहीं होती'- इस सिद्धांत का प्रतिपादन कर विवाह की अनिवार्यता प्रतिपादित कर रहे थे। कुछ संन्यासी अब्रह्मचर्य को स्वाभाविक कर्म बतलाकर उसकी निर्दोषता प्रमाणित कर रहे थे। वे कह रहे थे-जैसे व्रण को सहलाना स्वाभाविक है वैसे ही वासना के व्रण को सहलाना स्वाभाविक है। इन दोनों धारणाओं के प्रतिरोध में खड़े होकर भगवान् महावीर ने ब्रह्मचर्य को इतना मूल्य दिया कि उनके उत्तर-युग में गृहवास में रहकर भी ब्रह्मचारी रहने को जीवन की सार्थकता समझा जाने लगा।

भगवान् दीक्षित हुए तब उनके पास केवल एक वस्त्र था। कुछ दिनों बाद उसे भी छोड़ दिया। वे मूर्च्छा की दृष्टि से प्रारम्भ से ही निर्ग्रन्थ थे, किन्तु वस्त्र-त्याग के बाद उपकरणों से भी निर्ग्रन्थहो गए।

तीर्थ-प्रवर्तन के बाद भगवान् ने निर्ग्रन्थों को सीमित वस्त्र-और पात्र रखने की अनुमति दी और वह केवल उन्हीं निर्ग्रन्थों को, जो लज्जा पर विजय पाने में असमर्थ थे। महावीर के इन परिवर्तनों ने भगवान् पार्श्व और स्वयं उनके शिष्यों में एक प्रश्न पैदा कर दिया। केशी और गौतम की चर्चा में इसका स्पष्ट चित्र मिलता है।

गौतम स्वामी अपने शिष्यों के साथ श्रावस्ती आए। कुमारश्रमण केशी पहले ही वहां उपस्थित थे। गौतम कोष्ठक उद्यान में ठहरे। केशी तिन्दुक उद्यान में ठहरे हुए थे। दोनों के शिष्यों ने एक-दूसरे को देखा। उनके मन के प्रश्न उभार में आ गए। उन्होंने आपस में चर्चा शुरू कर दी। 'हमारा लक्ष्य एक है तब फिर यह भेद क्यों? यह चार और पांच महाव्रतों का भेद क्यों? यह पूर्ण वस्त्र और अवस्त्र या अल्पवस्त्र का भेद क्यों?' यह चर्चा गौतम और केशी के कानों तक पहुंची। दोनों ने अपने-अपने शिष्यों की जिज्ञासा का समाधान करना चाहा। मिलने की योजना बन गई।

गौतम अपने शिष्यों को लेकर तिन्दुक वन में पहुंच गए। केशी ने उनका स्वागत किया। उन्हें बैठने के लिए आसन दिए। दोनों के बीच चर्चा शुरू हुई।

केशी द्वारा महाव्रतों के विस्तार का कारण पूछने पर गौतम ने कहा- भगवान् पार्श्व के युग में मुनि ऋजु-प्रज्ञ थे। वे व्रत के आशय को पकड़ते थे। भगवान् पार्श्व ने बाह्य के आदान का प्रतिषेध किया। इस आधार पर वे अब्रह्म और परिग्रह दोनों का निषेध स्वीकार कर लेते थे। आज स्थिति बदल गई है। वर्तमान के मुनि वक्र-प्रज्ञ हैं। ये आशय की अपेक्षा शब्दों को पकड़ने में चतुर हैं। आपको ज्ञात ही है कि आज आपकी परम्परा के अनेक मुनि यह कहने लग गए हैं कि भगवान् पार्श्व ने अब्रह्मचर्य का निषेध नहीं किया है। इस धारणा से उनकी मानसिक शिथिलता को पनपने का अवसर मिला है। भगवान् महावीर ने इस स्थिति को देख 'बहिद्धादान-विरमण' महाव्रत का विस्तार कर ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह- इन दो स्वतन्त्र महाव्रतों की स्थापना कर दी। अब्रह्मचर्य की वृत्ति को प्रश्रय देने के लिए जिस कुतर्क का प्रयोग किया जाता था, उसका इस स्थापना के द्वारा समूल उन्मूलन हो गया। यह हमारे धर्म की द्विधा नहीं है। यह है वर्तमान मानस का उपचार।

केशी ने बड़ी शालीनता के साथ कहा- गौतम! आपने महाव्रतों के विस्तार के बारे में जो कहा, वह मुझे उचित लगता है। मैं उसका समर्थन करता हूं और मैं देख रहा हूं कि मेरे शिष्य भी उसका समर्थन कर रहे हैं। पर भगवान् महावीर ने यह वेश की द्विधा क्यों की? उससे आपकी धारा श्रमण-परम्परा की मुख्य धारा से पृथक् होकर प्रवाहित होने लगी है। भगवान् पार्श्व के तीर्थ की वेशभूषा को स्वीकार करने में भगवान् महावीर के सामने क्या कठिनाई थी?'

गौतम ने बताया- 'युग-चेतना ने मुनि की वेषभूषा के पुराने मूल्यों को अस्वीकार कर दिया है। मुनि के लिए रंगीन और बहुमूल्य वस्त्रों का उपयोग अब मान्य नहीं है। भगवान् महावीर ने वर्तमान की समस्या का अध्ययन कर वेषभूषा में परिवर्तन किया।' (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

समता का शास्त्र

छठे अध्ययन का नाम धुत है। धुत का अर्थ है प्रकम्पित और पृथक्कृत। प्रस्तुत अध्ययन के पांच उद्देशक हैं। प्रत्येक उद्देशक में एक-एक धुत प्रतिपादित है-

१. स्वजन परित्याग

२. कर्म-परित्याग

३. उपकरण और शरीर-परित्याग

४. ऋद्धि, रस और सुख-इस गौरवत्रयी का परित्याग

५. उपसर्ग और सम्मान का परित्याग।

पास लोए महब्भयं– तू देख-लोक में महान् भय है।

पाणा पाणे किलेसति– प्राणी प्राणियों को कष्ट देते हैं।

बहुदुक्खा हु जंतवो– जीवों के नाना दुःख होते हैं।

णातिवाएज्ज कचण– किसी की हिंसा न करे।

आठवें अध्ययन का नाम विमोक्ष है। इसमें तीन प्रकार के अनशन का अच्छा वर्णन है। इस अध्ययन के कुछ सूक्त इस प्रकार हैं-

अदुवा गुत्ती वओगोयरस्स– अथवा वाणी के विषय का संगोपन करे- मौन रहे।

आहारोवचया देहा परिसहपभंगुरा– शरीर आहार से उपचित होते हैं और वे कष्ट से भग्न हो जाते हैं।

नवें अध्ययन का नाम उपधानश्रुत है। इसमें संक्षेप में महावीर की जीवनी का अवबोध होता है।

इस प्रकार आयारो अध्यात्म-शास्त्र अथवा समता-शास्त्र है। इसका बार-बार स्वाध्याय आत्मोन्मुखी बनने में सहायक बन सकता है।

ठाणं

द्वादशांगी में तीसरा अंग है ठाणं (स्थानांग)। उसकी विषय-सामग्री दस स्थानों में विभक्त है। प्रथम 'स्थान' में एक-एक की संख्या वाले विषयों की सूची है। दूसरे स्थान में दो-दो विषयों का संकलन है। तीसरे स्थान में तीन-तीन की संख्या वाले विषयों की परिगणना है। इस प्रकार उत्तरोत्तर क्रम से दसवें स्थान में दस-दस तक के विषयों का प्रतिपादन हुआ है। इस एक अंग का परिशीलन कर लेने पर हजारों विविध प्रतिपाद्यों के भेद-प्रभेदों का गंभीर ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

संख्या के अनुपात से एक द्रव्य के अनेक विकल्प करना, इस आगम की रचना का मुख्य उद्देश्य रहा हो, ऐसी संभावना 'कसायपाहुड' ग्रन्थ से पुष्ट होती है। उदाहरण स्वरूप-प्रत्येक शरीर की दृष्टि से जीव एक है। संसारी और मुक्त इस अपेक्षा से जीव दो प्रकार के हैं। कर्म-चेतना, कर्मफल चेतना और ज्ञान चेतना की दृष्टि से वह त्रिगुणात्मक है। गति-चतुष्टय में संचरणशील होने के कारण वह चार प्रकार का है। औदयिक आदि पांच भावों वाला होने के कारण वह पांच प्रकार का है। पृथ्वीकाय आदि छह काय की जीवयोनि में भ्रमणशील होने के कारण वह छह प्रकार का है। स्याद अस्ति आदि के स्वरूप वाली सप्तभंगी से निरूपित होने के कारण वह सात प्रकार का है।

ज्ञानावरण, दर्शनावरण और आदि आठ कर्मों से युक्त होने के कारण जीव आठ विकल्प वाला है। पृथ्वीकाय आदि पांच स्थावर काय, तीन विकलेन्द्रिय एवं पंचेन्द्रिय – इन नौ योनियों में उत्पत्तिशील होने के कारण वह नौ प्रकार का है। प्रत्येक वनस्पतिकाय, साधारण वनस्पतिकाय, चार स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय और एक पंचेन्द्रिय-इन दस स्थानों में जन्मशील होने के कारण जीव दस प्रकार का होता है।

इस प्रकार प्रस्तुत सूत्र में संख्यात्मक रूप से जीव, अजीव आदि द्रव्यों की स्थापना की गई है। प्रस्तुत सूत्र में भूगोल, खगोल तथा नरक ओर स्वर्ग का भी विस्तृत वर्णन है। इसमें अनेक ऐतिहासिक तथ्य भी उपलब्ध होते हैं।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री वृद्धिचंदजी (बागोर) दीक्षा क्रमांक 382

मुनिश्री महान् तपस्वी थे। आपने तपोवृद्धि में चार चांद लगा दिये। आपने उपवास से लेकर 16 दिन तक लड़ीबद्ध तप किया। लघुसिंह निष्क्रीडित तप की प्रथम परिपाटी सं 1998 सम्पन्न की।

आपने रत्नावली नामक महातप के महासमुद्र को पार कर दिया। भगवती सूत्र तथा अंतगढ़ सूत्र में उक्त तप करने का उल्लेख है। उसकी विधि इस प्रकार है–

रत्नावली तप

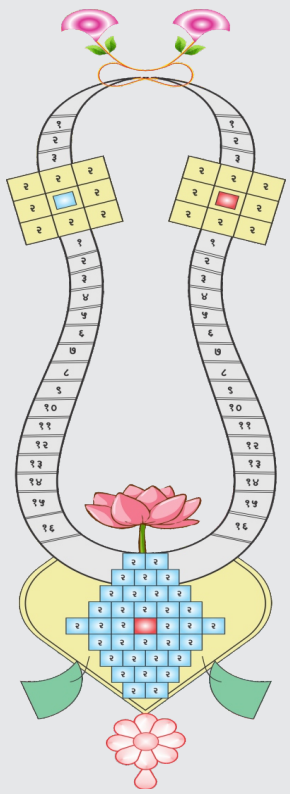

रत्नावली का शब्दिक अर्थ है– रत्नों की पंक्ति। रत्नों की पंक्ति रत्नों के हार में होती है, इसलिए यह तप हार की कल्पना के अनुसार किया जाता है। हार में ऊपर दोनों ओर दो दाडिम पुष्प होते हैं और नीचे की ओर बीच में एक बड़ा दाडिमपुष्प होता है। उसी कल्पना के अनुसार इस तप की विधि यह है। काहलिका के रूप में उपवास, बेला और तेला क्रमशः किया जाता है फिर दाडिमपुष्प के रूप में 8 बेले किए जाते है, उसके नीचे सारिका आती है, उसमें उपवास से लेकर क्रमशः 16 दिन तक चढ़ना होता है। फिर 34 बेले करने होते है फिर वापस 16 दिन के तप से क्रमशः उतरते-2 उपवास तक आते है फिर दाडिमपुष्प के रूप में 8 बेले किये जाते है, फिर काहलिका के रूप में क्रमशः तेला, बेला और उपवास किया जाता है। इस क्रम से रत्नावली तप की एक परिपाटी पूर्ण होती है। एक परिपाटी में 1 वर्ष 3 मास 22 दिन लगते है, जिसमें 384 दिन तप के होते है और 88 दिन पारणे के लगते है। इस तप की चार परिपाटी (आवृत्ति) होती है। चारों आवृत्तियों का क्रम यही है, केवल पारणे का अन्तर आता है। (क्रमशः)

– साभार : शासन समुद्र –

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, अध्यात्म जगत् के उज्ज्वल नक्षत्र, महातपस्वी, अहिंसा यात्रा प्रणेता, विश्वविभूति, वीतरागकल्प, अणुव्रत अनुशास्ता, युगप्रधान, परम श्रद्धेय **आचार्यश्री महाश्रमण** के आज्ञावर्ती चारित्रात्माओं के

चातुर्मासिक प्रवास : विक्रम संवत् २०८२

१. गुजरात प्रान्तः चातुर्मासिक प्रवास ७ : संत ४८, सतियां १३०

विद्यावारिधि, धृतिधर, विमलमूर्ति **आचार्यश्री महाश्रमणजी** आदि संत ४६, **साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी** आदि सतियां १०७ प्रेक्षा विश्व भारती, कुडासण, गांधीनगर (गुजरात)।

२.	मुनिश्री कोमलकुमारजी	ऊमरी	संत २	दाहोद
३.	साध्वीश्री मधुबालाजी	मोमासर	सतियां ५	उधना
४.	साध्वीश्री राकेशकुमारीजी	बायतू	सतियां ४	बारडोली
५.	साध्वीश्री हेमलताजी	बेला	सतियां ५	भुज
६.	*साध्वीश्री मंगलयशाजी	फतेहगढ़	सतियां ३	गांधीधाम
७.	साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी	मोमासर	सतियां ६	सिटी-लाइट, सूरत

२. राजस्थान प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ६७, संत ५२, साध्वियां ३०१

(क) थली विभाग : प्रवास २७, संत २०, सतियां १५३

१.	मुनिश्री कमलकुमारजी	गंगाशहर	संत ६	गंगाशहर
२.	मुनिश्री सुमतिकुमारजी	गंगाशहर	संत ३	श्रीगंगानगर
३.	मुनिश्री जम्बू कुमारजी	सरदारशहर	संत २	चाड़वास
४.	मुनिश्री देवेन्द्रकुमारजी मुनिश्री पृथ्वीराजजी	टमकोर जसोल	सन्त ५	छापर (सेवाकेन्द्र)
५.	मुनिश्री अमृतकुमारजी	झाबुआ	संत २	देशनोक
६.	*मुनिश्री विनोदकुमारजी	चूरु	संत २	पीलीबंगा
७.	साध्वीश्री मानकुमारीजी	सरदारशहर	सतियां ७	राजलदेसर
८.	साध्वीश्री राजीमतीजी	रतनगढ़	सतियां ८	नोखामंडी
९.	साध्वीश्री विद्यावतीजी 'प्रथम'	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ४	सादुलपुर
१०.	साध्वीश्री सरोजकुमारीजी	मुम्बई	सतियां ४	सरदारशहर
११.	साध्वीश्री सुप्रभाजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ५	सुजानगढ़
१२.	साध्वीश्री संयमश्रीजी	रतनगढ़	सतियां ५	रतनगढ़
१३.	साध्वीश्री वसंतप्रभाजी	राजलदेसर	सतियां ४	जोरावरपुरा
१४.	साध्वीश्री मंजुप्रभाजी साध्वीश्री कुंथुश्रीजी	छापर उमरा	सतियां १२	तुलसी साधना केन्द्र, बीकानेर
१५.	साध्वीश्री शशिरेखाजी	बाव	सतियां ४	उदासर
१६.	साध्वीश्री प्रज्ञावतीजी	बाव	सतियां ४	तारानगर
१७.	साध्वीश्री प्रमिलाकुमारीजी	सुजानगढ़	सतियां ४	मोमासर
१८.	साध्वीश्री विशदप्रज्ञाजी *साध्वीश्री लब्धियशाजी	बीदासर जसोल	सतियां २६	गंगाशहर (सेवाकेन्द्र)
१९.	साध्वीश्री संगीतश्रीजी *साध्वीश्री परमप्रभाजी	श्रीडूंगरगढ़ बीदासर	सतियां २०	श्रीडूंगरगढ़ (सेवाकेन्द्र)
२०.	साध्वीश्री उज्ज्वलरेखाजी	सरदारशहर	सतियां ६	कालू
२१.	साध्वीश्री संघप्रभाजी	राजलदेसर	सतियां ३	पड़िहारा
२२.	साध्वीश्री मंगलप्रभाजी	लाडनूं	सतियां ४	चूरू
२३.	साध्वीश्री ललितकलाजी	गंगाशहर	सतियां ४	लूणकरणसर
२४.	साध्वीश्री जिनबालाजी	गंगाशहर	सतियां ४	भीनासर
२५.	साध्वीश्री सुदर्शनाश्रीजी	सरदारशहर	सतियां ५	नोहर
२६.	*साध्वीश्री सूरजप्रभाजी	टमकोर	सतियां ३	हनुमानगढ़ टाउन
२७.	साध्वीश्री मंजुयशाजी साध्वीश्री यशोमतीजी साध्वीश्री साधनाश्रीजी साध्वीश्री अमितप्रभाजी	बीदासर राजगढ़ सरदारशहर बीदासर	सतियां १७	बीदासर (समाधिकेन्द्र)

(ख) मारवाड़ विभाग : प्रवास २१, संत १७, सतियां ९२

१.	मुनिश्री मणिलालजी मुनिश्री मुनिव्रतजी मुनिश्री धर्मेशकुमारजी	सरदारशहर गंगाशहर कांजीवरम्	संत ८	सिरियारी
२.	मुनिश्री विजयकुमारजी मुनिश्री जयकुमारजी	सुजानगढ़ टापरा	संत ७	जै.वि. भा., लाडनूं (सेवाकेन्द्र)
३.	मुनिश्री यशवन्तकुमारजी	जसोल	संत २	बाड़मेर
४.	साध्वीश्री सत्यप्रभाजी	देवगढ़	सतियां ४	सदर बजार, बालोतरा
५.	साध्वीश्री कमलप्रभाजी	बोरज	सतियां ५	छोटी खाटू
६.	साध्वीश्री सत्यवतीजी	हांसी	सतियां ४	सरदारपुरा, जोधपुर
७.	साध्वीश्री कल्पलताजी	लाडनूं	सतियां ८	जै.वि.भा., लाडनूं
८.	साध्वीश्री मधुरेखाजी	गंगाशहर	सतियां ५	बोरावड़
९.	साध्वीश्री जिनरेखाजी	गंगाशहर	सतियां ५	बायतू
१०.	साध्वीश्री शान्ताकुमारीजी	गंगाशहर	सतियां ५	किशनगढ़
११.	साध्वीश्री प्रमोदश्रीजी	पचपदरा	सतियां ५	अजमेर
१२.	साध्वीश्री अणिमाश्रीजी	मोमासर	सतियां ५	न्यू तेरापंथ भवन, बालोतरा
१३.	साध्वीश्री कीर्तिलताजी	बैंगलुरु	सतियां ४	ब्यावर
१४.	साध्वीश्री गुप्तिप्रभाजी	तारानगर	सतियां ४	डीडवाना
१५.	साध्वीश्री कुन्दनप्रभाजी	उदासर	सतियां ५	अमरनगर, जोधपुर
१६.	साध्वीश्री काव्यलताजी	गादाणा	सतियां ४	पाली
१७.	साध्वीश्री रतिप्रभाजी	बालोतरा	सतियां ४	जसोल
१८.	साध्वीश्री संपूर्णयशाजी	सरदारशहर	सतियां ४	पचपदरा
१९.	साध्वीश्री कार्तिकयशाजी	पचपदरा	सतियां १३	लाडनूं (सेवाकेन्द्र)
२०.	*साध्वीश्री मीमांसाप्रभाजी	सरदारशहर	सतियां ५	डेगाना
२१.	*साध्वीश्री मेघप्रभाजी	सूरतगढ़	सतियां ३	असाड़ा

(ग) मेवाड़ विभाग : प्रवास १३, संत १३, सतियां ३४

१.	मुनिश्री सुरेशकुमारजी	हरनावां	संत ३	कांकरोली
२.	मुनिश्री संजयकुमारजी	दिवेर	संत ३	रेलमगरा
३.	मुनिश्री मुनिसुव्रतकुमारजी	बीदासर	संत ३	केलवा
४.	मुनिश्री प्रसन्नकुमारजी	दिवेर	संत २	गंगापुर
५.	मुनिश्री निकुंजकुमारजी	बाव	संत २	पुर
६.	साध्वीश्री जसवतीजी	सरदारशहर	सतियां ६	आसीन्द
७.	साध्वीश्री उर्मिलाकुमारीजी	गंगाशहर	सतियां ४	भीलवाड़ा
८.	साध्वीश्री प्रज्ञाश्रीजी	तासोल	सतियां ४	बोरज
९.	साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी	सुजानगढ़	सतियां ५	उदयपुर
१०.	साध्वीश्री रचनाश्रीजी	टमकोर	सतियां ४	नाथद्वारा
११.	साध्वीश्री सम्यक्प्रभाजी	सरदारशहर	सतियां ४	आमेट
१२.	साध्वीश्री उज्ज्वलप्रभाजी	लोणार	सतियां ४	राजनगर
१३.	साध्वीश्री प्रसन्नयशाजी	कालू	सतियां ३	देवगढ़

(घ) हाडौती-ढूंढाड़ विभाग : प्रवास ६, संत २, सतियां २२

१.	मुनिश्री तत्त्वरुचिजी	आमेट	संत २	श्यामनगर, जयपुर
२.	साध्वीश्री धनश्रीजी	सरदारशहर	सतियां ५	कोटा
३.	साध्वीश्री कनकश्रीजी	लाडनूं	सतियां ६	अणुविभा, जयपुर
४.	साध्वीश्री विनयश्रीजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ३	मंत्रीमुनि स्मृति स्थल, जयपुर
५.	साध्वीश्री मधुस्मिताजी	सरदारशहर	सतियां ५	जवाहरनगर, जयपुर
६.	*साध्वीश्री लक्ष्यप्रभाजी	मारवाड़ जंक्शन	सतियां ३	आदर्शनगर, सवाईमाधोपुर

३. दिल्ली प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ८ : संत ९, सतियां २२

१.	मुनिश्री विमलकुमारजी	तारानगर	संत ४	फरीदाबाद
२.	मुनिश्री उदितकुमारजी	सरदारशहर	संत ३	शहादरा, दिल्ली
३.	मुनिश्री अभिजितकुमारजी	बाव	संत २	अणुव्रत भवन, दिल्ली
४.	साध्वीश्री संघमित्राजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ५	ग्रीनपार्क, दिल्ली
५.	*साध्वीश्री सुव्रतांजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ४	पीतमपुरा (श्रा.भा.), शास्त्रीनगर, (आ.का.), दिल्ली
६.	साध्वीश्री रविप्रभाजी	लाडनूं	सतियां ५	मॉडल टाउन, दिल्ली
७.	साध्वीश्री कुन्दनरेखाजी	हिसार	सतियां ५	महरौली, दिल्ली
८.	साध्वीश्री लब्धिप्रभाजी	टिटिलागढ़	सतियां ३	रोहिणी, दिल्ली

४. हरियाणा प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ९ : संत ४, सतियां ३८

१.	मुनिश्री रणजीतकुमारजी	राजलदेसर	संत २	कटला-रामलीला, हिसार
२.	मुनिश्री सुधाकरजी	राजलदेसर	संत २	पंचकूला
३.	साध्वीश्री भाग्यवतीजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ४	हांसी
४.	साध्वीश्री यशोधराजी	लाडनूं	सतियां ७	तेरापंथ भवन, मॉडल टाउन, हिसार
५.	साध्वीश्री सुमनश्रीजी	बीदासर	सतियां ४	रोहतक
६.	साध्वीश्री तिलकश्रीजी	सुजानगढ़	सतियां ३	भिवानी
७.	साध्वीश्री प्रशमरतिजी साध्वीश्री शुभप्रभाजी साध्वीश्री राजकुमारीजी	तारानगर राजगढ़ नोहर	सतियां ११	हिसार, (उपसेवाकेन्द्र)
८.	*साध्वीश्री प्रेमलताजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ५	हिसार (सेक्टर-१४)
९.	साध्वीश्री संयमप्रभाजी	हांसी	सतियां ४	सिरसा

५. केन्द्रशासित प्रदेश : चातुर्मासिक प्रवास १ : संत २

१.	मुनिश्री विनयकुमारजी	सरदारशहर	संत २	चण्डीगढ़

६. पंजाब प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ६ : सतियां २४

१.	साध्वीश्री कनकश्रीजी	राजगढ़	सतियां ४	सुनाम
२.	साध्वीश्री कनकरेखाजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ४	धूरी
३.	*साध्वीश्री प्रतिभाश्रीजी	गंगाशहर	सतियां ४	नाभा
४.	*साध्वीश्री समन्वयप्रभाजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ३	गोविन्दगढ़
५.	साध्वीश्री प्रांजलप्रभाजी	समदड़ी	सतियां ४	संगरूर
६.	साध्वीश्री चरितार्थप्रभाजी	चेन्नई	सतियां ५	लुधियाना

७. महाराष्ट्र प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ६ : संत ६, सतियां १३

१.	मुनिश्री कुलदीपकुमारजी	सरदारशहर	संत २	कान्दिवली, मुम्बई
२.	मुनिश्री आलोककुमारजी	लोणार	संत २	साक्री
३.	मुनिश्री अनन्तकुमारजी	फतेहगढ़	संत २	ठाणे
४.	साध्वीश्री विद्यावतीजी 'द्वितीय'	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ५	भायन्दर
५.	साध्वीश्री कंचनप्रभाजी	सुजानगढ़	सतियां ५	घाटकोपर, मुंबई
६.	साध्वीश्री शिवमालाजी	टमकोर	सतियां ३	कालबादेवी, मुंबई

८. मध्यप्रदेश प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ४ : संत ३, सतियां ११

१.	मुनिश्री अर्हत् कुमारजी	पदराड़ा	संत ३	इन्दौर
२.	साध्वीश्री स्वर्ण रेखाजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ४	ग्वालियर
३.	साध्वीश्री पंकजश्रीजी	लाडनूं	सतियां ३	पेटलावद
४.	साध्वीश्री प्रबलयशाजी	छापर	सतियां ४	केसूर

९. बंगाल प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास २ : संत ५

१.	मुनिश्री जिनेशकुमारजी	जसोल	संत ३	पूर्वांचल, कोलकाता
२.	*मुनिश्री आनन्दकुमारजी	कालू	संत २	सिलीगुड़ी

१०. असम प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास २ : संत ६

१.	मुनिश्री ज्ञानेन्द्रकुमारजी मुनिश्री रमेशकुमारजी	लाडनूं सरदारशहर	संत ४	गुवाहाटी
२.	मुनिश्री प्रशान्तकुमारजी	उदासर	संत २	सिलचर

११. कर्नाटक प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ८ : संत ६, सतियां १९

१.	मुनिश्री पुलकितकुमारजी	लोणार	संत २	गांधीनगर, बैंगलुरु
२.	मुनिश्री विनीतकुमारजी	पचपदरा	संत २	हुबली
३.	मुनिश्री आकाशकुमारजी	कटक	संत २	गंगावती
४.	साध्वीश्री पावनप्रभाजी	श्रीडूंगरगढ़	सतियां ४	के.जी.एफ.
५.	साध्वीश्री संयमलताजी	बाड़मेर	सतियां ४	विजयनगर, बैंगलुरु
६.	साध्वीश्री पुण्ययशाजी	बीदासर	सतियां ४	राजाराजेश्वरी, बैंगलुरु
७.	साध्वीश्री सोमयशाजी	गंगाशहर	सतियां ३	यशवंतपुर, बैंगलुरु
८.	साध्वीश्री सिद्धप्रभाजी	रामसिंहजी का गुड़ा	सतियां ४	मैसूरु

१२. तमिलनाडु प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास ५ : संत ९, सतियां ४

१.	मुनिश्री मोहजीतकुमारजी	राजगढ़	संत ३	किलपॉक, चेन्नई
२.	मुनिश्री हिमांशुकुमारजी	असाढ़ा	संत २	मदुरै
३.	*मुनिश्री रश्मिकुमारजी	गंगाशहर	संत २	गुड़ियातम
४.	मुनिश्री दीपकुमारजी	राजगढ़	संत २	पल्लावरम
५.	साध्वीश्री उदितयशाजी	जसोल	सतियां ४	साहूकारपेट, चेन्नई

१३. तेलंगाना प्रान्त : चातुर्मासिक प्रवास १ : सतियां ४

१.	*साध्वीश्री गवेषणाश्रीजी	समदड़ी	सतियां ४	सिकंदराबाद-हैदराबाद

नोट : १. जिन नामों के आगे * चिह्न लगा है, वर्तमान में वे अग्रणी नहीं हैं, मात्र व्यवस्थापक हैं।
२. कुछ चारित्रात्माएं वर्तमान में चिकित्सा आदि के संदर्भ में निर्धारित चतुर्मास क्षेत्र से अन्यत्र हैं।

भारत के १३ प्रान्तों में चातुर्मासिक प्रवास १२६, संत सिंघाड़े ३८, सतियों के सिंघाड़े ८८, संत १५०, सतियां ५६६, कुल ७१६

समणश्रेणी

भारत प्रवास १०, समणी ३८

गुजरात

१.	समणी निर्मलप्रज्ञाजी	बाव	समणी ४	प्रे. वि. भा., गांधीनगर

राजस्थान

१.	समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी	भीनासर	समणी १७	जैन विश्व भारती, लाडनूं
२.	समणी कांतिप्रज्ञाजी	कालू	समणी १	देवगढ़ (साध्वीश्री प्रसन्नयशाजी के साथ)

बिहार

१.	समणी भावितप्रज्ञाजी समणी संघप्रज्ञाजी	समदड़ी चाड़वास	समणी ३	किशनगंज

उड़ीसा

१.	समणी निर्वाणप्रज्ञाजी	झाबुआ	समणी २	कटक
२.	समणी ज्योतिप्रज्ञाजी	नोहर	समणी २	केसिंगा

हरियाणा

१.	समणी जयंतप्रज्ञाजी	गंगाशहर	समणी २	टोहाना

छत्तीसगढ़

१.	समणी कमलप्रज्ञाजी	टिटिलागढ़	समणी ३	रायपुर

आन्ध्र प्रदेश

१.	समणी जिनप्रज्ञाजी	सरदारशहर	समणी २	विशाखापट्टनम्

पंजाब

१.	समणी संचितप्रज्ञाजी	बालोतरा	समणी २	जगराओ

विदेश प्रवास ६, समणी १२

१.	समणी चैतन्यप्रज्ञाजी	झाबुआ	समणी २	ओरलेण्डो
२.	समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी	टमकोर	समणी २	मियामी
३.	समणी मलयप्रज्ञाजी	टिटिलागढ़	समणी २	लंदन
४.	समणी विपुलप्रज्ञाजी	समदड़ी	समणी २	काठमाण्डो
५.	समणी समत्वप्रज्ञाजी	गंगाशहर	समणी २	न्यूजर्सी
६.	समणी आर्जवप्रज्ञाजी	जसोल	समणी २	ह्युस्टन

कुल समणी ५०

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

महामना आचार्यश्री भिक्षु

तेरापथ गणिराज की, जन्म त्रि सदी आगाज,
निज भावों से अर्चना, करें प्रभु की आज।
भिक्षु को जानें सभी, पहचानें-मानें,
रचना से अर्पण करें, अंतर्मन आवाज।।

भिक्षु चेतना वर्ष पर आचार्य श्री भिक्षु के दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने का अनुपम अवसर

- आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दी के इस ऐतिहासिक अवसर पर आपको आमंत्रण है – अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से तेरापंथ टाइम्स के विशेष अंकों का हिस्सा बनने का।
- आप अपनी मौलिक रचना हमें प्रेषित कर सकते हैं, जो लेख, गीत, कविता या अन्य किसी साहित्यिक विधा में हो सकती है।

रचना हेतु नियम

1. प्रत्येक रचनाकार से केवल एक रचना ही स्वीकार की जाएगी।
2. रचना का आधार आचार्य भिक्षु एवं उनका दर्शन हो।
3. लेख की अधिकतम सीमा लगभग 750 शब्दों तक सीमित हो।
4. गीत/कविता अधिकतम 5 पद्य अथवा 15 पंक्तियों तक ही सीमित रहें।
5. प्राप्त रचनाओं का प्रकाशन भिक्षु चेतना वर्ष के दौरान कभी भी किया जा सकता है।
6. रचना के प्रकाशन का अंतिम निर्णय तेरापंथ टाइम्स संपादक मंडल का होगा।
7. रचना भेजने की अंतिम दिनांक- 31 अगस्त, 2025

रचना भेजने का माध्यम

ईमेल करें : abtyptt@gmail.com या
वॉट्सएप्प करें : +91 89059 95002

अहिंसा रैली के साथ चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

जसोल।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी रतिप्रभा जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश अहिंसा रैली के साथ हुआ।

साध्वीश्री के प्रवेश पर तेरापंथ सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल व अणुव्रत समिति की ओर से स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। रैली बस स्टैंड रोड, अणुव्रत द्वार से रवाना होकर शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए पुराना ओसवाल भवन, जसोल पहुँची, जहां स्वागत कार्यक्रम आयोजित हुआ।

कार्यक्रम में संबोधित करते हुए साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि नगर में साधु-संतों के आगमन से मन रूपी बसंत खिलता है। साधु-संत धरती के कल्पवृक्ष हैं, चिंतामणि रत्न के समान हैं। साध्वीश्री ने कहा कि विश्वकल्याण की सोच के साथ प्रेम, मैत्री, करुणा व अहिंसा का पथदर्शन साधु-संतों के सौभाग्य से ही मिलता है।

साध्वी कलाप्रभा जी ने 'मंगल प्रवेश' शब्द की व्याख्या करते हुए ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की विशेष आराधना के लिए आह्वान किया। साध्वी मनोज्ञयशा जी व साध्वी पावनयशा जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

स्वागत भाषण में तेरापंथ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी, ज्ञानशाला प्रभारी डूंगरचंद सालेचा, पारमार्थिक शिक्षण संस्थान लाडनूं संयोजक मोतीलाल जीरावला, अणुव्रत समिति मंत्री सफरु खान, महेंद्र तातेड़, प्रवीण भंसाली, सतीश भंसाली, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष कंचनदेवी ढ़ेलडिया, पुष्पादेवी बुरड़ सहित अनेक वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल व तातेड़ परिवार की महिलाओं द्वारा अलग-अलग सामूहिक गीतिकाओं का संगान किया गया।

रैली से पूर्व अणुव्रत समिति जसोल द्वारा अणुव्रत द्वार के प्रायोजक सुरेश कुमार भंसाली सुपुत्र स्व. डूंगरचंद भंसाली का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन कान्तिलाल ढ़ेलडिया ने किया।

नवमनोनीत टीम का दायित्व ग्रहण समारोह

विजयनगर, बेंगलुरु।

हम्पी नगर स्थित महावीर, गौतम टेबा के निवास स्थान पर साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में तेयुप विजयनगर की सत्र 2025-26 की टीम का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से विधिवत संपन्न हुआ। संस्कारक राकेश दूधोड़िया, अभिषेक कावड़िया, भंवरलाल मांडोत, श्रेयांस गोलछा, धीरज भादानी, आशीष सिंघी एवं बसंत डागा ने जैन संस्कार विधि से शपथ विधि संपन्न करवाई। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप उपाध्यक्ष प्रथम पवन मांडोत ने किया। विजय गीत का संगान विजय स्वर संगम टीम द्वारा प्रस्तुत किया गया।

निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा ने नवनियुक्त अध्यक्ष विकास बांठिया को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। तत्पश्चात नव मनोनीत अध्यक्ष विकास बांठिया ने अपने प्रबंध मंडल एवं कार्यसमिति की घोषणा करते हुए उन्हें पद की शपथ दिलाई, जिसमें उपाध्यक्ष प्रथम प्रदीप बाबेल, उपाध्यक्ष द्वितीय पवन बैद, मंत्री योगेश पोरवाड़, सहमंत्री प्रथम अमित नाहटा, सहमंत्री द्वितीय मनीष चावत, कोषाध्यक्ष करण मांडोत, संगठन मंत्री पीयूष ललवानी सम्मिलित रहे। अध्यक्ष विकास बांठिया ने गुरु इंगित की आराधना करते हुए अभातेयुप द्वारा निर्देशित हर आयाम को समर्पणपूर्वक संपादित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

साध्वी संयमलता जी ने युवाओं को प्रेरणा देते हुए कहा कि वे साथ मिलकर कार्य करें, हर छोटे प्रयास को भी महत्व दें और निरंतर आगे बढ़ते रहें। इस अवसर पर अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन मांडोत, युवा गौरव विमल कटारिया, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, अणुविभा संगठन मंत्री राजेश चावत, सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, महिला मंडल कार्यकारी अध्यक्षा मंजू गादिया, नवनिर्वाचित अध्यक्षा महिमा पटावरी, टीपीएफ से विक्रम कोठारी, तेयुप विजयनगर प्रभारी रोहित कोठारी एवं महेंद्र टेबा ने शुभकामनाएं प्रेषित कीं। इस अवसर पर टीपीएफ वेस्ट अध्यक्ष ललित बैगानी एवं स्थानीय संस्थाओं के सभा, युवक परिषद एवं महिला मंडल के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन संजय भटेवरा ने किया।

मर्यादा रैली के साथ चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

राजराजेश्वरी नगर।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशा जी ठाणा-4 ने राजराजेश्वरी नगर के तेरापंथ भवन में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश किया। मेहंदीपुर बालाजी मंदिर से विहार कर 'मर्यादा रैली' के साथ मधुर संगान एवं जयकारों की ध्वनि के बीच साध्वीश्री का मंगल प्रवेश हुआ। जुलूस में श्रावक समाज के साथ-साथ ज्ञानशाला के बच्चों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि मुझे विशेष प्रसन्नता है कि गुरुदेव के निर्देशानुसार आज हमने राजराजेश्वरी नगर के भवन में चातुर्मास के लिए प्रवेश किया है। हमारे जीवन की सफलता का रहस्य है गुरुकृपा। गुरु का नाम स्मरण कर जो कार्य किया जाता है, उस कार्य में गुरु की शक्ति का नियोजन हो जाता है और वह कार्य शीघ्रातिशीघ्र संपन्न होकर सफलता देने वाला होता है। गुरु अयोग्य को योग्य, कौड़ी को हीरा, पापी को पुनीत बनाते हैं। गुरु की महिमा बताते हुए साध्वीश्री जी ने कहा कि चातुर्मास में तप, जप, स्वाध्याय की श्रीवृद्धि हो, खूब धर्माराधना हो, यह चातुर्मास ऐतिहासिक और उपलब्धि भरा हो। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने संपूर्ण समाज की ओर से साध्वीवृंद का श्रद्धासिक्त स्वागत किया। ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, तेयुप अध्यक्ष विक्रम महेर, महिला मंडल अध्यक्ष मंजु बोथरा एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारीगण ने साध्वीश्री का स्वागत किया।

(शेष पेज 14 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025

आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

गुवाहाटी।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ. मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ठाणा-2 और मुनि रमेश कुमार जी ठाणा-2 का आध्यात्मिक मिलन समारोह तरुणनगर में तोलाराम रितेश खटेड़ के यहां आयोजित हुआ।

इस अवसर पर डॉ. मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा - गुरुदेव के आदेशानुसार हम चातुर्मास के क्षेत्र में पहुंच गए हैं।

आज हम दोनों संतों का मिलन भी हो गया है। मुनि रमेश कुमार और मैं बचपन के साथी हैं। गुवाहाटी, पूर्वोत्तर भारत का तेरापंथ समाज का बड़ा क्षेत्र है। उन्होंने आगे कहा - पूरा मारवाड़ी समाज मिलकर समाज सुधार की दिशा में कार्य करे।

मुनि रमेश कुमार जी ने कहा - मुनि ज्ञानेंद्र हमारे संघ के वरिष्ठ संत हैं। आपके जीवन की अनेक विशेषताएं हैं। इस अवसर पर मुनि पद्म कुमार जी, मुनि रत्न कुमार जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इससे पूर्व डॉ. मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी के द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा ने समाज की ओर से संतों एवं अतिथियों का स्वागत किया।

तेरापंथी सभा की ओर से अतिथियों का साहित्य और स्वागत पट्टिका भेंटकर सम्मान किया गया।

आध्यात्मिक संत मिलन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पार्षद रत्ना सिंह, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष कैलाश काबरा, निवर्तमान अध्यक्ष पंकज जालान आदि अतिथियों ने भी इस अवसर पर अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष बसंत कुमार सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष सतीश कुमार भादानी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष पंकज भूरा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बजरंग बैद, आचार्य तुलसी महाश्रमण रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष विजयराज डोसी आदि वक्ताओं ने परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

दिलीप दुगड़ ने चारों संतों का परिचय दिया। खटेड़ - सेठिया परिवार की बहनों ने सामूहिक स्वागत गीत प्रस्तुत किया। रितेश खटेड़ ने संतों का स्वागत करते हुए अपने भावों की प्रस्तुति दी एवं जेठमल रामपुरिया ने स्वरचित कविता से संतों का स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के पूर्व मंत्री अशोक सेठिया ने कुशलता पूर्वक किया। तेरापंथी सभा के मंत्री राजकुमार बैद ने आभार ज्ञापन किया।

शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

विजयनगर।

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल का शपथ ग्रहण समारोह उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण के साथ हुई, जिसके पश्चात निवर्तमान अध्यक्ष मंजू गादिया ने वर्ष 2025-27 के लिए नवमनोनीत अध्यक्ष महिमा पटावरी को शपथ दिलाई। इसके बाद महिमा पटावरी ने प्रबंध मंडल, परामर्शक मंडल एवं नवीन कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए सभी सदस्यों को उत्साहपूर्वक शपथ दिलाई।

नवगठित टीम में उपाध्यक्ष के रूप में सुमित्रा बरड़िया और सुनीता पटावरी, मंत्री सरिता जैन, कोषाध्यक्ष मंजू भंसाली, सहमंत्री हंसा दुगड़, प्रचार-प्रसार मंत्री अनीता जीरावाला तथा संगठन मंत्री के रूप में शिल्पा भंसाली ने अपने-अपने पदभार ग्रहण करते हुए शपथ ली। कन्या मंडल प्रभारी खुशी कोठारी एवं संयोजिका सह-संयोजिका खुशी मांडोत ने भी शपथ ग्रहण की।

इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व महामंत्री वीणा बैद, सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, युवक परिषद अध्यक्ष विकास बांठिया, वरिष्ठ श्रावक मनोहरलाल बाबेल, पूर्व अध्यक्ष प्रेम भंसाली, ज्ञानशाला संयोजिका ममता मांडोत एवं संघ संवाद से जितेंद्र घोषल ने नवगठित टीम को शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

प्रथम सत्र का संचालन सुमित्रा बरड़िया एवं द्वितीय सत्र का कुशल संचालन अंजू सेठिया ने किया। कार्यक्रम के अंत में आभार ज्ञापन बरखा पुगलिया ने किया।

पृष्ठ 13 का शेष

मर्यादा रैली के साथ...

अध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने साध्वियों के चातुर्मास हेतु गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आज के दिन को सौभाग्यशाली बताया तथा समग्र श्रावक समाज से अधिक से अधिक आध्यात्मिक लाभ उठाने का आह्वान किया। सभा, तेयुप, तेममं ने आध्यात्मिक भेंट से सजे हुए स्वागत गीत द्वारा साध्वीवृंद का भावभीना स्वागत किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने मनभावन प्रस्तुति दी।

महासभा से प्रकाश लोढ़ा, पूर्व महासभा अध्यक्ष हीरालाल मालू, बहादुर सेठिया, कंचन छाजेड़, लता बाफना, कमल दूगड़, मधु कटारिया, तेरापंथ सभा गांधीनगर से पारसमल भंसाली, हनुमन्तनगर से मंजू दक, यशवंतपुर से सुरेश बरड़िया, राजाजीनगर से अशोक चौधरी, अनिल दक, टी. दासरहल्ली से भगवतीलाल मांडोत ने चातुर्मासिक प्रवेश की शुभकामनाएं प्रेषित कीं। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री गुलाब बाँठिया ने किया।

विकास के लिए आवश्यक होता है परिवर्तन

सूरत।

तेरापंथ महिला मंडल सूरत का शपथ विधि समारोह डॉ. प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अनिल चंडालिया के निवास स्थान पर आयोजित किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से समारोह की शुरुआत हुई।

साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा - विकास और परिवर्तन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। विकास के लिए परिवर्तन आवश्यक है। सुचिंतित परिवर्तन से ही विकास संभव है। संगठन के सदस्यों को मृदुभाषी, चरित्रवान और व्यवहार कुशल होना चाहिए। आज के मैनेजमेंट के नए युग में नई सोच जोड़नी चाहिए। होश और जोश दोनों ही विकास के चरणों को आगे गतिमान करने के लिए आवश्यक हैं। आलोचना से घबराना नहीं चाहिए, समालोचना पर ध्यान देना चाहिए। सफलता के लिए हमें मिलकर काम करना है। हमें आकाश से ऊंचा संघ का नाम करना है।

साध्वी सुदर्शन प्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा - आज महिला मंडल के लिए त्यौहार का दिन है। साध्वीश्री के सान्निध्य में यह त्यौहार मनाने का मौका मिला, यह आपका सौभाग्य है। यह कार्यकाल नई रेखाएं खींचे और नए सृजन करें।

नई टीम के निर्वाचन के अवसर पर साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी अतुलयशा जी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी, साध्वी शौर्यप्रभाजी ने मधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रतीक्षा बोथरा ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि हमें देव, गुरु, धर्म के प्रति समर्पित रहना है। गुरु इंगित को समझ कर संघ सेवा की दिशा में आगे कार्य करना है। उन्होंने अपनी नई टीम की घोषणा की। निवर्तमान अध्यक्ष चंदा भोगर ने नवनिर्वाचित टीम को शपथ दिलवाई। अभातेममं की ट्रस्टी कनक बरमेचा ने शुभकामनाएं देते हुए कहा, ऊर्जा का गोपन न करते हुए नए कीर्तिमान बनाएं। सभा अध्यक्ष हजारीमल भोगर ने कहा - ट्रस्ट बोर्ड और सभा हमेशा आपके साथ हैं।

तेयुप अध्यक्ष नमन मेडतवाल ने भी शुभकामनाएं प्रेषित कीं। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल सूरत की बहनों द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन मंत्री बिंदु भंसाली ने किया। मंच का संचालन मनीषा सेठिया द्वारा किया गया।

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है। माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां आत्मशुद्धि है, विश्वास भी है।

❖ श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा।

— आचार्य श्री महाश्रमण

अणुव्रत वाटिका एवं अणुव्रत मार्ग का लोकार्पण

नवी मुंबई।

अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा विभिन्न जनोपयोगी कार्य किए जाते हैं। इसी के अंतर्गत नवी मुंबई महानगर शाला क्रमांक 79, दीघा साठे नगर में 6 टेबल दिए गए। शाला क्रमांक 15, शिवरणे में माइक स्टेरियो सेट प्रदान किया गया। शाला क्रमांक 41 में हैंडवाश स्टेशन एवं पत्रे का शेड बनाया गया तथा अणुव्रत वाटिका का निर्माण किया गया।

नेरुल में अणुव्रत मार्ग बनाया गया जिसका उद्घाटन अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप दूगड़ के द्वारा हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने विद्यार्थियों को अणुव्रत के बारे में जानकारी देते हुए उन्हें विद्यार्थी अणुव्रत के संकल्प भी करवाए।

इस अवसर पर पूर्व नगर सेवक एवं शिक्षण समिति अध्यक्ष कल्याण मित्र अर्जुन सिंघवी, पूर्व नवी मुंबई भाजपा अध्यक्ष दिनेश पारख, मुंबई अणुव्रत समिति अध्यक्ष रोशन मेहता ने भी अपने विचार रखे। शाला क्रमांक 79 की प्रिंसिपल लीला चौहान एवं शाला क्रमांक 41 के प्रिंसिपल आकाराम पाखरे एवं वाइस प्रिंसिपल भिकाजी सावंत ने सभी का स्वागत किया तथा अणुव्रत समिति मुंबई का बहुत-बहुत आभार ज्ञापित किया। विद्यालय में जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम प्रारंभ करने का भी आश्वासन दिया गया। उपस्थित विद्यार्थियों द्वारा अणुव्रत गीत की सुंदर प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर अणुविभा के उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, महामंत्री मनोज सिंघवी के साथ पदाधिकारी एवं विभिन्न प्रभारियों की उपस्थिति रही।

स्पोर्ट्स ब्लॉक का हुआ भव्य उद्घाटन

चेन्नई।

तेरापंथ एजुकेशनल एंड मेडिकल ट्रस्ट द्वारा साहुकारपेट में संचालित तेरापंथ जैन विद्यालय के संलग्न हीरावत स्पोर्ट्स ब्लॉक का उद्घाटन समारोह साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। ट्रस्ट अध्यक्ष गौतम बोहरा ने बताया कि करीब 3000 वर्ग फुट के इस खेल भवन में बैडमिंटन, पिकल बॉल, टेबल टेनिस आदि की अच्छी व्यवस्था की गई है। साथ ही नीचे बड़ा बोर्ड मीटिंग रूम और पार्किंग की सुविधा उपलब्ध है। महामंत्री रेखा धोका ने प्रोजेक्ट की संपूर्ण रिपोर्ट एवं ट्रस्ट की अन्य गतिविधियों की जानकारी दी। स्पोर्ट्स ब्लॉक निर्माण में संपूर्ण सहयोगी रतननगर-बेंगलुरू-चेन्नई के हीरावत परिवार के सभी सदस्यों का सम्मान किया गया। साध्वीश्री ने श्री पैंसठिया यंत्र का भव्य आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाया और सभी को मंत्र की शक्ति पहचान कर अपने आध्यात्मिक जीवन को उज्जवल बनाने की बात कही। मैनेजिंग ट्रस्टी मेघराज लुणावत ने भवन निर्माण कार्य में सहयोगी नमन आंचलिया, गौतम धारीवाल एवं सभी मुख्य कर्मचारियों का भी सम्मान किया। हीरावत परिवार से कमलसिंह, राजेन्द्रकुमार, हरिसिंह, विकास हीरावत ने अपने भाव व्यक्त किये। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभाध्यक्ष अशोक खतंग ने सभी संघीय संस्थाओं की ओर से शुभकामनाओं के विचार व्यक्त किए। श्री जैन महासंघ अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया, अमृतवाणी अध्यक्ष ललित दुगड़, स्थानीय सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्य लोगों की सराहनी उपस्थिति रही। संचालन सहसचिव कमलेश नाहर ने किया एवं संवाददाता महावीर गेलडा के संग महेंद्र आंचलिया ने आभार ज्ञापन दिया।

चातुर्मास में धर्म आराधना का महत्व

बीकानेर।

तेरापंथ भवन (तुलसी साधना केंद्र) में 'शासनश्री' साध्वी मंजुप्रभाजी और 'शासनश्री' साध्वी कुन्थुश्रीजी ने चातुर्मास स्थापना के अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं को धर्म आराधना के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि चातुर्मास का समय अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

यह तप, त्याग, धर्म ध्यान, स्वाध्याय और जप जैसे धार्मिक अनुष्ठानों के लिए विशेष काल है। उन्होंने श्रद्धालुओं को प्रतिदिन प्रवचन सुनने, भगवान की वाणी पर चिंतन-मनन करने और आध्यात्मिक साहित्य का पठन-पाठन करने और करवाने को चातुर्मास काल के प्रमुख उपक्रम बताया। साध्वीश्री ने सभी से जागरूक होकर धर्म आराधना करने का आह्वान किया।

'शासनश्री' साध्वी कुन्थुश्रीजी ने तपस्या के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि चातुर्मास काल तपस्या के लिए बहुत साताकारी समय होता है।

उन्होंने कहा कि जो लंबी तपस्याएं नहीं कर सकते, वे नवकारसी, आयम्बिल, प्रहर, एकासन आदि जैसी छोटी-छोटी तपस्याएं कर स्वयं को लाभान्वित करें। साध्वीश्री ने कहा कि तपस्या से संचित कर्मों का क्षय होता है और यह मुक्ति के मार्ग का एक महत्वपूर्ण साधन है।

मुनिश्री रवीन्द्रकुमार जी की स्मृति सभा आयोजित

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में 'शासनश्री' मुनि रवीन्द्रकुमार जी की स्मृति सभा आयोजित की गयी। इस अवसर पर मुनिश्री ने उन्हें आत्मार्थी संत बताते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुनिश्री ने कहा कि मुनि रवीन्द्रकुमार जी ने गुरुदेव तुलसी के कर कमलों से केलवा में 'शासनमाता' साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के साथ दीक्षा ग्रहण की थी। उन्होंने अनेक संतों की सेवाएं करते हुए, सुंदर प्रांतों की यात्रा के माध्यम से धर्मसंघ का सुयश बढ़ाया। वे विद्वान वक्ता, साधक और गुरु-भक्त संत थे, जिन्हें तीन-तीन आचार्यों की कृपा प्राप्त हुई।

उन्होंने कहा कि हाल के वर्षों में मुनिश्री अस्वस्थ चल रहे थे, जिनकी सेवा मुनि अतुल कुमार जी ने अत्यंत श्रद्धाभाव से की। जहां-जहां उनका प्रवास हुआ, वहां लोगों में अध्यात्म के प्रति गहरी भावना का जागरण हुआ। मुनिश्री ने दोहों के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुनि श्रेयांस कुमार जी ने भी मुनिश्री के जीवन को साधना से ओतप्रोत बताते हुए कहा कि उन्होंने धर्मसंघ की महिमा-गरिमा बढ़ाने का सतत प्रयास किया और उन्हें सर्वत्र सफलता प्राप्त हुई।

सभा के अंत में चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

मंगल प्रवेश पर स्वागत समारोह कार्यक्रम का आयोजन

हैदराबाद।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी गवेषणाश्रीजी आदि ठाणा-4 ने तीर्थ शान्ति अपार्टमेंट में नोरतनमल शान्तिलाल आनन्द नौलखा के निवास स्थान से रैली के रूप में विहार कर तेरापंथ भवन, डी वी कॉलोनी, सिकंदराबाद में सन् 2025 के चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश किया। इस अवसर पर जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसायटी के चेयरमैन महेन्द्र भंडारी, मैनेजिंग ट्रस्टी मनोज दुगड़, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुशील संचेती एवं सभी संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री, पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण के रूप में सभा के सदस्यों द्वारा हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल की अध्यक्ष कविता आच्छा, महिला मंडल की नव मनोनीत अध्यक्ष नमिता सिंघी, महिला मंडल की मंत्री सुशीला मोदी, तेलंगाना सरकार माइनॉरिटी कमीशन के सदस्य हिमांशु बापना, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अभिनन्दन नाहटा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के मंत्री निखिल कोटेचा, अणुव्रत समिति के नव नियुक्त अध्यक्ष राजेन्द्र बोथरा, जैन तेरापंथ वेलफेयर सोसायटी के चेयरमैन महेन्द्र भंडारी, श्री जैन सेवा संघ के उपाध्यक्ष विनोद संचेती, तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने साध्वीश्री के मंगल प्रवेश के अवसर पर अपनी मंगल भावनाएं प्रेषित कीं।

संपत नौलखा, लक्ष्मीपत डूंगरवाल, चांद बैद, राजकुमार सुराणा, सुरेश रांका (चेन्नई), कविता बांठिया ने भी साध्वीश्री जी के प्रति आगामी चातुर्मास के लिए मंगलकामनाएं प्रेषित कीं। महिला मंडल एवं ज्ञानशाला की बहनों द्वारा इस अवसर पर स्वागत के रूप में गीतिकाओं की सुंदर प्रस्तुति हुई। मुमुक्षु वीनू संकलेचा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी मेरुप्रभाजी एवं साध्वी दक्षप्रभाजी ने मधुर स्वरों में गीतिका से अपने भाव व्यक्त किए। साध्वी मयंकप्रभा जी ने सारगर्भित वक्तव्य दिया एवं आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए चातुर्मास के दौरान ज्यादा से ज्यादा जप, तप एवं जिनवाणी श्रवण का लाभ उठाने का आह्वान किया एवं चातुर्मास में होने वाले करणीय कार्यों की जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम के संयोजक निर्मल बेंगानी एवं साथी सदस्यों का इस कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष सहयोग एवं श्रम रहा। इसी क्रम में खुशाल भंसाली, राजेन्द्र बोथरा का सहयोग भी सराहनीय रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन राकेश सुराणा एवं लक्ष्मीपत बैद ने किया। अंत में आभार ज्ञापन मंत्री हेमंत संचेती ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं परामर्श शिविर का हुआ आयोजन

चेन्नई।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चेन्नई द्वारा 75 स्वर्णिम वर्ष - अमृत जयंती वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में विशाल निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं परामर्श शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन, साहूकारपेट में समायोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण के पश्चात विशेष अतिथि पार्षद राजेश जैन रंगीला, जैन महासंघ अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया आदि गणमान्य व्यक्तित्व ने फीता खोलकर शिविर का शुभारम्भ किया।

शिविर में लगभग 180 व्यक्तियों ने स्वास्थ्य जांच, विशेषज्ञों की सलाह और निःशुल्क चश्मों का लाभ उठाया। अध्यक्ष अशोक खतंग ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। इस शिविर में शुगर टेस्ट, मधुमेह नियंत्रण, हड्डियों की मजबूती, ईसीजी, हृदय, मस्तिष्क व गला कैंसर स्क्रीनिंग, न्यूरोपैथी, नेत्र, दंत, ईएनटी, त्वचा आदि की निःशुल्क जांचें की गई। शिविर में समाज के विभिन्न विशेषज्ञ चिकित्सकों ने उदारमना भाव से निःशुल्क सेवाएँ प्रदान की।

शिविर की संयोजना में संयोजक अशोक आई बोहरा के साथ डॉ. कमलेश नाहर, डॉ. सुरेश सकलेचा, संजय भंसाली एवं टीम का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

अध्यक्ष अशोक खतंग और पदाधिकारीयों ने अतिथिगणों, डाक्टर्स, नर्सिंग टीम का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ पुलिस, एलीफेंटगेट के साथ तेरापंथ संघीय संस्थाओं के कार्यकर्तागण उपस्थित थे।

सम्मान समारोह हुआ आयोजित

गंगाशहर।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी एवं मुनि श्रेयांसकुमार जी के सान्निध्य में आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तत्त्वज्ञान एवं तत्त्वविज्ञ परीक्षार्थियों, विहार सेवा करने वाली बहनों तथा निबंध प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मुनि कमलकुमार जी ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि तत्त्वज्ञान अर्जित करना बड़ी बात नहीं है, बल्कि बड़ी बात यह है कि उसे सीखकर दूसरों को सिखाया जाए और स्वयं अपने जीवन में धारण किया जाए।

मुनिश्री ने कहा कि हमें आचार्य तुलसी के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए, जिन्होंने हमारे धर्मसंघ में साध्वियों तथा बहनों को शिक्षित करने का बीड़ा उठाया, और आज जो दृश्य हम देख रहे हैं, वह उन्हीं के परिश्रम का फल है।

अध्यक्षा संजू लालानी ने सभी का स्वागत किया तथा अपने तत्त्वज्ञान से जुड़ने के नौ वर्षों का अनुभव साझा किया। प्रदीप ललवानी और रेखा चोरड़िया ने भी अपने अनुभव साझा किए और सभी से निवेदन किया कि अपने जीवन में कुछ समय स्वाध्याय के लिए नियोजित करें।

तत्त्वज्ञान प्रभारी चंचल चोरड़िया ने बताया कि गत वर्ष रेखा चोरड़िया ने तत्त्वज्ञान भाग 2 में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम स्थान तथा प्रदीप ललवानी एवं विनीता नाहटा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, जो गंगाशहर के लिए गौरव की बात है।

तत्त्वविज्ञ बनने वाली दो बहनों — रक्षा बोथरा और शारदा छाजेड़ — का अभिनंदन भी तेरापंथ महिला मंडल द्वारा किया गया। तत्त्वज्ञान परीक्षा में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया।

इसी क्रम में 'पानी या हमारा जीवन पानी-पानी' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में सुप्रिया राखेचा, रेखा चोरड़िया एवं कमलेश सामसुखा ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन सभी को तथा प्रतियोगिता में भाग लेने वाली अन्य प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया।

वर्षों से विहार सेवा में अपना श्रम व समय नियोजित करने वाली बहनों — आशा देवी बैद, शायर देवी पुगलिया, कांता देवी बोथरा, बरजी देवी चोपड़ा, मंजू देवी, किरण देवी आंचलिया आदि — का भी सम्मान किया गया।

शायर देवी पुगलिया ने इस अवसर पर अपने विचार भी व्यक्त किए। कार्यक्रम का सफल संचालन तेरापंथ महिला मंडल मंत्री मीनाक्षी आंचलिया द्वारा किया गया।

आत्मकल्याण के लिए निकालें समय

गुवाहाटी।

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ. मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि रमेश कुमार जी आदि का तेरापंथ धर्मस्थल में भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर आयोजित स्वागत समारोह को संबोधित करते हुए मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि संतों का आगमन आह्लादकारी होता है। तप-जप कर्म निर्जरा का उत्तम साधन है।

मुनिश्री ने 'घर-घर तेला, हर-घर तेला' अभियान के तहत सभी श्रावक-श्राविकाओं को तेला करने की विशेष प्रेरणा दी।

उन्होंने कहा कि हर मनुष्य को अपने धार्मिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए अपने आत्मकल्याण के लिए समय अवश्य निकालना चाहिए।

मुनि रमेश कुमार जी ने कहा कि हम आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने के लिए यहां आए हैं। आप ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना के लिए अपना समय नियोजित करें एवं ज्ञान का विकास करें। मुनि पद्म कुमार जी एवं मुनि रत्न कुमार जी ने कहा कि संत मानव का हर प्रकार से कल्याण करते हैं। संतों का बहुत बड़ा महत्व होता है। उनके जीवन से चरित्रों की सुगंध आती है। हम गुरु से ऑक्सीजन एवं शक्ति प्राप्त कर अपने जीवन को संवार सकते हैं।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल जी सुराणा ने मुनिवृंद का स्वागत-अभिनंदन करते हुए श्रावक-श्राविकाओं एवं सभी समाजबंधुओं से चातुर्मास काल में अधिकाधिक धर्मलाभ लेने का आह्वान किया।

मुनिवृंद का परिचय सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन जम्मड़ एवं रायचंद पटावरी ने दिया। सूचनाओं की घोषणा सभा के वरिष्ठ सहमंत्री राकेश जैन ने की।

महिला मंडल की सदस्याओं द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से आरंभ स्वागत समारोह में तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष अमराव देवी बोथरा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष सतीश कुमार भादानी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष पंकज भूरा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बजरंग बैद, पूर्वोत्तर भारत स्तरीय श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा व महामंत्री जीवनमल सुराणा (नगांव), अर्हम् भजन मंडली, वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ से रूपचंद चौरड़िया, कृतिका घोड़ावत एवं मास्टर वैभव घोड़ावत, डिंपल बोथरा (सिलीगुड़ी), सिलचर सभा के संरक्षक मलूचंद बैद आदि ने अपने वक्तव्य एवं गीतिका के माध्यम से मुनिवृंद का स्वागत-अभिनंदन किया।

मुनिवृंद के संसारपक्षीय खटेड़ परिवार की ओर से रितेश खटेड़ ने प्रस्तुति दी एवं बोरड़ परिवार की ओर से बहनों ने स्वागत गीत प्रस्तुत करते हुए संकल्पों का गुलदस्ता चन्दनमल अशोक बोरड़ ने भेंट किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन कार्यकारिणी सदस्य राजेश जम्मड़ ने किया। आभार ज्ञापन सभा के कोषाध्यक्ष छत्तरसिंह भादानी ने किया।

चातुर्मास में जीवन को बनाएं शुद्ध, सौम्य और सोने के समान

उदयपुर।

आचार्य महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या साध्वी त्रिशलाकुमारी जी ठाणा-5 का चातुर्मासिक प्रवेश बाबूलाल, पंकज गांधी के निवास से महाप्रज्ञ विहार में रैली के रूप में हुआ। महाप्रज्ञ विहार में रैली सभा के रूप में परिवर्तित हो गई। समारोह का शुभारंभ किशोर मंडल के मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ सभा अध्यक्ष कमल नाहटा ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि साध्वीश्री का चातुर्मास हम सबकी आध्यात्मिक चेतना को जगाने वाला हो, ऐसी हमारी मंगल कामना है।

महिला मंडल अध्यक्षा सीमा बाबेल, तेयुप अध्यक्ष अशोक चौरडिया, टीपीएफ अध्यक्ष राजेंद्र चंडालिया, अणुव्रत समिति अध्यक्षा प्रणिता तलेसरा ने साध्वीवृंद का स्वागत करते हुए प्रवास को सफल बनाने का संकल्प व्यक्त किया। तेयुप और महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत ने पूरे परिसर में समा बांध दिया।

साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि रामभक्त हनुमान के लिए वही हार मूल्यवान हो सकता है जिसमें राम हों। तेरापंथ धर्मसंघ भी एक बहुमूल्य हार है। इस धर्मसंघ में उस व्यक्ति का महत्व है जो गुरु दृष्टि की आराधना करता है। हम भी गुरु दृष्टि की आराधना करते हुए गुरु इंगित के अनुसार उदयपुर में आए हैं। उदयपुर हरा-भरा क्षेत्र है, हमने अनुभव किया कि यहां के लोग श्रद्धा-भक्ति से भी हरे-भरे हैं। अब पंचधारा की साधना-आराधना से जीवन को शुद्ध, सौम्य और सोने के समान बनाना है। चातुर्मास में अंतर यात्रा कर जीवन को नव आलोक से भरना है।

साध्वी कल्पयशाजी ने कहा कि यह स्वागत हमारा नहीं, यह स्वागत है अध्यात्म चेतना का, स्वागत है भगवान महावीर के संदेशों का, स्वागत है आचार्य महाश्रमण के संदेशों का। साध्वीवृंद की सामूहिक प्रस्तुति ने पूरी परिषद को भावविभोर कर दिया। मुख्य अतिथि के रूप में देवस्थान विभाग के सहायक आयुक्त जतिन गांधी विशेष रूप से उपस्थित थे।

उन्होंने भी अपने वक्तव्य में चातुर्मास का अधिक से अधिक लाभ उठाने की बात कही। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के मंत्री अभिषेक पोखरना ने किया। तेरापंथ सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष आलोक पगारिया ने आभार व्यक्त किया।

तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष भूपेश खमेसरा ने भी कविता के माध्यम से श्रद्धा-भक्ति व्यक्त की।

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुदेव ने कहा कि जन्म दिवस का महत्व तब बढ़ता है जब जन्म लेने वाले का जीवन साधना और सिद्धांत से जुड़ा हो। उन्होंने कहा कि कंटालिया में आगामी चातुर्मास के पश्चात 13 रात्रियों का प्रवास प्रस्तावित है।

इस अवसर पर आचार्य प्रवर ने स्वरचित गीत का संगान किया — 'सुगुरु को वंदन शत-शत बार, भिक्षु को वंदन शत-शत बार।'

आचार्यश्री के इस वर्ष कार्यक्रमों की रूपरेखा आदि का वर्णन करते हुए कहा— यह वर्ष हम सभी के आध्यात्मिक विकास में सहायक बने। आचार्य भिक्षु की आचार निष्ठा और अनुशासन से प्रेरणा लेते रहें। उनकी बनाई गई मर्यादाएं और व्यवस्थाएं आज भी अखण्ड रूप में चल रही हैं। हम उन मर्यादाओं व व्यवस्थाओं के प्रति जागरूक रहें। यह वर्ष सभी के लिए कल्याणकारी रहे।

मुख्य कार्यक्रम में भारत सरकार के कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। उन्होंने आचार्यश्री महाश्रमणजी को वंदन करते हुए कहा कि वे भारत सरकार की ओर से इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने नैतिक राजनीति और अणुव्रत के विकास के लिए निरंतर प्रयास करने का संकल्प दोहराया।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रेषित शुभकामना संदेश का वाचन मुख्यमुनि श्री महावीरकुमारजी ने किया। तदुपरान्त जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों द्वारा आचार्यश्री भिक्षु की कुछ पुस्तकों का लोकार्पण किया गया, जिन्हें मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने आचार्यश्री के करकमलों में अर्पित किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में 'भिक्षु म्हारे प्रकट्या जी' गीत की प्रस्तुति मुनि ध्रुवकुमारजी एवं मुनि नम्रकुमारजी ने दी।

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने आचार्य भिक्षु के गुणों का प्रभावशाली वर्णन करते हुए कहा - जैन आगमों में बोधि शब्द का उल्लेख मिलता है। सूयगड़ो में भगवन ऋषभ ने अपने पुत्रों को कहा - सम्बोधि को प्राप्त करो। जो व्यक्ति वर्तमान में सम्बोधि को प्राप्त नहीं करता वह अगली गति में भी बोधि को प्राप्त नहीं कर सकता। ठाणं सूत्र में तीन प्रकार की बोधि बताई गयी है --ज्ञान बोधि, दर्शन बोधि और चारित्र बोधि। हम आरोग्य, बोधि और समाधि के उत्तम वर की आकांक्षा करते हैं। बोधि अर्थात आतंरिक चेतना, भीतरी ज्ञान जो व्यक्ति को हिताहित का ज्ञान देती है। आचार्य भिक्षु के पास मति, प्रज्ञा का वैभव था जिसके आधार पर वे आगे बढ़ते रहे।

वे महान योगी, ध्यानी, ज्ञानी, चिंतक, दार्शनिक, प्रवचनकार, कवि, इन्द्रियजयी, परीषहजयी थे और इन सबसे ऊपर महान संत थे। उन्होंने प्रज्ञा के सहारे आगमों का मंथन किया, और उसके आधार पर तत्त्व का नवनीत जनता के समक्ष प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, अहमदाबाद चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष गौतम बाफना, अध्यक्ष अरविंद संचेती, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अनुज पंकजभाई मोदी, मनीष बरड़िया, कंटालिया तेरापंथ समाज की ओर गौतम सेठिया ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। कंटालियावासियों ने इस अवसर पर गीत का संगान किया।

तेरापंथ समाज-अहमदाबाद ने इस अवसर पर गीत का सामूहिक संगान किया। आचार्यश्री के मंगलपाठ के साथ 'आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष' के शुभारम्भ समारोह के प्रथम दिन का कार्यक्रम सुसम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का सफल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

बोलती किताब

आहार और अध्यात्म

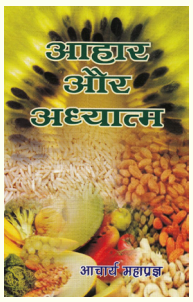

सूर्य की दो अवस्थाएँ हैं । वैसे ही हमारे मन की भी दो अवस्थाएँ हैं । सूर्य की उत्तरायण अवस्था उग्रता, तेजस्विता और दीप्ति की अवस्था होती है और उसकी दक्षिणायन अवस्था मंदता, जड़ता और शिथिलता की अवस्था होती है । इसी प्रकार मन की भी दो अवस्थाएँ होती हैं । एक है तेजस्वी अवस्था और दूसरी है शिथिल या मन्द अवस्था । मन में जब तपस्या करने की वृत्ति जागती है तो यह हमारे मन की उत्तरायण अवस्था है । और जब आलस्य, प्रमाद और नींद की वृत्ति जागती है तो यह हमारे मन की दक्षिणायन अवस्था है । मन का दक्षिणायन है रात और उत्तरायण है दिन । दिन में मन जितना सुप्त रहता है उतना शायद रात में नहीं रहता ।

मनुष्य समाज में जीता है । समाज में जीने का अर्थ है समस्या में जीना । समाज एक समस्या भी है और एक समाधान भी हैं अनेक लोगों का होना एक समस्या है, पर समाधान भी है । प्रत्येक आदमी दो आयामों में जीता है—बाहर में जीता है । और भीतर में जीता है । भूख लगती है भीतर में और खाता है बाहर में । धन, अनाज, पैसा—सब बाहर से आता है, पर माँग होती है भीतर से । एक है माँग का जगत् जो भीतर में है, और दूसरा है पूर्ति का जगत् जो बाहर में है । माँग भीतर से उठती है और उसकी पूर्ति बाहर से होती है । ये दो आयाम हैं । इन दो आयामों में जीने के कारण समस्या और अधिक जटिल बन गई है ।

जब तक इच्छा की प्रेक्षा नहीं की जाती, उस वृत्ति की प्रेक्षा नहीं की जाती, तब तक आर्थिक समस्या का समाधान होना असम्भव है । पता नहीं, मनुष्य की क्या मनोवृत्ति है कि वह एक पक्षीय चिन्तन करता है । आज के अर्थशास्त्री, समाजवादी और राजनयिकों ने कहा—आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन जब तक नहीं होगा, तब तक गरीबी का समाधान नहीं होगा । धार्मिक नेताओं ने बलपूर्वक कहा । कि जब तक धर्म का आचरण नहीं होगा, तब तक समाधान नहीं मिलेगा, आर्थिक समस्या भी नहीं सुलझेगी ।

जीवन का सार क्या है ? यह प्रश्न बहुत बार मन में उभरता है । मनुष्य सदा सार के प्रश्न पर चिन्तन करता रहा है । असार को छोड़ना और सार को उपलब्ध होना, ये दोनों बहुत बड़े कार्य हैं । प्रत्येक कार्य के साथ सार का सम्बन्ध जुड़ा हुआ है । जीवन का सार क्या है ? यह बहुत महत्त्वपूर्ण प्रश्न है । प्रश्न पूछा गया —ज्ञान का सार क्या है ? उत्तर मिला—ज्ञान का सार है आचार । धर्मका सार क्या है ? प्रश्न पूछा गया । उत्तर मिला 'शांति' । जीवन का सार क्या है ? इसका उत्तर होगा—'श्वास' ।जीवन का सार है—स्वास्थ्य । हमारा जीवन है—प्राण ।प्राणी प्राण से जीता है । प्राण उसका जीवन होता है ।प्राण संतुलित होता है, प्राणी स्वस्थ होता है । प्राण असंतुलित होता है, प्राणी अस्वस्थ होता है।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 18 का शेष

किसी भी परिस्थिति....

अहिंसा, संयम और तप से अपने को भावित करते रहें। शास्त्रों को पढ़कर, सुनकर और चिंतन कर धर्म में दृढ़ता लाई जा सकती है।

प्रेक्षा विश्व भारती में कई लोग दो-चार महीने के लिए प्रवास कर रहे हैं और यहाँ अच्छा धार्मिक वातावरण है – साधु, साध्वियां, समणियां हैं। स्वाध्याय, तपस्या, पौषध आदि सहज रूप से हो सकते हैं। यह गुरुकुलवास और चातुर्मास में लाभ लेने का अवसर है।

श्रावकों को साधुओं के माता-पिता के समान कहा गया है। जैसे माता-पिता संतान की चिंता करते हैं, वैसे ही श्रावक साधुओं की चिंता करें। यदि कोई साधु साधना में कमजोर पड़ता दिखाई दे, तो उसे संयम में स्थिर करने का प्रयास करें। कोई छोटा साधु हो और किसी श्रावक के पास ज्ञान हो, तो साधु के ज्ञानवर्धन में सहायता करें। इस प्रकार की सेवाएं करके ही श्रावक माता-पिता के समान हो सकते हैं। किसी साधु से गलती हो जाए और उसे प्रचारित करना शुरू कर दें, तो यह उचित नहीं है। माता-पिता वही होते हैं जो संतान के हित की चिंता करें। इसी तरह श्रावक समाज में भी वे ही श्रेष्ठ हैं जो दूसरों को धर्म की ओर प्रेरित कर सकें। यदि ये बातें हमारे जीवन में बनी रहें, तो हमारा जीवन निश्चित ही सार्थक हो सकता है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025

सत्यनिष्ठा ही है शांति का स्रोत : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
12 जुलाई, 2025

प्रेक्षा विश्व भर्ती के वीर भिक्षु समवसरण में मंगल देशना प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा – आगम वाङ्मय हमारे लिए सम्माननीय साहित्य हैं। जैन शासन की दो मुख्य धाराएं हैं – श्वेतांबर और दिगंबर। दिगंबर परंपरा के मुनि अचेल रहते हैं, जबकि श्वेतांबर परंपरा के साधु सफेद वस्त्र धारण करते हैं। अचेलता और सचेलता दो रूपों में भेद दर्शाते हैं – जैसे एक पिता के दो पुत्र हो सकते हैं, वैसे ही यदि हम भगवान महावीर को धर्म-पिता मानें तो श्वेतांबर और दिगंबर दोनों उनकी संतान स्वरूप हैं। दोनों संप्रदायों के सिद्धांत, मान्यताएं और ग्रंथों में अत्यधिक समानता है, भिन्नता अत्यंत न्यून है। भगवान महावीर मूल हैं और ये दोनों उनकी विशाल शाखाएं हैं।

श्वेतांबर परंपरा में विशेषकर तेरापंथ परंपरा में 32 आगमों को मान्यता प्राप्त है। इन 32 आगमों को प्रमाणस्वरूप स्वीकार किया जाता है क्योंकि इनमें निहित निर्देश श्रद्धेय और आदरणीय हैं। इनका वर्गीकरण इस प्रकार है – 11 अंग, 12 उपांग, 4 मूल, 4 छेद और 1 आवश्यक। आचार्य महाप्रज्ञ ने 11 अंगों में प्रथम 'आयारो' के प्रथम श्रुत स्कंध पर संस्कृत में भाष्य एवं व्याख्या की रचना की। आचारांग भाष्य में कहा गया है कि जो मेधावी व्यक्ति सत्य की आज्ञा में उपस्थित होता है, वह जन्म-मरण के समुद्र को पार कर लेता है और अपनी कामनाओं को भी।

आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि तीर्थंकर हमारे धर्म के सर्वोच्च प्रवक्ता होते हैं। यदि वे विराजमान हों और उन्होंने किसी कार्य का निर्देश दिया हो तो उस पर किसी अतिरिक्त प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। वे सर्वज्ञ एवं प्रामाणिक पुरुष हैं। अंग आगम स्वयं प्रमाण स्वरूप हैं। तीर्थंकर की अनुपस्थिति में उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन प्रमुख आचार्य की आज्ञा में रहना चाहिए। तेरापंथ धर्मसंघ में तो यही व्यवस्था है कि सभी साधु-साध्वी एक आचार्य की आज्ञा में रहते हैं। आगम और उनके अर्थ में यदि मतभेद हो तो अंतिम निर्णय आचार्य का ही होता है।

शास्त्र में कहा गया है – सत्य की आज्ञा में उपस्थित रहो। आगम का अर्थ करते समय तटस्थता और निष्पक्षता आवश्यक है। कोई पक्षपात नहीं होना चाहिए। यदि कोई जानबूझकर आगम का अर्थ अपनी मान्यता के अनुरूप तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करता है, तो यह गंभीर अपराध है। यदि अंतिम निर्णय देते समय आचार्य भी तटस्थता न रखें तो यह भी दोषपूर्ण स्थिति हो सकती है। जब तक तटस्थता और वीतरागता का भाव रहेगा, तब तक मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

आचारांग भाष्य में स्पष्ट किया गया है – 'सत्य की आज्ञा में जो उपस्थित है, वह मेधावी मृत्यु को तर जाता है।' साधुओं के संदर्भ में तीन करण और तीन योगों से झूठ बोलने का त्याग होता है। हर सत्य बात बोलना आवश्यक नहीं, परंतु झूठ न बोलना अनिवार्य है। गृहस्थ जीवन में भी यदि संकल्प और मनोबल हो तो झूठ से बचा जा सकता है। त्याग की भावना होना आवश्यक है। सत्य के मार्ग में कठिनाई आ सकती है, पर उसका अंतिम परिणाम उत्कृष्ट होता है।

आचार्यश्री ने तेरापंथ किशोर मंडल के राष्ट्रीय अधिवेशन में उपस्थित किशोरों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि जीवन में कर्तव्यबोध और उसके पालन की भावना होनी चाहिए। पूज्यवर ने उपस्थित किशोरों को शराब और ड्रग्स से दूर रहने का संकल्प भी करवाया।

किसी भी परिस्थिति में ना छूटे धर्म का मार्ग : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
11 जुलाई, 2025

विशाल जनसमूह को अपनी अमृतवाणी का रसपान कराते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया – मानव जीवन प्राप्त होना बहुत अच्छी और ऊंची बात होती है, और यदि वह जन्म धार्मिक परिवार तथा धार्मिक माहौल में हुआ हो, तो और भी श्रेष्ठ हो जाता है। यदि किसी व्यक्ति को धर्म की जानकारी मिल जाए और वह धर्म को स्वीकार भी कर ले, लेकिन बाद में उसके किसी ऐसे कर्म का उदय हो कि वह धर्म को छोड़ने की इच्छा कर ले और भोग प्रधान जीवन शैली अपना ले, तो वह व्यक्ति अभागा कहलाता है, जिसने प्राप्त धर्म को छोड़ दिया।

व्यक्ति त्याग को स्वीकार करता है, तो कभी-कभी उसमें अतिक्रमण या दोष सेवन की स्थिति आ सकती है, लेकिन धर्म के प्रति आस्था नहीं छूटनी चाहिए। उदाहरण के रूप में, यदि किसी ने चौविहार उपवास रखा है और रात्रि को पानी नहीं पीना है, किंतु कोई शारीरिक तकलीफ हो जाए और परिवारजन भी दबाव डालें कि इंजेक्शन या दवा ले लो, तथा स्वयं का भी मन डगमगाने लगे, तो व्यक्ति उपवास में दवा या इंजेक्शन ले लेता है। यह त्याग में अतिक्रमण का दोष हो सकता है, हालांकि दोष न हो तो वह और भी ऊंची स्थिति मानी जाती है। फिर भी यदि दवा ले ली और बाद में प्रायश्चित लेने की भावना हो, तो यह एक क्षणिक दोष सेवन हो गया। किंतु देव, गुरु, और धर्म के प्रति आस्था नहीं छूटनी चाहिए। क्रियात्मक मजबूरी में दोष संभव है, परंतु आस्था में कमी नहीं होनी चाहिए।

आचार्यश्री ने कहा – संस्कृत ग्रंथ 'सूक्ति मुक्तावली' में आया है कि एक व्यक्ति के घर के मैदान में कल्पवृक्ष उगा हुआ था, लेकिन उसने उसे उखाड़कर फेंक दिया और उसकी जगह धतूरे का पेड़ लगा दिया। यह पूर्णतः मूर्खता की बात लगती है। दूसरा व्यक्ति चिन्तामणि रत्न को किसी कौए को उड़ाने के लिए फेंक देता है और उसकी जगह गली में पड़ा कांच का टुकड़ा उठा लाता है। यह भी नासमझी है। तीसरा व्यक्ति श्रेष्ठ हाथी को बेचकर उसके बदले में गधा खरीद लेता है। ये सब मूर्खता के उदाहरण हैं। उसी प्रकार जो व्यक्ति धर्म को प्राप्त करके उसे छोड़ देता है और अधर्म तथा भोगों की ओर चला जाता है, वह भी वैसा ही नासमझ होता है।

एक बार यदि किसी को देव, गुरु, और धर्म के तत्व मिल जाएं तो किसी कठिनाई के आने पर भी धर्म को छोड़ना बहुत बड़ी

नासमझी है। जो कठिनाई आई है, उसका मूल कारण हमारे पूर्व कर्म हैं। भगवान महावीर जैसे व्यक्तित्व को भी उनके कर्मों का फल भोगना पड़ा, तो हम क्या हैं? बुद्ध और सनत्कुमार चक्रवर्ती को भी भोगना पड़ा। अतः व्यक्ति को सोचना चाहिए कि जो भी कठिनाई आई है वह मेरे पूर्व कर्मों का उदय है, और यदि मैं धर्म करूं तो वे कर्म aकी परीक्षा है। भौतिक विपत्तियां जैसे मृत्यु, व्यापार में घाटा, या बीमारी आदि आने पर भी व्यक्ति को धर्म का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए। धर्म मेरे जीवन का अभिन्न हिस्सा बनकर रहे। यदि संयम जीवन प्राप्त हो गया और कठिनाई आने पर वह जीवन छोड़ दिया गया, तो बहुत बड़ी पूंजी गंवा दी। यह भी अभाग्य की स्थिति है। साधु को सोचना चाहिए कि छोटी-मोटी कठिनाइयां आएं तो आएं, पर मेरा संयम नहीं छूटना चाहिए।

श्रावकों के संदर्भ में पूज्यवर ने कहा – मान लें कोई राष्ट्रपति बन गया, तो वह पद उसे कुछ वर्षों के लिए ही मिल सकता है, परंतु सम्यक्त्व की प्राप्ति हो गई तो वह जीवनभर और अगले जन्मों में भी साथ रह सकता है। सम्यक्त्व एक उत्तम और स्थायी पदवी है। एक बार कोई त्याग लिया जाए, तो उसे निभाने में जागरूकता होनी चाहिए। गृहस्थों को धन की आवश्यकता हो सकती है, परंतु धन कमाने में धोखाधड़ी न करें। जो दिखाया है वही दें, और जो दिया है वही दिखाएं। ग्राहक और विक्रेता, दोनों ही एक-दूसरे को ठगने का कार्य न करें। आजीविका में भी धर्म रहे – न केवल धर्म स्थान पर, बल्कि कर्म स्थान पर भी।

आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत का जो सिद्धांत बताया, वह जीवन व्यवहार और कर्म स्थान का धर्म है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी प्रेक्षाध्यान करवाते थे। यदि हमारे पास केवल पांच मिनट का समय हो, तो उसमें कायोत्सर्ग, दीर्घ श्वास, जप आदि का प्रयोग किया जा सकता है। वह पांच मिनट भी शुभ बन सकते हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ-साथ धर्म न छूटे। सामायिक, त्याग, प्रत्याख्यान – कुछ भी हो सकता है। सामायिक का समय न हो तो थोड़े-थोड़े समय के त्याग – जैसे भोजन के बाद कुछ विशेष स्थिति के सिवाय कुछ न खाना – भी किया जा सकता है।

मानव जीवन मिलना बहुत अच्छी बात है। यदि साधु जीवन में संवर और संयम हो, तो यह भी बहुत श्रेष्ठ स्थिति है। यदि गृहस्थ पूरी तरह संयम में न भी रह सके, तो अणुव्रतधारी बन सकता है, और साधुओं की साधना में सहयोगी बन सकता है।

जैसे भोजन उपलब्ध है तो साधु-साध्वियों को भोजन देना, वस्त्र उपलब्ध हैं तो अर्पित करना, दवाइयां उपलब्ध हैं तो देना, चिकित्सक हैं तो निःशुल्क सेवा देना। यह सब साधुओं की साधना में सहयोग करने के साधन हैं।

अपने जीवन में भी त्याग और संयम रहें। यदि हमारी क्षमता एक उपवास की है, तो उसे बढ़ाने का प्रयास करें। धर्म हमारे जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। आत्मकल्याण और आत्मशुद्धि की भावना बनी रहे।

(शेष पेज 17 पर)

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

वैराग्य

'भीखणजी' के वैराग्य का बुआ को पता चला।

बुआ ने कहा– भीखण! तू दीक्षा लेगा तो मैं पेट में कटारी खाकर मर जाऊंगी।

भीखणजी बुआ के इस कथन से विचलित नहीं हुए।

भीखणजी ने कहा– कटारी पूनी नहीं है, जिसे पेट में खाया जाए।

भीखणजी के इस कथन को सुनकर बुआ निरुत्तर हो गई।

भीखणजी के पिता शाह बल्लूजी इस संसार से चल बसे। मां दीपांबाई ने दीक्षा की अनुमति नहीं दी। आचार्य रुघनाथजी ने दीपांबाई से पूछा– तुम दीक्षा के लिए मना क्यों कर रही हो? दीपांबाई ने कहा– जब यह गर्भ में था तब मैंने सिंह का सपना देखा था। यह राजा बनेगा। मैं इसे मुनि होने की आज्ञा कैसे दे सकती हूं? आचार्य रुघनाथजी ने कहा– मुनि राजा से बहुत बड़ा होता है। तेरा पुत्र मुनिसिंह बने, इसमें तुम्हें क्या आपत्ति है? आचार्य की यह बात मां दीपां के गले उतर गई। उन्होंने भीखणजी को दीक्षा की आज्ञा प्रदान कर दी। भीखणजी आचार्य रुघनाथजी के शिष्य बन गए।

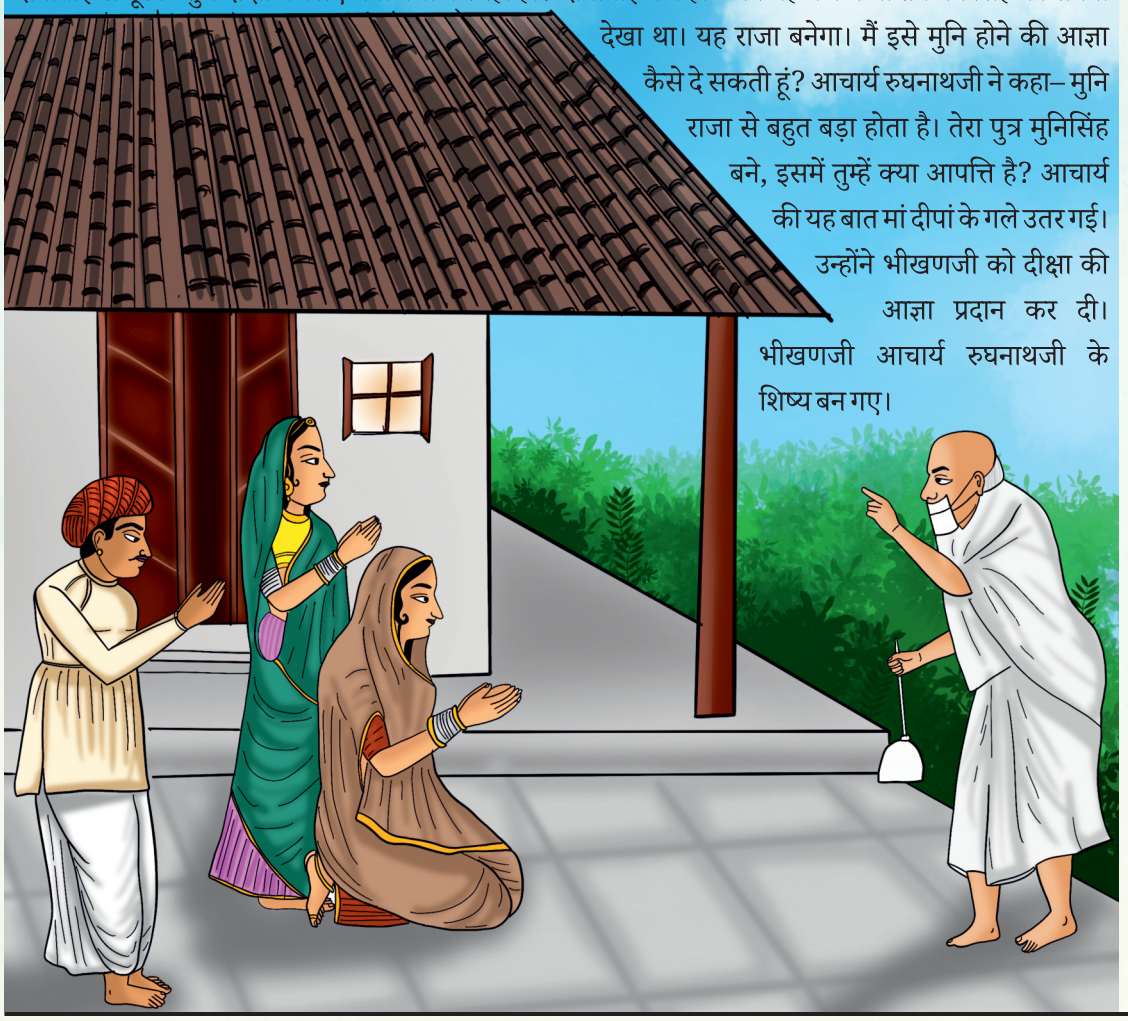

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

श्रावक निष्ठा पत्र क्यों?

'पोषण' एक ऐसा शब्द है, जिसके दायरे में सभी आ सकते हैं- चाहे वह संघ हो, समाज हो अथवा कानून। यहाँ तक कि यदि वृक्ष लगाने के बाद भी उसे उचित पोषण न मिले तो वह भी सूख सकता है।

भगवान महावीर ने श्रावक धर्म की परिकल्पना की और समय-समय पर अनेक आचार्यों व मुनियों ने इसे संरक्षित और संवर्धित करने के उपाय किए। आचार्यश्री भिक्षु से लेकर आचार्यश्री तुलसी तक अनेक नियमों का निर्माण हुआ और समयानुसार उनमें परिवर्तन भी किए गए। आचार्यश्री तुलसी ने गहन चिंतन कर एक सुव्यवस्थित 'नियम पत्र' तैयार किया, जिसे उन्होंने नाम दिया– **'श्रावक निष्ठा पत्र'**। इसका सर्वप्रथम वाचन सन् 1982 में राणावास चातुर्मास के दौरान सिरियारी में आयोजित 180वें आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस के अवसर पर, राजस्थान सरकार के तत्कालीन वित्त मंत्री चंदनमल बैद द्वारा किया गया था।

गुरुदेव तुलसी के शब्दों में– 'इससे सभी श्रावक-श्राविकाओं को यह ज्ञात रहेगा कि धर्मसंघ के प्रति उनका क्या दायित्व है। दायित्वबोध और दायित्व-निर्वाह की चेतना का जागरण होने से ही संगठन मजबूत रह सकता है।'

श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन नियमित रूप से संघीय कार्यक्रमों में किया जाता रहा है। इससे श्रावक के श्रावकत्व को वह पोषण प्राप्त होता है जिससे सम्यक्त्व पुष्पित-पल्लवित होता है। आचार्य तुलसी की यह अनुपम देन समस्त श्रावक वर्ग के लिए हितार्थ, आत्मार्थ एवं मोक्षदायक है।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

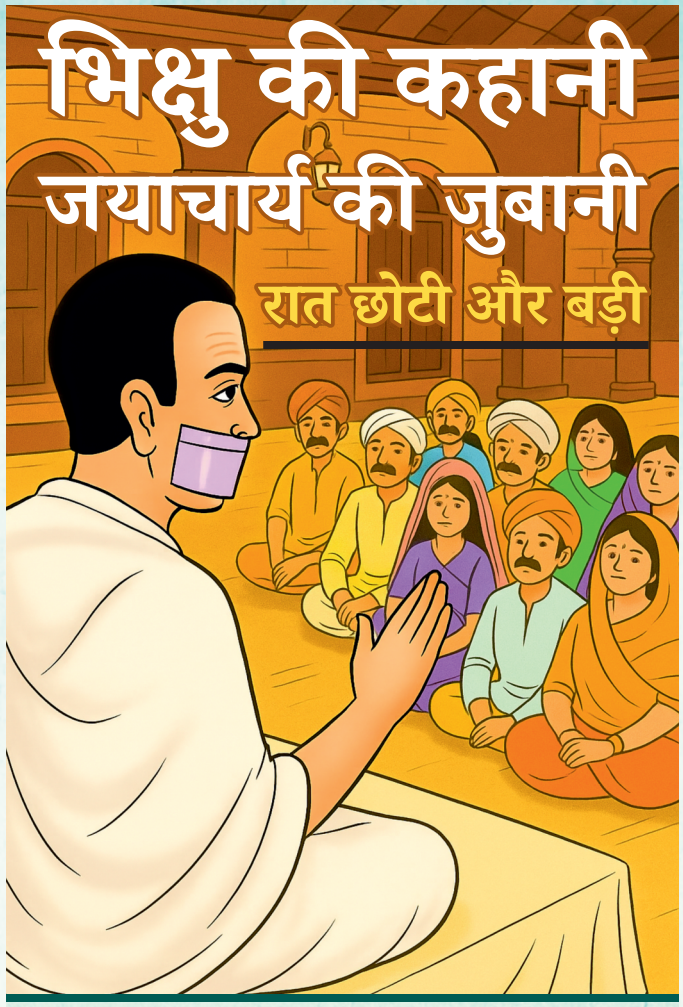

पीपाड़ के चातुर्मास में स्वामीजी का व्याख्यान सुन लोग बहुत राजी होते थे। कोई द्वेषी कहता– 'रात बहुत चली गई। सवा प्रहर या डेढ़ प्रहर।' तब स्वामीजी ने कहा– 'दुःख की रात बड़ी लगती है। विवाह आदि के प्रसंग पर सुख की रात छोटी लगती है। ठीक संध्या के समय पर मनुष्य मर जाता है तो वह दुःख की रात्रि बहुत बड़ी लगती है। इसी प्रकार जिनको व्याख्यान अच्छा नहीं लगता, उन्हें रात बहुत बड़ी लगती है।'

क्या आप जानते हैं?

हरी पत्ती को पीसा गया हो, उसमें उसकी मात्रा के लगभग समान दूसरा रस मिला दिया जाए या चीनी मिला दी जाए तो मिलाने के बारह मिनट बाद उस हरी पत्ती को अचित्त माना जा सकता है।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह कम से कम 3 दिन रात्रि भोजन त्याग का प्रयास करें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
21 जुलाई - 27 जुलाई, 2025

तेरापंथ को समझने के लिए आवश्यक है दर्शन, इतिहास और मर्यादा व्यवस्था का गहन अध्ययन : आचार्यश्री महाश्रमण

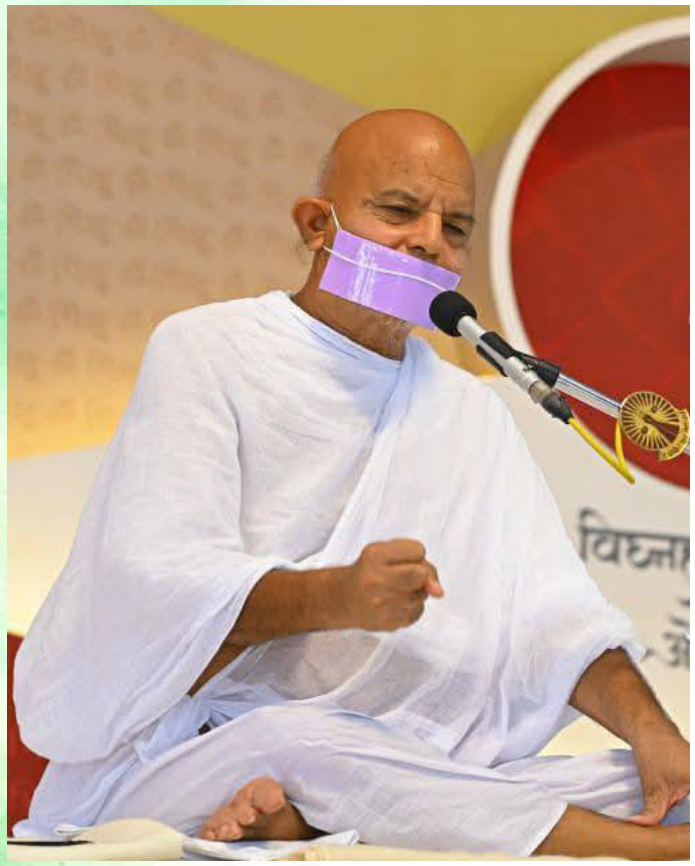

मिथ्यात्वी की करणी के विषय में तेरापंथ एवं अन्य पंथों की मान्यताओं के बीच समानताएं और भिन्नताएं

विषय	तेरापंथ की मान्यता	अन्य पंथों की मान्यता
समानता :		
1. मिथ्यात्वी के भी पुण्य बंध हो सकता है।	हाँ	हाँ
2. मिथ्यात्वी के अकाम निर्जरा संभव है।	हाँ	हाँ
3. मिथ्यात्वी के संवर धर्म हो सकता है।	नहीं	नहीं
4. मिथ्यात्वी की करणी से उतनी निर्जरा नहीं हो सकती जितनी सम्यक्त्वी की होती है।	हाँ	हाँ
5. अभव्य मिथ्यात्वी की करणी मोक्ष की ओर ले जा सकती है।	नहीं	नहीं
भिन्नता :		
1. मिथ्यात्वी की करणी से सकाम निर्जरा हो सकती है।	हाँ	नहीं

मुख्य अंतर का सारांश

तेरापंथ के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति अन्य मतानुसार मिथ्यात्वी है, किंतु वह मोक्ष, संवर, निर्जरा, जीव-अजीव आदि तत्त्वों को मानता है और मोक्ष के लिए साधना करता है, तो उसकी करणी से सकाम निर्जरा हो सकती है, और वह मोक्षगामी भी हो सकता है।

कोबा, गांधीनगर।
10 जुलाई, 2025

गुरु पूर्णिमा के इस पावन अवसर पर, जन-जन की आस्था के केंद्र तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी मंगल वाणी में फरमाया — धर्म को आगम वाणी में श्रेष्ठ मंगल कहा गया है। अहिंसा धर्म है, संयम धर्म है, तप धर्म है। आज धर्म से जुड़ी एक विशेष परंपरा — तेरापंथ की स्थापना का दिन है। आषाढ़ी पूर्णिमा को तेरापंथ की स्थापना हुई थी। न कोई मंच, न कोई आयोजक, न कोई विशेष समारोह — अत्यंत सादगी के साथ यह स्थापना हुई। जब स्वामी भिक्षु ने 'करेमि भंते! सामाइयं, सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि' का पाठ उच्चारित किया, तभी तेरापंथ की स्थापना हो गई। यही त्याग और दीक्षा का पाठ तेरापंथ की नींव बन गया।

तेरापंथ के संस्थापक पूज्य आचार्य भिक्षु थे। स्थापना के मूल में त्याग और संकल्प था। तेरापंथ को समझने के लिए उसका दर्शन, इतिहास और मर्यादा व्यवस्था — इन तीनों पक्षों का गहन अध्ययन आवश्यक है।

तेरापंथ के इतिहास को जानने के लिए मुनि बुद्धमलजी स्वामी द्वारा लिखित 'तेरापंथ का इतिहास' एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

'शासन समुद्र' श्रृंखला, जिसे मुनिश्री नवरत्नमलजी स्वामी और वर्तमान में मुनिश्री जंबूकुमारजी ने लिखा, तेरापंथ के इतिहास का विस्तृत ज्ञान देती है। गुरुदेव तुलसी, जयाचार्य, माणकगणी आदि द्वारा रचित ग्रंथों से भी बहुमूल्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है। तेरापंथ के दर्शन को जानने के लिए आचार्य महाप्रज्ञजी की पुस्तक 'भिक्षु विचार दर्शन' उपयोगी है। तेरापंथ दर्शन को स्वामीजी के मूल ग्रंथों से जानना और प्रामाणिक है, जैसे अनुकंपा की चौपाई, नवपदार्थ, व्रताव्रत आदि। जयाचार्यजी का 'भ्रम विध्वंसनम्' भी एक विशिष्ट ग्रंथ है।

गुरुदेव ने मिथ्यात्वी की करणी के संदर्भ में तेरापंथ और अन्य पंथों की मान्यताओं की तुलना प्रस्तुत की और स्पष्ट किया कि कई बिंदुओं पर दोनों में समानता है — जैसे मिथ्यात्वी को भी पुण्य बंध, अकाम निर्जरा संभव है, परंतु संवर और मोक्ष की दिशा में करणी का सीमित प्रभाव होता है।

आचार्यश्री ने यह भी कहा कि तेरापंथ की स्थापना के बाद उसका संगठनात्मक पक्ष अनुकरणीय है — एक आचार्य, और संपूर्ण साधु-साध्वी समाज का एक आचार्य की आज्ञा में निष्ठा से रहना — यह व्यवस्था 250 वर्षों से सतत चल रही है। हमारे साधु-साध्वियां, समणियां व श्रावक-श्राविकाएं तो तेरापंथ के अंग हैं, हमारी ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की आराधना अच्छी चलती रहे। हमारा संगठन, अनुशासन व व्यवस्था पक्ष भी सुदृढ़ रहे।

दीक्षा के संदर्भ में आचार्य प्रवर ने कहा कि दीक्षा जांच-परख कर दी जाए। मात्र संख्या बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि गुणवत्ता पर ध्यान देना चाहिए।

यदि कोई साधु दीक्षा के पश्चात किसी दुर्बलता का परिचय दे, तो भी उसे निभाने, सुधारने का प्रयास होना चाहिए। धर्मसंघ में जहां तक संभव हो, समायोजन का प्रयास किया जाए। सेवा के विषय में पूज्यवर ने कहा कि सेवा धर्मसंघ का एक प्रमुख स्तंभ है। जैसे जयाचार्य के समय में बीदासर में साध्वियों ने संतों की सेवा की, वैसे ही नंदनवन (मुंबई) में संतों ने साध्वियों की सेवा की।

इस अवसर पर श्रावक संदेशिका के नवीन संस्करण के सन्दर्भ में पूज्यप्रवर ने अवगति दी। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने भी गुरु पूर्णिमा और स्थापना दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। मुख्यमुनि श्री महावीरकुमारजी ने आचार्य भिक्षु के अवदानों से जनता को अवगत करवाया। साध्वीवर्या श्री सम्बुद्धयशाजी ने आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष और स्थापना दिवस के संदर्भ में उद्बोधन दिया।

साध्वीवृन्द व समणीवृंद ने संयुक्त रूप से गीत का संगान किया। मुनिवृंद ने भी गीत को प्रस्तुति दी।

इस दौरान शांतिदूत आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता शाहनवाज हुसैन पहुंचे। उन्होंने आचार्यश्री से मंगल आशीर्वाद प्राप्त करने के उपरान्त अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि आज मेरा सौभाग्य है कि गुरु पूर्णिमा के अवसर पर तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर मुझे आपके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी को अपना गुरु स्वीकार करता हूं और आज आपके दर्शन के लिए ही यहां पहुंचा हूं। आज आपकी वाणी की आवश्यकता पूरी दुनिया को है।

आचार्यश्री को एक सीमा में बांध कर नहीं रखा जा सकता। आपकी अहिंसा की वाणी सभी के लिए है। मेरा सौभाग्य कि आपके प्रत्येक चतुर्मास में पहुंचने का अवसर मिलता रहता है। मैं कामना करता हूं हम सभी के सिर पर आपका आशीर्वाद सदैव बना रहे। आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। तदुपरान्त तेरापंथ महिला मण्डल-अहमदाबाद की पूर्व अध्यक्ष हेमलता परमार, सुशीला खतंग ने अपनी अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।